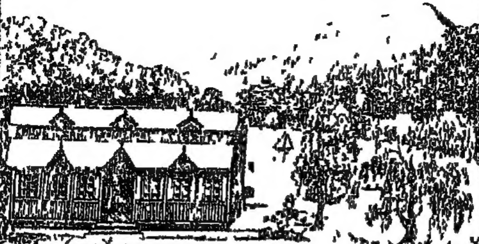




देशान्वेषण की सरल कथाएँ



लेखक

पी० एन० चक्रवर्ती,

गवर्नमेंट जुबिली हाईस्कूल, गोरखपुर



प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३२

Published by
K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd.,
Allahabad.

Printed by
A. Bose,
at The Indian Press, Ltd.,
Benares-Branch.

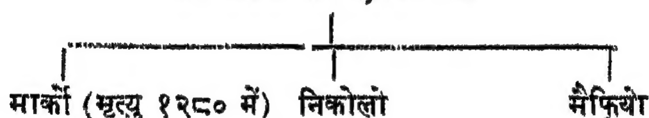
विषय-सूची

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

मार्को पोलो

जन्म-स्थान—वेनिस, लगभग १२५० ई०,
मृत्यु—१३२३ ई०

सैन फेलिस का एंड्रिया पोलो



मार्को पोलो

हम उस समय की बात कहते हैं जब न तो रेलगाड़ी थी, न हवाई जहाज़, न पैरगाड़ी और न मोटरकार। एक देश से दूसरे देश में जाना कठिन था। जंगल, पहाड़, नदी और मरुभूमि के अतिरिक्त डाकुओं का भी भय था। लोग चिर-काल के लिए बिदा लेकर घर से निकलते थे। बिदा के समय रोना-पीटना मच जाता था। सामान लादने के लिए ऊँट,

ख़च्चर या घोड़े ले लिये जाते थे। कभी कभी ये सवारी का भी काम देते थे। निहत्थे निकलना निरापद न था। बन्दूक तो न थी; पर भाला, तलवार और कृपाण आदि साथ रक्खे जाते थे। इतनी कठिनाइयों के होते हुए भी धर्म-प्रचारकों ने अपना कार्य ढीला न किया। योरोप में ईसाई धर्म फैला हुआ था। ईसाइयों को, एशिया में भी, अपने धर्म का प्रचार करने की प्रबल इच्छा थी।

इटली प्रायद्वीप, जो योरोप के दक्षिण में है, उस समय बड़ा ही प्रसिद्ध था। धर्म, शिक्षा, वाणिज्य प्रभृति प्रत्येक विषय में इटली प्रायद्वीप, भारतवर्ष के ही सदृश, विख्यात था। यहाँ का धर्मकेन्द्र रोम नगर था। प्रधान धर्मयाजक यहां रहा करते थे। धार्मिक विषयों में इन्हीं का मत सब ईसाई मानते थे। इनके अधीन अन्य धर्म-प्रचारक पादरी थे। दूर देशों में ये ही लोग जा जाकर धर्म का प्रचार करते थे। शारीरिक कष्टों और विपत्तियों को, धर्म के निमित्त, ये तुच्छ समझते थे। जिस प्रकार रोम धर्म का केन्द्र था उसी प्रकार वेनिस वाणिज्य का केन्द्र था। शेक्सपियर की प्रसिद्ध पुस्तक "मर्चेंट आफ़ वेनिस" का नाम कदाचित् तुमने सुना होगा। शाइलाक वेनिस का ही रहनेवाला था। वेनिस के जहाज़ भूमध्यसागर के किनारे के हर प्रान्त में व्यापार के निमित्त पहुँचा करते थे। प्राकृतिक स्थिति के विचार से भी यह एक अच्छा वाणिज्य-केन्द्र था। मानचित्र में देखो—

यह एड्रियाटिक सागर के उत्तरी किनारे पर, भूमध्यसागर के आधे मार्ग में, एक अच्छा बन्दरगाह है। और, आलप्स के दर्रे बहुत दूर न होने के कारण यहाँ से मध्य योरोप की व्यावसायिक वस्तुएँ सुगमता से एशिया को भेजी जा सकती हैं और वहाँ की वस्तुएँ यहाँ लाई जा सकती हैं।

निकोलो वेनिस नगर का ही रहनेवाला था। यह धर्म और वाणिज्य की बढ़ती के निमित्त, अपने भाई मैफ़िया के साथ, सन् १२५० ई० में एशिया की ओर चल दिया। पुत्र-स्नेह भी इस कार्य में बाधक न हुआ। इसका पुत्र मार्को पोलो, जो इसी वर्ष वेनिस नगर में जन्मा था, अभी एक वर्ष का न होने पाया था कि निकोलो को धर्म और वाणिज्य की सूझ ने घर बैठने न दिया। वह इस बच्चे को छोड़ टर्की की राजधानी कुस्तुनतुनिया होता हुआ, बहुत दिनों के पश्चात्, बुख़ारा जा पहुँचा। पर वहाँ उसकी भाषा कौन समझता? वहाँ मुग़लों की भाषा बोली जाती थी। निकोलो ने देखा कि यदि वह मुग़ल-भाषा नहीं सीखता है तो धर्म-प्रचार और वाणिज्य के कार्य में सफलता नहीं हो सकती। इसलिए वह इस भाषा को सीख कर फ़ारस के राजदूत के साथ कुबलईख़ाँ की राजधानी की ओर चल निकला।

कुबलईख़ाँ गेंगिसख़ाँ का पौत्र था। वह एक विस्तृत राज्य का शासक था। तातारियों ने १३वीं सदी में मंगोलिया के पठार से इधर चीन तक, जिसको कैथे भी कहते हैं,

और उधर योरोप में हङ्गेरी तक अपना राज्य फैला लिया था। इस साम्राज्य की राजधानी खिङ्गन पहाड़ पर शांगटू नगर में थी। यह सम्राट् बड़ा प्रतापशाली था। इसने विदेशियों की बड़ी आवभगत की और सौ पादरियों को निमंत्रण भेजा कि वे उसके राज्य में आवें और तातारियों को अपनी विद्या और बुद्धि के बल से ईसाई बनावें। इस निमंत्रण-पत्र को लेकर निकोलो अपने भाई के साथ, १९ वर्ष के पश्चात, सन् १२६९ ई० में घर लौट आया।

यहाँ प्रधान धर्म-याजक का देहान्त हो चुका था और पादरी लोग विदेश जाने को प्रस्तुत न थे। इसलिए ३ वर्ष तक अपने देश में रहने के पश्चात् निकोलो अपने भाई मैफ़ियो, पुत्र मार्को पोलो और केवल दो पादरियों को साथ लेकर एशिया के पश्चिमी प्रान्त सीरिया में पहुँचा। उसने कुबलईख़ाँ के लिए जेरुसलम के पवित्र मन्दिर के दीप से तेल ले लिया; क्योंकि कुबलईख़ाँ ने प्रधान धर्म-याजक को इस तेल के लिए भी लिखा था। इस समय यहाँ पर विदेशियों ने आक्रमण कर रक्खा था। इस कारण पादरी लोगों को इतनी घबराहट हुई कि उन्होंने आगे बढ़ना पसन्द न किया; वे लोग इटली लौट गये। साढ़े तीन वर्ष चलने के पश्चात् निकोलो, मार्को पोलो और उसका चचा मैफ़ियो कुबलईख़ाँ के दरबार में दूसरी बार पहुँचे। कुबलईख़ाँ इस समय केमेनफु नगर में था। यह नगर अब शांगटू के नाम से प्रसिद्ध है। यह

चीन की दीवार के बाहर पेकिन नगर से ३६७ मील दूर है। आजकल हम यहाँ रेल से जा सकते हैं।

कुबलईखाँ को इनसे मिलने की आशा न थी। पर ३½ वर्ष के पश्चात् इन लोगों को देखकर वह बहुत ही सन्तुष्ट हुआ। उसके बुलाये हुए १०० पादरी तो नहीं आये थे पर नवयुवक मार्को पोलो को देखकर उसके आनन्द की सीमा न रही।

मार्को पोलो ने अब कई भाषाओं के सीखने का निश्चय किया। थोड़े ही समय में उसने मंगोल, फ़ारसी और तिब्बती भाषाएँ सीख लीं। कहानी लिखने और कहने की शक्ति उसमें अद्भुत थी। यहाँ तक कि कुबलईखाँ ने एक बार इसके लिए यह कहा था कि यदि यह जीवित रहा तो एक प्रसिद्ध मनुष्य होगा। कुबलईखाँ ने नवयुवक मार्को पोलो को चीन और भारतवर्ष में कई बार भेजा। इसके अतिरिक्त मंगोलिया की राजधानी, कराकोरम, सियाम्पा, जो दक्षिणी इंडोचीन में है, सुमात्रा और फ़ारस की खाड़ी में भी वह भेजा गया था। उसे बड़े बड़े पदों पर उसने नियुक्त किया। इसी समय मार्को पोलो ने चीन के प्रत्येक प्रान्त को भली भाँति देखा और आश्चर्यजनक बातों को लिख लिया।

चीन में पहले पहल यही योरोपनिवासी गया था। इसने तातारियों के विषय में लिखा है "ये लोग एक स्थान पर बहुत दिनों तक नहीं टिकते। ऋतुपरिवर्तन के साथ साथ

ये भी स्थानपरिवर्तन करते हैं। शीतकाल में ये लोग दक्षिण के ऐसे उष्ण प्रदेशों में चले जाते हैं जहाँ इनके पशुओं के चरने को घास होती है, और ग्रीष्मकाल आते ही उत्तर की ऊँची और ठण्ढी जगहों में चले जाते हैं। यहाँ इनके पशुओं के लिए घास और पानी पर्य्याप्त मिलता है। मच्छरों का भी उपद्रव अधिक नहीं होता। इनके साथ डेरा होता है जिसको लिये हुए ये लोग देश-देशान्तर का भ्रमण करते हैं। इनका मुख्य धन गाय, बैल, बकरा, बकरी, भेड़, ऊँट और घोड़े हैं। इन जानवरों के गल्ले हज़ार दो हज़ार से कम नहीं होते और इनको एक जगह रखना कठिन होता है। एक स्थान की घास समाप्त हो जाने पर इनको दूसरी जगह ले जाना पड़ता है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि राज्य में कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं है। सड़कें अच्छी हैं, उनके किनारों पर पेड़ लगे हुए हैं। इससे गर्मियों में छाया रहती है और जाड़ों में जब धरती बरफ़ से ढक जाती है तब इन पेड़ों से रास्ता प्रकट होता है। पचीस मील के अन्तर पर धर्मशालाएँ होती हैं। वहाँ चार सौ घोड़े सर्वदा प्रस्तुत रक्खे जाते हैं; क्योंकि राजदूतों को न जाने कब इनकी आवश्यकता हो। चिट्ठी-पत्री भेजने का भी प्रबन्ध है"। तुमने देखा होगा कि आज-कल गाँवों में डाकिया, डाक ले जाते समय, कैसे घुँघरू बजाता हुआ जाता है। इसी प्रकार उस समय भी, हर तीन मील पर, ऐसे डाकिये कमर में घुँघरू बाँधकर डाक लिये हुए दौड़ते और एक दूसरे

को अपनी डाक दे देते थे। निर्दिष्ट स्थान पर, बिना अधिक श्रम के, डाक पहुँच जाती थी। राज्य में कोयला, मिट्टी का तेल और अन्य खनिज पदार्थों की भी कमी न थी। राज-महल के बारे में लिखा है कि राजा ऐसी संगमरमर की कोठी में रहता था जिसके कमरे स्वर्णमण्डित थे।

मार्को पोलो चीन के सौन्दर्य पर मुग्ध तो अवश्य था पर घर से निकले उसे बहुत दिन हो गये थे अतः वहाँ से लौटने के लिए वह व्याकुल हो उठा। परन्तु कुबलईखाँ उसको इतना चाहता था कि उसे घर नहीं जाने देता था। अन्त में ईश्वर की कृपा हुई। सन् १२९१ ई० में फ़ारस के वृद्ध सम्राट् की रानी का देहान्त हो गया और उसने कुबलईखाँ की कन्या से पाणिग्रहण करना चाहा। कुबलईखाँ की बेटी उस वक्त केवल १७ वर्ष की थी। इतनी दूर की स्थलयात्रा असम्भव समझकर कुबलईखाँ ने इन वेनिस-निवासियों को, जो समुद्रपथ को जानते थे, लड़की पहुँचाने का भार सौंपा।

कुबलईखाँ की बेटी के साथ चीन होते हुए ये लोग फ़ोकीन, जो प्रशान्त महासागर के किनारे पर है, पहुँचे। वहाँ से समुद्र-यात्रा आरम्भ हुई। हज़ार मनुष्यों को लेकर २३ जहाज़ तीन महीने तक चलते रहे। अन्त में सुमात्रा द्वीप दिखाई पड़ा। ६०० नाविकों का देहान्त हो चुका था और मार्ग भी बहुत तय करना था। पर मार्को ने जहाज़ बढ़ाया। तुमने नक़्शे में सिंगापुर का बन्दरगाह देखा होगा। ये लोग

सिंगापुर होते हुए सीलोन के दक्षिण में पहुँचे और वहाँ से भारतवर्ष के पश्चिमी तट के निकट से होते हुए आरमज़ पहुँचे। वृद्ध अर्धुम की मृत्यु हो चुकी थी। इसलिए उसके पुत्र ग़ज़न ने राजकुमारी के साथ विवाह कर लिया। अब मार्को को घर जाने का अवसर मिल गया। उसे दो परवाने (अनुमति-पत्र) मिले। जलमार्ग छोड़कर ये लोग सीधे स्थल-पथ से काले सागर के किनारे ट्रेबीज़ांड नगर में पहुँचे। यहाँ फिर इनको एक जहाज़ मिला और ये वेनिस की ओर चल दिये।

सन् १२९५ ई० में जब ये वेनिस पहुँचे तो वहाँवालों ने न तो इनको पहचाना और न इनकी बातों पर विश्वास ही किया। मार्को ने एक दिन अपने भाई-बन्धुओं को न्योता भेजा। जब सब लोग आये तो वह मखमल के कपड़े पहनकर निकला। उनके खा-पी चुकने पर उसने रेशम के कपड़े पहने और मखमल के कपड़े बाँट दिये। अन्त में जब लोगों की बिदाई का समय आया तब उसने फिर नये कपड़े पहन लिये और रेशमी कपड़े बाँट दिये। इस अमीरी चाल पर लोग बड़े ही आश्चर्यान्वित हुए। पर उन्हें अब तक एशिया के धन के क़िस्से सत्य प्रतीत न हुए थे कि इतने में मार्को ने अपना एक पुराना कपड़ा फाड़ डाला और उसमें से बहुमूल्य हीरे, मोती, पन्ना आदि निकालकर वह बाँटने लगा। अब भला किसको विश्वास न होता? एशिया की बहुमूल्य वस्तुओं को देखने के लिए मार्को के घर में भीड़ लग गई।

कुछ दिनों के पश्चात् वेनिस और जिनेवा में युद्ध प्रारम्भ हुआ। यहाँ मार्को पोलो एक जहाज़ का नायक बना दिया गया। किन्तु सन् १२९८ ई० में वह वन्दी बनाकर जिनेवा के कारागार में भेज दिया गया। इसी कारागार में इसने एशिया का पूरा वृत्तान्त, एक साथी क़ैदी से, लिखवाया। इस क़ैदी का नाम रस्टिसियाना था। यह 'पिसा' का रहनेवाला था। कारागार से छूटते ही मार्को पोलो वेनिस गया और वहाँ ग्रैंड कौंसिल का सदस्य बना दिया गया। एशिया के विवरण का इसने फिर फ्रेंच भाषा में अनुवाद करवाया परन्तु उसे छपवा न सका।

सन् १३२३ ई० में इसका देहान्त हो गया। मृत्यु के बाद सन् १५५९ ई० में इसका 'एशिया के भ्रमण का विवरण' छापा गया। इस विवरण को पढ़कर योरोप के अन्य प्रान्तों के लोगों को भारतवर्ष और पूर्वी देशों के देखने की प्रबल इच्छा हुई। तुमने वास्को डि गामा और कोलम्बस का नाम सुना होगा। इनके बारे में तुम्हें फिर बताया जायगा।



प्रिन्स हेनरी नाविक

जन्म-स्थान—ओपोर्टो, १३९४ ई०;
मृत्यु—१४६३ ई०

मार्को पोलो के पश्चात् और कई भ्रमणकारी एशिया में आये और कुछ दिनों तक भ्रमण करके अपने देश को लौट गये। इनमें वेनिसनिवासी फ्रायर ओडोरिक और टैंगियर-निवासी इब्न बतूता प्रसिद्ध हैं। इन सबने अधिकतर स्थलमार्ग से ही देश-भ्रमण किया। पर हम जिनके विषय में लिख रहे हैं, उन्होंने जलमार्ग से ही दूर दूर तक जाकर नये नये देशों का पता लगाया था। कारण क्या था? वेनिसवाले भी तो भूमध्यसागर के भिन्न भिन्न प्रान्तों में अपना माल ले जाते और वहाँ की वस्तुएँ अपने देश में लाते थे। दूर देशों में जाने का प्रयोजन भी यही था।

तुमने पढ़ा होगा कि एशिया के स्थल-मार्ग निरापद न थे। लुटेरों से बचना कठिन था और समुद्र की यात्रा से सब लोग डरते थे। इस विषय में बहुत सी अद्भुत कहानियाँ भी रची गई थीं। एटलांटिक महासागर के विषय में कुछ लोग कहते थे कि यह जल-दैत्यों से भरा हुआ है; कोई इसे साँपों से भरा हुआ बताते, और कोई कहते कि

सूर्य्य इतना प्रचण्ड है कि आदमी वहाँ जाते ही झुलस जाते हैं। ऐसे समुद्र में लुटेरे कहाँ? फिर समुद्र-मार्ग से लाभ भी थे। समुद्र में न रेगिस्तान है, न पहाड़, न जंगल और न झील या नदी-नाले। एक बार चल दिये तो रुकावट नहीं। उसके द्वारा भारी भारी वस्तुएँ भी तो सुगमता से लाई जा सकती थीं। परन्तु योरोपवालों को समुद्र-यात्रा से सबसे बड़ा लाभ यह था कि उन्हें मुसलमानों को कर नहीं देना पड़ता था। वैसे तो एशिया और अफ़्रिका के मुसलमान योरोपवालों से, अपनी वस्तुओं के देने में, मूल्य के अतिरिक्त कर भी लेते थे। जब तक समुद्री मार्ग का पता न चला था तब तक ये लोग भी विवश थे। परन्तु पुर्तगालवाले मूर-शासन से छुटकारा पा चुके थे। अतएव वाणिज्य पर उनका भी ध्यान गया।

स्थिति के विचार से इनको जल-मार्ग ढूँढ़ने की सुगमता थी। पूर्व में भूमध्यसागर और पश्चिम में एटलांटिक महासागर होने के कारण ये इस कार्य्य के लिए बाध्य भी थे। धार्मिक उत्साह की भी इनमें कमी न थी। इस समय इनको एक राजा भी अच्छा मिल गया था। राजा जॉन ने (सन् १३८३-१४३३) इस स्फुरण की नींव डाली। इन्होंने अँगरेज़ राजकुमारी, जॉन आफ़ गांट की लड़की, से विवाह कर लिया। उससे इनके पाँच लड़के हुए। छोटा लड़का हेनरी ओपोर्टो में, सन् १३९४ में, जन्मा था।

हेनरी बड़ा मातृभक्त, देशभक्त और धार्मिक था। मूर लोगों को पराजित करने का इसका प्रण था। एक बार जब यह सेना लेकर चलने लगा, इसकी माँ बीमार हो गई और इसको रुकना पड़ा। मरते समय इसकी माँ ने भी इसको मूर-विजय के लिए अनुमति दी थी। माता के मृतक-संस्कार के बाद इसने अपनी सेना सहित सन् १४१५ ई० में जिब्राल्टर के दक्खिन सिवटा पर आक्रमण किया, और इस मूर-भूमि को जीत लिया।

इस जीत के बाद हेनरी पुर्तगाल लौट आया और केप सेंट विंसेंट के निकट समुद्रतट पर नौ-चालन और समुद्र-यात्रा के विषय में पढ़ने और पढ़ाने लगा। उसने बहुत से नक्शे एकत्र किये और अपने नाविकों को मैरिनर्स कम्पास (कुतुबनुमा) का उचित प्रयोग सिखाया और आकाश-विज्ञान भी सिखाया। इस विद्या को सीखने यहाँ दूर दूर से नाविक आये और उन्होंने बहुत लाभ उठाया। धार्मिक उत्साह इसमें था ही। जब मूरों से इसने सहारा के दक्षिणी भाग के विषय में सुना और उनको वहाँ का माल—खजूर, सोना, हाथीदाँत, छुहारे आदि—लाते देखा तो इसके मन में उक्त प्रदेश में समुद्र-मार्ग से पहुँचने की प्रबल इच्छा हुई।

कई वर्षों तक यह अपने कप्तानों को इधर-उधर भेजता रहा और उनकी जानकारी से लाभ उठाता रहा। इसने चाहा कि अफ्रिका के ध्रुव-दक्षिण को पार कर भारत की राह

खोज निकाले। इसी खोज में इसने अपनी सारी अवस्था बिता दी। परन्तु एक आकाश-विज्ञान की जानकारी से ही लाभ नहीं हो सकता था। इसी कारण इसने एक प्रकार के ऐसे जहाज़ बनवाये जिनसे दूर की यात्रा किसी सीमा तक निरापद हो सकती थी। इन जहाज़ों को कैरावेल कहते हैं।

सन १४१५ ई० से १४३० ई० तक पुर्तगाल के नाविकों ने कैनरी द्वीपसमूह और मेडिरा को अपना लिया। यहां के लकड़ी के व्यवसाय से इनको बड़ा लाभ हुआ। इसके पश्चात कई एक कैरावेल केप बोजाडोर के दक्षिण की ओर भेजे गये। सन् १४३४ ई० में हेनरी का एक कप्तान भी बोजाडोर के दक्षिण पहुँचा। सन् १४३५ ई० में बोजाडोर से पाँच सौ मील दूर ये लोग रायो डी ओरो तक पहुँचे। सन् १४४१ ई० में पहली बार इन्होंने केप ब्लांको पार किया। यहाँ कुछ काले आदमियों से भेंट हुई। ये आदमी बहुत ही बदसूरत थे। इनकी नाक चपटी, आँखें छोटी छोटी और होंठ फूले हुए थे। अपने शरीर को इन लोगों ने गोदने के चिह्न से भर लिया था। बदन पर कोई कपड़ा न था। केवल लँगोटी लगाये रहते थे। हाथ में या तो भाला था, या खड्ग, या तीर-धनुष। बोली इनकी अद्भुत थी। प्रायः ये लोग विदेशियों से इशारे से ही बातें करते थे। इनका मुख्य भोजन पशुओं या मनुष्यों का मांस था और इन्हीं का शिकार करना इनका पेशा था। अब ये लोग बन्दी कर लिये

गये। उनके कुटुम्बियों ने उनको छुड़वाने के लिए इन पर-देशियों को बहुत सा सोना दिया, जिससे मालामाल होकर जब ये घर लौटे तो लोगों ने इनकी बड़ी आवभगत की और हेनरी के इस उद्योग की प्रशंसा हुई। पर इसका फल विपरीत हुआ। पुर्तगालवालों को अब इन काले आदमियों के पकड़ने का ही ध्यान रह गया; और देशों का पता लगाने में अधिक उन्नति न हो पाई। हेनरी के निकट जब ऐसे वन्दी आ जाते थे तो उनको वह शिक्षा देता था और ईसाई बना लेता था।

सन् १४४५ ई० में नाविकों को कुछ खजूर के पेड़ देख पड़े। इससे उन्होंने सोचा कि रेगिस्तान की अन्तिम सीमा आ चुकी। वास्तव में ये लोग केप पामस में पहुंचे थे। यहां इनको फिर काले आदमी मिले। ये लोग बहुत ही अद्भुत किश्तियों में बैठे हुए थे। ये किश्तियाँ ताड़ के पेड़ों का तना खोखला करके बनाई गई थीं। किश्तियों को ये लोग अपने पैरों से खे रहे थे। पुर्तगाल के कैरावेल जहाज़ों को देखकर इन्होंने समझा कि कोई बड़ी चिड़िया आ रही है और ज्यों ज्यों ये निकट आते गये त्यों त्यों इनका भय बढ़ता गया और ये लोग किनारे की ओर भाग गये। कुछ देर के पश्चात् भाला और खड्ग लेकर बहुत से काले आदमी समुद्र-तट पर आ खड़े हुए। तब जहाज़ों से उतरना निरापद न समझकर पुर्तगाली लौट गये।

हेनरी ने अब की बार बहुत से जहाज़ इसी दिशा में भेजें। इससे थोड़ा बहुत खोज का काम होता रहा। सिनेगाल नदी का भी पता लग गया। पर लोग अनजान देश में जाने से डरे और स्वदेश को लौट गये।

सन् १४५५ और १४५६ ई० में वेनिस-निवासी कैडामोस्टो, जो हेनरी का नौकर था, गैम्बिया नदी के पास पहुँचा। उसने वहाँ के लोगों से मेल कर लिया। सन् १४५८ ई० में हेनरी ने डीगो गोमेज़ को अन्तिम बार भेजा। इसने सियरालियोन की सोने की खानों का पता लगा लिया। हेनरी ने अब एक सुन्दर नया नक़शा भी बनवा लिया था। पर सन् १४६३ में इसका देहान्त हो गया।

बार्थोलोमो डियाज़

मृत्यु—सन १५०० ई०

हेनरी की मृत्यु के पश्चात् नये देशों के खोजने का कार्य शिथिल हो गया। एक-आध उत्साही युवक अब भी जहाज़ लेकर समुद्र-यात्रा करके थोड़े से स्थानों का पता लगाता रहा, लेकिन इन लोगों का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत नहीं था। किसी बड़े स्थान का पता लगा भी नहीं। सन् १४७१ ई० में फ़रनानडोपो ने एक द्वीप का आविष्कार किया और अपने नाम से उसको प्रसिद्ध किया। फिर उसने विषुवत रेखा को भी पार किया।

सन् १४८१ ई० में जॉन द्वितीय पुर्तगाल की राजगद्दी पर बैठा और फिर खोज का कार्य आरम्भ हुआ। सन् १४८४ ई० में डीगो काव काङ्गो नदी के मुहाने तक पहुँचा। उसने वहाँ अपना ऐसा सिक्का जमाया कि वहाँ का राजा उसके कहने से ईसाई हो गया। सन् १४८६ ई० में डीगो काव वालिवश की खाड़ी तक पहुँच गया।

उधर बार्थोलोमो डियाज़ दो जहाज़ों को लेकर सन् १४८६ ई० में अफ़्रिका के दक्षिण की ओर चल पड़ा। जहाँ तक हो सका, उसने पश्चिमी किनारे से अधिक दूर अपना

जहाज़ न रक्खा। फल यह हुआ कि इस यात्रा में बहुत दिन लग गये और अन्त में यह आरेंज नदी के मुहाने के पास पहुँचा। मकररेखा के दक्षिण अब सर्दी अधिक मालूम होने लगी। यहां जलधारा वेगवती थी। आँधी भी प्रचण्ड थी। डियाज़ के जहाज़ अब किनारे से बहुत दूर हो गये और १५ दिन तक किनारे का कुछ भी पता न चला। डियाज़ पूर्व की ओर चलकर फिर उत्तर की ओर चला। अब भूमि दृष्टिगोचर हुई। यह मोसेल की खाड़ी में पहुँच गया। अब उससे पूर्व एक दूसरी खाड़ी में पहुँचा जो अलगोवा बे के नाम से विख्यात है। फिर यह ग्रेट फ़िश रीवर के मुहाने तक गया पर इसके साथी घर लौटने के लिए व्याकुल हो गये थे, इससे इसको घर वापस आना पड़ा। लौटते समय यह किनारे के निकट ही निकट चला और उस अन्तरीप को, जिसको लोग बहुत दिनों से पार करना चाहते थे परन्तु पार नहीं कर सके थे, इसने पहली बार देखा। अब सब लोग बड़े ही आनन्दित हुए और इस समाचार को पहुँचाने के लिए वापस आये।

यहाँ राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने इस अन्तरीप का नाम केप आफ़ टेम्पेस्ट रखना उचित न समझकर उसका नाम कैबो डी विउना एस्परेन्सा या केप आफ़ गुड होप रख दिया। वास्तव में उसने सोचा कि अब पुर्तगालवालों के लिए भारत और पूर्वी देशों का मार्ग खुल गया।

लोगों को अब एटलांटिक महासागर से होकर एशिया जाने की सूझी और ऐसे ही किसी प्रलय में ब्रेज़ील की ओर जाते समय सन् १५०० ई० के लगभग डियाज़ ने आँधी में अपने प्राण खो दिये।

वास्को डि गामा

जन्म-स्थान—साइन्स, मृत्यु-स्थान—कोचीन

वास्को डि गामा का जन्म सन् १४६६ ई० के लगभग पुर्त्तगाल के साइन्स नगर में हुआ था। इसकी बाल्यावस्था की बातें हमें मालूम नहीं। इसकी प्रसिद्धि उस समय हुई जब इसने डियाज़ के पश्चात् केप आफ़ गुड होप को पार किया और भारत की नई राह निकाली। स्पेन के राजा ने कोलम्बस को एटलांटिक का पश्चिमी किनारा ढूँढ़ने की अनुमति दी थी। उसकी यात्रा के बाद जब यह प्रसिद्ध हो गया कि वह चीन पहुँचा है तो पुर्तगाल के राजा इमैनुयेल ने सन् १४९७ ई० में वास्को डि गामा को चार जहाज़ों के साथ डियाज़ का कार्य पूरा करने के लिए भेजा। वास्को डि गामा ने अफ़्रिका के किनारे किनारे चलना पसन्द न किया; क्योंकि उसमें अधिक दिन लग जाते। वह गल्फ़ आफ़ गीनी को छोड़ सीधा आरेंज नदी के दक्षिण आ पहुँचा। वहाँ से केप आफ़ गुड होप को पार करता हुआ वह ईसा के जन्म के दिन नेटाल के पूर्वी किनारे पर जा रुका और वहाँ से मुज़ैम्बिक के किनारे पहुँचा। वहाँ से मुम्बासा होता हुआ मलिन्दी में आया। मार्ग में साथी लोग बीमार पड़ गये। मुम्बासा में वहाँ के

लोगों ने इससे कुछ रोक-टोक की किन्तु ईश्वर की कृपा से मलिन्दी के राजा ने इसका आदर किया। इस राजा ने वास्को डि गामा को भारतवर्ष की समुद्री राह बताने के लिए एक नाविक साथ कर दिया। २० दिन के पश्चात् सन् १४९८ ई० में, मई महीने में, कालीकट के पास इसका जहाज़ पहुँचा।

कालीकट का नाम तुमने सुना होगा। यह बहुत पुराना तिजारती स्थान है। भारत के हर प्रान्त से व्यवसायी लोग यहाँ अपना माल लाते और विदेशियों से वाणिज्य-व्यवहार करते थे। यहाँ के 'कयालिको' कपड़े की ख्याति दूर दूर देशों तक फैली हुई है।

यहाँ वास्को डि गामा को अधिक कष्ट नहीं हुआ; क्योंकि यहाँ के राजा ज़मोरिन ने इसके साथ अच्छा बर्ताव किया। वह यहाँ की कुछ वस्तुएँ—मसाला, कपड़ा इत्यादि—मोल लेकर घर लौट चला। मार्ग में इसके साथी फिर बीमार पड़े; कुछ लोग मर भी गये। दो वर्ष पश्चात् सन् १४९९ ई० में ये लोग लिस्बन पहुँचे।

सन् १५०२ ई० में यह बीस जहाज़ों के साथ दुबारा भारतवर्ष में आया। लौटते समय इसने मुसलमानों के १३ सौदागरी जहाज़ों को भारत सागर में बन्दी कर लिया। सन् १५०३ ई० में यह पुर्तगाल लौट गया और वहाँ काउंट आफ़ विडिक्वेरा बना दिया गया। इसके पश्चात् कुछ दिनों तक इसकी पूछ-ताछ न हुई। इसी समय पुर्तगालवालों

ने कई बार भारत पर आक्रमण किया और गोआ तथा कालीकट ले लिया। अपने साथ वाणिज्य-व्यवहार के लिए भी इन लोगों ने भारतवासियों को बाध्य किया। सच तो यह है कि उन दिनों भारत सागर के प्रत्येक ओर पुर्तगालवाले ही दिखाई पड़ते थे।

सन् १५२४ ई० में, २१ वर्ष के पश्चात्, राजा जॉन तृतीय ने इसको भारत में पुर्तगाल-राज्य का राजप्रतिनिधि बना दिया। दुर्भाग्यवश वास्को डि गामा को अधिक दिनों तक यह सुख न मिल सका। सन् १५२५ ई० में कोचीन में इसका देहान्त हो गया।

क्रुस्टोफर कोलम्बस

जन्म—१४४० ई० के लगभग, मृत्यु—१५०६ ई०

डामेनिको कोलम्बो = सुसाना

क्रुस्टोफर कोलम्बस	गिवानी	बार्थोलोमो	भर्भा	जेम्स ग्याकोमो।
(जन्म १४४७)	(जन्म १४४८)	(जन्म १४५०)	(जन्म १४६४)	(जन्म १४६८)

कोलम्बस जिनेवा नगर के एक ऊनी माल के कारीगर कोलम्बो का पुत्र था। उसका जन्म जिनेवा में हुआ। कुछ लोगों का मत है कि उसका जन्म १४४७ ई० के लग-भग हुआ। यहाँ उसने मार्को पोलो की पुस्तक पढ़ी और उसको देश-भ्रमण तथा नये स्थानों का पता लगाने की इच्छा बहुत ही प्रबल हुई। फिर क्या था, २४ वर्ष की अवस्था में ही पैरिस नगर में जाकर उसने ज्योतिष-शास्त्र और नौ-विद्या का अध्ययन आरम्भ किया। इसी समय उसने पुर्तगाल के राजा हेनरी के बारे में सुना, पर दुर्भाग्य-वश सन् १४६३ में हेनरी का देहान्त हो गया था। उसने भूगोल की कई पुस्तकें भी पढ़ीं और 'इमागो मुंडी' ग्रंथ को पढ़ते ही उसे भारत में पश्चिमी राह से पहुँ-चने की प्रबल इच्छा हुई, पर अर्थ और सामर्थ्य का अभाव

था। इसलिए वह केवल भूमध्य-सागर के किनारे के स्थानों पर जाने लगा।

सन् १४७० ई० में वह पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन गया। कहा जाता है कि कोलम्बस एक बार वेनिस के कुछ जहाज़ों की गिरफ्तारी में लगा हुआ था कि शत्रुओं ने उसके जहाज़ में आग लगा दी। इससे वह प्राण बचाने के लिए समुद्र में कूद पड़ा और तैरकर पुर्तगाल पहुँचा। पर अधिक सम्भव यह है कि वह नौकरी की खोज में ही गया होगा। उसने वहाँ २० वर्ष बिता दिये। वह कभी नक़शा बनाता, कभी एटलांटिक महासागर में घूमता। एक बार वह आइसलैंड जा पहुँचा। वहाँ भी उसने समुद्र-पार के देश के बारे में सुना और उसकी खोज की इच्छा बढ़ती ही गई। सन्तोष की बात यह थी कि पुर्तगाल में उसका भाई बार्थोलोमो भू-चित्र बनाने के कार्य में नियुक्त था। इसके भू-चित्रों से कोलम्बस को बड़ा लाभ हुआ और उसका नये देशों का पता लगाने का उत्साह बढ़ता ही गया।

पुर्तगाल में उसको थोड़े ही दिन हुए थे कि इटली के नौ-विभाग के नायक पैलेस ट्रेलो की लड़की फिलिप्पा मानिज़ के साथ उसका विवाह हो गया। यह लड़की पोर्टो सैंटो में, जो कि मेडिरा द्वीपपुञ्ज का एक द्वीप है, रहती थी। पैलेस ट्रेलो भी देश खोजने के कार्य में नियुक्त किया गया था और उसकी मृत्यु हो चुकी थी। उसके नक़शों से कोलम्बस

को अफ्रिका के पश्चिमी तट का हाल मालूम हो गया। यह कुछ समय तक अपनी ससुराल में रहा। वहाँ उसने पुर्तगाल के नाविकों से बहुत कुछ सुना और सीखा। खोज की इच्छा बढ़ती ही गई। उसने सोचा कि यदि एशिया में पूर्वी राह से पहुँच सकते हैं तो पश्चिमी मार्ग से भी पहुँच सकेंगे और एट-लांटिक को पार करना असम्भव न होगा।

इटली का रहनेवाला टास्केनेली आकाश-विज्ञान का पण्डित था। कोलम्बस ने उसको पत्र लिखा। उसने इसको यह बताया कि पुर्तगाल का राजा भी पश्चिम ओर से भारत जाने की राह का पता लगाना चाहता है। उसने इसको अपना भू-चित्र भी दे दिया। अब इसकी नवीन जगत् की खोज की धुन बढ़ती ही गई।

एक दिन इसने कुछ वृक्षों को, जिनमें चिह्न लगे थे, और मुर्दों को एटलांटिक सागर में बहते पाया। इससे इसका विश्वास दृढ़ हो गया कि नई दुनिया पश्चिमी किनारे पर अवश्य होगी और वहाँ मनुष्य रहते होंगे। अब इसने एट-लांटिक पार करने की ठान ली।

सन् १४८२ ई० में इसने पुर्तगाल के राजा जॉन द्वितीय से, सहायता के लिए, आवेदन किया। पर इस राजा ने चालाकी से अपने आदमियों को खोज के लिए भेज दिया। ये लोग डरपोक थे, इससे बिना कुछ किये थोड़े ही दिनों में लौट गये। राजा से सहायता न पाकर, दुःखित हो, कोलम्बस

ने अपने भाई को इँगलैंड के राजा हेनरी सप्तम के पास भेजा, पर समुद्री डाकुओं ने उसका सब सामान लूट लिया। भू-चित्र भी नष्ट हो गये। भू-चित्र दुबारा बनवाने पड़े और खोज के कार्य में विलम्ब होने लगा।

इसी अवसर पर कोलम्बस ने अपने देश से सहायता माँगी, किन्तु जिनेवावालों ने भी कुछ सहायता न की। तब निराश होकर उसने स्पेन की शरण ली। राजा फर्डिनेंड और रानी इसाबेला ने इस योजना पर विचार करने के लिए कुछ विद्वानों से कहा, पर इन विद्वानों की समझ में कोई बात न आई। अब तो कोलम्बस को कुछ भी आशा न रही। लोग उसकी हँसी करने लगे। बच्चे भी उसको चिढ़ाने लगे।

पर बुरे ग्रह टल गये और इसाबेला ने धन से सहायता करना स्वीकार किया। तीन जहाज़ मिले, लेकिन साथ जाने को कोई प्रस्तुत न हुआ। अन्त में घूस देने और धमकाने से १२० मनुष्य मिल गये। चलने की तैयारी हो गई। एक वर्ष के लिए पर्याप्त भोज्य पदार्थ ले लिये गये।

रानी ने परदेशी राजा के नाम चिट्ठी लिख दी और इस आशा से, कि कोलम्बस सब विधर्मियों को ईसाई बना सकेगा, उसे जाने की अनुमति दे दी। कोलम्बस से कहा गया कि यदि वह वस्तुतः कोई नया प्रदेश ढूँढ़ निकालेगा तो उसके धन में उसका भी दसवाँ भाग लगेगा और उसके वंशजों को भी यही धन मिलता रहेगा; वह जिन प्रदेशों को ढूँढ़ निकालेगा

उनका राजप्रतिनिधि बना दिया जायगा और जल-सेना का 'ऐडमिरल' (सेनापति) भी बना दिया जायगा। यदि वह किसी नये प्रदेश का पता न लगा पायगा तो उसे कुछ न मिलेगा।

कोलम्बस सान्ता मेरिया जहाज़ में बैठा और "पिन्ता" तथा "निना" जहाज़ के साथ ३ अगस्त सन् १४९२ ई० में पालस के निकट साल्टूस से रवाना हुआ। इसके साथी पहले से ही डरते थे; अब वे कनेरी द्वीप में टेनेरिफ ज्वालामुखी पर्वत को देखते ही घबरा उठे। ऐसे डरपोक साथियों को लेकर चलना भी अपूर्व साहस का कार्य था। कोलम्बस ने उनको हर तरह से समझाया। वह कभी तो उनसे कहता कि स्थल बहुत दूर नहीं है, कभी कहता कि अभी चले ही कितने मील हैं। कभी धन की आशा दिलाता, कभी उन्हें लज्जित करता कि वे कायर हैं और कार्य पूरा किये बिना ही लौट जाने से लोग उनकी हँसी करेंगे। इस प्रकार कुछ दिन बीतने पर उन्होंने सरगैसो सागर देखा। यहाँ समुद्री घास दिखाई पड़ी और कुछ पक्षी भी दृष्टिगोचर हुए। इससे सबने सोचा कि भूमि बहुत दूर नहीं है। ये लोग रात-दिन चलते ही गये, अन्त में बहुत दूर पर प्रकाश दिखाई पड़ा। फिर क्या था, जहाज़ में हलचल मच गई। किसी ने कहा कि यह प्रकाश किसी दूसरे जहाज़ का है, और किसी कहा कि यह प्रकाश स्थल पर है। अन्त में रात को दो बजे स्थल स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ा। सब लोग सबेरा होने की अपेक्षा में बैठे रहे।

२२ अक्तूबर १४९२ ई० को ये लोग सैन सैलेवेडर द्वीप में उतरे। यह द्वीप लगभग २३ मील लम्बा और ७ मील चौड़ा है। नाविक आनन्द से नाच उठे; उन्होंने कोलम्बस को छाती से लगा लिया। फिर ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए सब घुटनों के बल बैठे। द्वीप में स्पेन का झण्डा गाड़ दिया गया। यहाँ के निवासी पहले तो बहुत डरे; परन्तु इनका अपूर्व रूप, वेष और अस्त्र-शस्त्र देखकर उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ। इनसे विपत्ति की आशङ्का न देखकर वे इनसे वस्तुओं का आदान-प्रदान करने लगे।

कोलम्बस ने इन मनुष्यों के बारे में अपने लड़के से यह कहा था—"ये लोग जब समुद्र के किनारे पर मिले, निरस्त्र थे। इनके साथ कोई स्त्री न थी। पुरुष प्रायः ३० वर्ष के थे। इनका रङ्ग बादामी और क़द मँझोला था। बाल काले और कानों के ऊपर तक कतरे हुए थे। कपाल चौड़ा था। इन्होंने शरीर रँग लिया था और ये अस्त्रों का प्रयोग करना न जानते थे। नंगी तलवार को जब इन्होंने देखा तो बहुत आश्चर्यान्वित हुए और उसको उलटा, धार की ओर, पकड़ लिया। समुद्र-तट पर इनकी बहुत सी छोटी छोटी किश्तियाँ थीं।" इन लोगों ने सुग्गे पकड़-पकड़कर कोलम्बस को दिये और धुनी हुई रुई भी दी। कोलम्बस ने भी इनको घंटी, काँच की माला और लाल टोपियाँ दी थीं। इनकी भाषा कोई नहीं समझ सकता था पर ये इशारे से बातें करते थे।

कुछ दिनों में इन लोगों ने कोलम्बस को, यह कहकर कि कुबानाकना में बहुत सोना मिलता है, वहाँ जाने का रास्ता बता दिया। कोलम्बस ने यह सोचकर कि अभी हम एशिया नहीं पहुँचे हैं और लोग कुबलईखाँ के राज्य की चर्चा करते हैं, उधर प्रस्थान किया। ये लोग जहाँ पर पहुँचे वह क्यूबा द्वीप था; परन्तु कोलम्बस ने उसको सिपंगो अथवा जापान समझा। इस द्वीप में नदियों और पर्वतों की अधिकता थी। भूमि उर्वरा थी। सब ओर हरियाली छाई थी। जङ्गली जानवर न थे पर सुन्दर पक्षी थे। यहाँ सोना था, क्योंकि यहाँ के निवासी सुवर्ण-कणों को नदी की तलहटी से लाकर बोतल या शीशे के बदले में कोलम्बस को देते थे।

इस द्वीप के चारों ओर घूमते घूमते कोलम्बस ने हैती द्वीप का पता लगाया और इसका नाम हिस्पैनिओला रक्खा। यहाँ के निवासी भी डरपोक थे, पर जब कोलम्बस ने एक लड़की को पकड़ा और उसे बहुत सी वस्तुएँ देकर छोड़ दिया तो उनको विश्वास हो गया और वे भी पास आने लगे। इस द्वीप में उसको सोना तो न मिला परन्तु मक्का, रुई, आलू और तम्बाकू दिखाई पड़ी। यहाँ भी उसने स्पेन का झण्डा गाड़ दिया।

आजकल सिगरेट या सिगार पीते हुए लोगों को देखने से आश्चर्य नहीं मालूम होता, लेकिन स्पेनवालों ने जब

पहली बार यहाँवालों को तम्बाकू के पत्ते लपेटकर मुँह में दबाते और दूसरे सिरे में आग लगाते देखा तो इन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। वस्तुतः इस प्रकार नशा करना इन्होंने इन्हीं लोगों से सीखा था।

सन् १४६३ ई० की ४थी जनवरी को कोलम्बस यहाँ के कुछ निवासियों को साथ लेकर स्पेन की ओर रवाना हुआ। चलने से पहले उसने यहाँ अपने कुछ आदमियों को छोड़ दिया जिससे ये लोग यहां का पता भली भाँति लगावें और स्पेन का अधिकार जमाये रहें। कोलम्बस को लौटते समय अधिक कष्ट हुआ; क्योंकि उत्तरी-पूर्वी ट्रेड हवा इनके विपरीत चल रही थी और अज़ोर द्वीप-पुञ्ज के निकट आँधी इतने वेग से चलने लगी कि इनको इन द्वीपों में उतरना पड़ा। आँधी का वेग घट जाने पर ये फिर चल दिये।

७ महीने के पश्चात् ये लोग पैलस लौटे। अब स्पेन-वालों को असीम आनन्द हुआ। कोलम्बस के लाये हुए मनुष्यों को और विदेश के अनाज—विशेषतः रुई, आलू और तम्बाकू—को देखकर राजा और रानी बड़े प्रसन्न हुए।

इन नये देशों का पता लगने से राजा फर्डिनेंड और रानी इसाबेला को इतना आनन्द हुआ कि उन्होंने कोलम्बस से दुबारा समुद्र-यात्रा के लिए कहा। अबकी बार १४ कैरावेल और ३ छोटे जहाज़ साथ लिये गये। पोप ने भी विधर्मियों के देश-विजय की अनुमति दे दी। उस समय ईसाइयों के

लिए विधर्मियों का राज्य लेना और उन्हें अपने धर्म में दीक्षित करना धर्म समझा जाता था। सन् १४९३ ई० में २४ सितम्बर को कैडी से कोलम्बस रवाना हुआ। उसके साथ लगभग १५०० मनुष्य चले, इनमें से प्रायः २०० छिपकर गये थे। कुछ पादरी भी थे। कुछ खेती का सामान भी साथ ले लिया गया था।

पहले पहल ये लोग डोमिनिका द्वीप में पहुँचे और केरिवियन द्वीप-पुञ्ज तथा पोर्टो रिको का पता लगाया। जब ये लोग गाडालोप द्वीप में पहुँचे, इनको ६ औरतें और दो बालक, जिनको यहाँ के जङ्गलियों ने पकड़ लिया था, मिले। इन्हीं लोगों से कोलम्बस को दक्षिणी अमेरिका का वृत्तान्त मालूम हुआ। अन्त में ये हिस्पैनिओला पहुँचे। यहाँ जिन स्पेन-निवासियों को छोड़ गये थे, उनका नाम तक न था। बीमारी से तथा आपस में या यहाँ के निवासियों से लड़कर वे सब मर चुके थे। कोलम्बस ने दुबारा इस पर अधिकार किया और यहाँ एक अच्छा दुर्ग बनवाया। इनको यहाँ भी सोना न मिला। जब नये देश के पता लगने में विलम्ब होने लगा तब साथियों में विद्रोह के लक्षण दिखाई पड़ने लगे। इस समय कोलम्बस बीमार था; परन्तु उसने बड़ी बुद्धिमत्ता से सबको सँभाला और वह नये देश की खोज के लिए चल पड़ा। अब सुन्दर जमैका द्वीप का पता लगा। यहाँ के निवासियों ने विदेशियों पर आक्रमण किया, पर कोलम्बस ने उनको समझाया और वस्तुओं का

आदान-प्रदान होने लगा। कोलम्बस का स्वास्थ्य नष्ट हो गया था। वह हिस्पैनिओला लौट पड़ा। यहाँ उसका भाई बार्थोलोमो मिला और थोड़े दिनों के सुशासन ने यहाँ के घरेलू झगड़े को शान्त कर दिया। यहाँ का दुष्ट राजा काउनावो भी पकड़ा गया।

परन्तु निन्दकों की कमी कहाँ ? कोलम्बस की खोजों ने दूसरों की ईर्ष्या को बढ़ाया और स्पेन में उसकी निन्दा की जाने लगी। बार्थोलोमो को अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर कोलम्बस स्पेन की ओर ३० मार्च, सन् १४९६ में—कैनाबो को साथ लेकर—चल पड़ा। रास्ते में कैनाबो की मृत्यु हो गई और जून में कोलम्बस कैडी में उतरा। अब की बार यहाँ उसकी आवभगत न हुई। लोगों ने उसकी निन्दा सुनी थी, पर राजा फर्डिनेंड और रानी इसाबेला ने उसकी आवभगत की।

राजा और रानी के कहने पर तीसरी बार, सन् १४९८ ई० की १३ मई को, केवल ६ जहाज़ लेकर वह रवाना हुआ। कैनेरिज़ द्वीप-पुञ्ज में पहुँचते ही वह तीन जहाज़ साथ लेकर कुछ दक्षिण की ओर चला। शेष तीन जहाज़ों को उसने हिस्पैनिओला भेजा। ३१ जुलाई सन् १४९८ ई० में ट्रीनीडैड की तीन पहाड़ी चोटियाँ उसने देखीं। दक्षिण की ओर जाने पर उसे ओरिनिको नदी का मुहाना मिला। फिर वह पैरिया मारगैरिटा पहुँचा। यहाँ किनारे के पेड़ों पर बन्दर नाचते-कूदते थे। स्त्रियाँ मोतियों के और सोने के हार

पहने हुए थीं। यह सोना इनके देश के पहाड़ों से मिला था और मोती समुद्र के किनारों पर थे। कोलम्बस की आँखें दुखने लगीं इसलिए वह क्युबागोवा की तटभूमि को छूता हुआ हिस्पैनिओला की ओर चल पड़ा। यहां अशान्ति फैली हुई थी, लोग एक दूसरे से लड़ते थे। बड़ी कठिनाइयों के साथ कोलम्बस शान्ति स्थापित कर सका। परन्तु बार्थो-लोमो के रूखे व्यवहार ने उसके बहुत से शत्रु बना लिये। इनमें से कुछ लोगों ने स्पेन लौटकर कोलम्बस और उसके भाई बार्थोलोमो की बड़ी निन्दा की। रानी इसाबेला ने कोलम्बस की पदच्युति की आज्ञा दे दी और फ्रैंसिस दी वोबेडिला को उसके स्थान पर भेजा। आते ही उसने कोलम्बस और बार्थोलोमो को शृङ्खलाबद्ध करके, इसी अवस्था में, स्पेन भेज दिया। कोलम्बस चाहता तो इस आज्ञा को न मानता, पर उसने बन्दी अवस्था में ही स्पेन पहुँचना चाहा। जब सन् १५०० ई० में ये दोनों भाई घर पहुँचे तब इनकी यह दशा देखकर लोग बहुत लज्जित हुए। राजा ने इनका पुरस्कृत किया। वह अपने व्यवहार पर बहुत ही लज्जित हुआ। रानी इसाबेला तो रो पड़ी। पर कोलम्बस ने इन शृङ्खलाओं को बड़े यत्न से रक्खा और यह इच्छा प्रकट की कि मरने पर शृङ्खलाएँ भी उसके साथ गाड़ दी जायँ।

९ मई सन् १५०२ ई० में कैडी से वह चौथी बार फिर, राजा के कहने पर, एशिया जाने के पश्चिमी मार्ग का पता

लगाने को चला। अब की बार उसके साथ केवल चार छोटे छोटे जहाज़ थे। २४३ मनुष्यों में ६२ लड़के थे। बालको, क्या तुम भी ऐसा साहस का कार्य करना चाहोगे? कैनेरी द्वीप होते हुए ये लोग सैन-डोमिंगो पहुँचे। यहाँ उसके जहाज़ में छेद हो गया। फिर भी कोलम्बस बढ़ता गया। डेरियन तक जाकर भी जब कोई मार्ग न मिला तो वह होंड्युरस, मास्कीटो शोर, कास्टा रिका और वेरागुवा होता हुआ जमैका पहुँचा। यहाँ विद्रोहियों ने उसको बहुत कष्ट दिया। पर उसकी प्रत्युत्पन्न मति ने उसे भूखों मरने से बचाया। इसी समय चन्द्र-ग्रहण होनेवाला था। उसने देशी राजाओं से कहा कि यदि वे खाना नहीं पहुँचावेंगे तो अमङ्गल-सूचक ग्रहण होगा। वास्तव में ग्रहण हुआ और देशी लोग उसको खाना पहुँचाने लगे।

कोलम्बस १५०४ ई० में स्पेन लौट आया। रानी इसाबेला का देहान्त हो चुका था। राजा फर्डिनेंड के कान भी दुष्टों ने भर रक्खे थे। मारे दुःख के कोलम्बस अस्वस्थ हो गया। निदान दारिद्र्य और रोग ने उसको मृत्यु की ओर ढकेल दिया। वैलाडोलिड में उसका देहान्त हुआ। सेविल के गिर्जे में वह दफ़न किया गया। उसकी क़ब्र के ऊपर लिखा है—"कैस्टाइल और लियोन को कोलम्बस ने एक नई दुनिया दी।"

ऐमेरिगो वेस्पूकी

जन्म-स्थान—फ्लोरेंस; मृत्यु-स्थान—सेविल

ऐमेरिगो वेस्पूकी का जन्म फ्लोरेंस नगर में, सन् १४५१ ई० में, हुआ। ४६ वर्ष की अवस्था में कैस्टाइल के राजा की आज्ञा से यह भी कोलम्बस की तरह एटलांटिक सागर पार करने को चला। अभी तक कोलम्बस के दक्षिणी अमेरिका के खोज निकालने का हाल किसी को मालूम नहीं हुआ था। ऐमेरिगो ने सन् १४९७ ई० में दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी भाग का पता लगाया और यही इस देश का ढूँढ़ निकालने-वाला कहा गया। इसने किनारे किनारे उत्तर की ओर चलना चाहा और कुछ दिनों में गल्फ़ आफ़ मेक्सिको को पार करके उत्तरी अमेरिका का पता लगा लिया।

सन् १४९९ ई० में इसे दूसरी बार कैस्टाइल के राजा ने भेजा। अब की बार यह ब्रेज़ील पहुँचा। इसने अब पुर्त्तगाल की नौकरी कर ली। सन् १५०१ ई० में दक्षिणी अमेरिका के किनारे किनारे यह दक्षिण की ओर चला और हार्न अन्त-रीप के प्रायः निकट ही जा पहुँचा। इस खोज से ऐमेरिगो की ख्याति बढ़ गई। दोनों महाद्वीप, जो पनामा नहर निकलने से पहले एक थे, इसी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उत्तरी,

मध्य और दक्षिणी अमेरिका ऐमेरिगो के नाम का ही अपभ्रंश है।

कुछ दिनों के पश्चात् यह स्पेन के जल-विभाग का प्रधान नाविक बना दिया गया और कोलम्बस का सच्चा मित्र हो गया। सन् १५१२ ई० में इसका देहान्त हुआ।



वास्को न्युनेज़ डी बल्बोवा

जन्म—सन् १४७५ ई०

मृत्यु—सन् १५१५ ई० के लगभग

साधारण मनुष्य अपने प्रयत्न से कैसे जगत् में प्रसिद्ध हो सकता है, इसका उदाहरण न्युनेज़ डी बल्बोवा है। यह घर से निकाला हुआ बहुत ही दरिद्र पुरुष था। स्पेन के ज़ेरिस नगर में इसका घर था। इसने बहुत सा ऋण भी लिया था और यह महाजनों से पीछा छुड़ाना चाहता था; इसलिए जब हिस्पैनिओला से कुछ स्पेन-निवासी, कोलम्बस की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात्, जहाज़ पर जा रहे थे तब यह जहाज़ के मालगोदाम में छिप गया। जहाज़ छूटने पर कप्तान को ज्ञात हुआ कि बल्बोवा छिपकर भाग रहा है। इससे वह बहुत ही क्रुद्ध हुआ। उसने बल्बोवा को किसी द्वीप में उतार देना चाहा। परन्तु जहाज़ के मल्लाहों के अनुरोध से उसने उसे डेरियन में, जो अब पनामा के नाम से विख्यात है, उतार दिया।

यहाँ स्पेन-निवासी आपस में लड़ रहे थे। जाते ही इन पर प्रभाव जमाकर यह इनका सर्दार हो गया। यहाँ के मूल-निवासी भी इसका सम्मान करने लगे और शान्ति स्थापित

हो गई। इसने यहाँ के एक देशी राजा करिटा की लड़की से ब्याह कर लिया। अब लोग इसको दक्षिण के रत्नमय देश की कहानियाँ सुनाने लगे और इसने भी देश के पश्चिमी किनारे के प्रशान्त महासागर का नाम सुना। एक और देशी राजा कोमोगर बल्बोवा का मित्र हो गया था। इसी ने प्रथम बार बल्बोवा से प्रशान्त महासागर की चर्चा की थी। २ सितम्बर सन् १५१३ ई० में इसी बात की परीक्षा के लिए यह एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने लगा। २५ सितम्बर सन् १५१३ ई० में इसने पश्चिम में वैसा ही एक सागर देखा जैसा स्पेन से यहाँ आते समय देखा था। मार्को पोलो का नाम तुम्हें स्मरण होगा। उसने इस महासागर का एशियाई किनारा देखा था और बल्बोवा ने उसका पूर्वी किनारा देख लिया। अभी तक तो लोगों को अमेरिका के पूर्वी किनारे का और प्रशान्त महासागर का ही ज्ञान था, अब इनको इस महाद्वीप के पश्चिमी किनारे का और प्रशान्त महासागर का भी ज्ञान हो गया। पर इतने ज्ञान से लोग कब सन्तुष्ट रह सकते थे।

बल्बोवा की इस खोज ने स्पेन में हलचल मचा दी और जब इसने जहाज़ बनाने के लिए स्पेन-सरकार से कुछ सामान माँगा, तो उसने तुरन्त सब सामान भेज दिया और कुछ सामान किनारे के वेस्ट इंडीज़ द्वीप-पुञ्ज से भी आया। उसको इसने बड़ी सावधानी से जानवरों और मनुष्यों पर लादकर पश्चिमी तट पर पहुँचाया और वहाँ जहाज़ बनाया

जाने लगा। जहाज़ बन ही चुका था कि इसके शत्रु पेड्रारियस ने, जो स्पेन-सरकार की ओर से यहाँ 'गवर्नर' था, डाह के मारे इसकी हत्या करा दी।

यह सच है कि बल्बोवा अपना कार्य पूरा न कर सका परन्तु इसने औरों के लिए खोज का कार्य तो सुगम कर दिया।



सिबेस्टियन कैबट

जन्म—सन् १४७७ ई०; मृत्यु सन् १५५७ ई०

सिबेस्टियन कैबट का जन्म ब्रिस्टल नगर में हुआ था। यह जॉन कैबट का दूसरा बेटा था।

जॉन कैबट जिनेवा का रहनेवाला था और वाणिज्य के लिए ब्रिस्टल में आया था। इसने लेवैंट में व्यवसाय करते समय, एशिया के धन के विषय में, बहुत कुछ सुना था। यह ऐसे राजा की खोज में था जो इसके उद्देश्य को पूरा करने में सहायता करे। हम जिस समय की बात कहते हैं उस समय इँगलैंड का राजा हेनरी सप्तम था। तुम्हें स्मरण होगा कि इस राजा ने कोलम्बस को सहायता नहीं दी थी और जब उसके नये नये देशों के पता लगाने का हाल सुना तो वह अपने व्यवहार पर बहुत लज्जित और दुःखित हुआ था। अब यह चाहता था कि किसी मनुष्य को आविष्कार के लिए भेजे। जब जॉन कैबट ने राजा से अपनी इच्छा प्रकट की तो उसने तुरन्त इसको इस कार्य के लिए अनुमति-पत्र दिया और उसमें स्पष्ट लिख दिया कि खोज इँगलैंड के नाम पर की जाय और पता लगाये हुए देश से जो लाभ होगा वह जॉन कैबट और उसकी सन्तान को प्राप्त होगा, केवल

पाँचवाँ हिस्सा राजा को मिलेगा। ऐसा अनुमति-पत्र पाकर जॉन कैबट अपने बेटे सिबेस्टियन कैबट के साथ सन् १४९७ ई० में आयरलैंड के दक्षिण होता हुआ उत्तर-पश्चिम की ओर चल पड़ा। वह जानता था कि पृथ्वी गोल है इसलिए पश्चिम की राह से एशिया भी पहुँच सकते हैं। दक्षिण जाने की अनुमति न थी, क्योंकि हेनरी सप्तम स्पेन से झगड़ा मोल लेना न चाहता था। पूर्वी राह मार्को पोलो ने देखी ही थी और उसमें कठिनाइयाँ भी बहुत थीं। इस कारण कैबट ने पश्चिमी राह का ही पता लगाना चाहा।

इसका जहाज़ छोटा था और साथ में केवल १८ मनुष्य थे। ये लोग सेंट लारेंस नदी के मुहाने पर पहुँच गये; परन्तु इतने थोड़े मनुष्यों के साथ एक अनजान देश में उतरना निरापद न समझकर ये लोग ब्रिस्टल लौट आये। तीन महीने में लौटने पर जब इन लोगों ने अपनी खोज का वर्णन किया तो हेनरी सप्तम बहुत सन्तुष्ट हुआ। उसने कैबट को बहुत सा पारितोषिक दिया। फिर दूसरी बार इसको भेजने की तैयारी की। अब की बार कुछ अँगरेज़ी जहाज़ माल लादकर भेजे गये और बहुत से अँगरेज़ भी साथ हो लिये। ये लोग मई सन् १४९८ ई० में ब्रिस्टल से दुबारा रवाना हुए और जहाज़ लेकर उत्तरी अमेरिका के किनारे पहुँचे। परन्तु ये लोग ज्यों ज्यों दक्षिण की ओर बढ़ते गये, इन्हें इस देश का अन्त ही न मिला। इसको

पार करने की आशा घटती गई। बहुत दक्षिण में जाना मना था, इस कारण ये लोग लौट पड़े। इधर एशिया जाने की पश्चिमी राह भी इनको न मिली। अब तो हेनरी सप्तम बहुत असन्तुष्ट हुआ। फिर उसने तीसरी बार यात्रा करने में सहायता न की।

सन् १४९९ ई० में सिबेस्टियन कैबट ने अपने पिता के कार्य को पूरा करना चाहा पर वह कृतकार्य्य न हो सका। केवल न्यू फ़ाउंड लैंड का पता चला।

वह लिखता है कि यहाँ समुद्र मछलियों से भरा हुआ है, और ज्यों ज्यों उत्तर की ओर चलिए, समुद्र में जहाज़ से भी बड़े बड़े बर्फ़ के सफ़ेद ढोंके तैरते देख पड़ते हैं।

सिबेस्टियन कैबट, पिता के साथ, सेंट लारेंस के दक्षिण की यात्रा कर चुका था। इसलिए अब की बार वह उत्तर की ओर गया। पर यहाँ सर्दी अधिक होने के कारण इसके साथी आगे चलना नहीं चाहते थे इसलिए विवश होकर ये लोग दक्षिण की ही ओर चलकर फ्लोरिडा तक पहुँचे और एशिया के मार्ग का पता लगाने लगे। परन्तु फिर भी इनको एशिया की राह न मिली।

जब हेनरी अष्टम गद्दी पर बैठा, कैबट एक बार फिर एशिया की राह की खोज में चला और ब्रेज़ील तक पहुँचकर हिस्पैनिओला और पोर्टो रिको होता हुआ घर लौट आया।

सन् १५१६ ई० में इसने स्पेन की नौकरी कर ली, परन्तु आविष्कार का कार्य फिर भी पूरा न हुआ। सन् १५१७ ई० में यह फिर अँगरेज़ों की ओर से लैब्रेडर गया और वहाँ से हडसन की खाड़ी में पहुँचा, परन्तु एशिया की राह फिर भी न मिली। इससे निरुत्साह होकर, स्पेन की नौकरी करके, यह ब्रेज़ील की तट-भूमि को स्पेन के अधिकार में लाने की चेष्टा करता रहा। सन् १५४८ ई० में यह इँगलैंड लौट आया। राजा एडवर्ड षष्ठ ने इसकी बातों से प्रसन्न होकर इसे १६६ पौंड १३ शिलिंग ४ पेंस की पेंशन दे दी और इँगलैंड का ग्रैंड पाइलट भी नियुक्त कर दिया।

एक नई कम्पनी मर्चेंट एडवेंचरर्स के नाम से चल पड़ी। सिबेस्टियन कैबट उसका नायक बना। सन् १५५२ ई० में उत्तर की ओर कुछ जहाज़ों के साथ सिबेस्टियन चला। अब एशिया से व्यापार आरम्भ हो गया।

सन् १५५७ ई० में सिबेस्टियन कैबट का देहान्त हो गया। यद्यपि न तो इसे और न इसके पिता को ही एशिया के पश्चिमी समुद्री मार्ग का पता चला, तो भी इनकी अधूरी खोजों ने दूसरों के लिये मार्ग सुगम कर दिया। इतना ही नहीं, इँगलैंड को नई दुनिया के पूर्वी किनारे पर अधिकार जमाने का प्रथम अवसर भी इन्हीं लोगों ने दिया था।

फ़र्नैंडो डी मैगलहैंस या मैगिलन

जन्म—सन् १४७० ई० के लगभग;
मृत्यु—सन् १५२१ ई०

मैगिलन का जन्म पुर्तगाल में हुआ। यह अच्छे कुल में जन्मा था और थोड़ी ही अवस्था में रानी का नौकर हो गया। बड़े होने पर इसने राजा इमैनुयेल की नौकरी कर ली। वास्को डि गामा के पश्चात् पुर्तगालवाले एशिया की ओर कई बार भेजे गये और मैगिलन ने भी इनके साथ हो लेना चाहा।

सन् १५०४ ई० में एल्मिदा ने, जो नये ढूँढ़े गये देशों का वाइसराय होनेवाला था, मैगिलन को साथ ले लिया और केप आफ़ गुड होप की राह वह एशिया की ओर चल पड़ा। सन् १५०६ ई० में यह भारत को छूता और छोड़ता हुआ सुमात्रा और मलक्का पहुँचा। फिर वहाँ से भारतवर्ष आया। यहाँ वह अल्बुकर्क की नौकरी करने लगा। सन् १५११ ई० में यह एक जहाज़ में कप्तान बनाकर मलक्का भेजा गया और वहाँ से सन् १५१२ ई० में पुर्तगाल लौट गया। वहाँ राजा से कुछ बातों में इसकी अनबन हो गई और इसने घर छोड़-कर बाहर जाना चाहा। उद्देश्य यह भी था कि ऐटलांटिक को पार करके मलक्का, जिसको स्पाइस आइलैंड भी कहते हैं,

पहुँचे और वहाँ से सामान लाकर राजा को सन्तुष्ट करे। पर यह राजा से लड़ चुका था और जब इसने अपनी इच्छा प्रकट की तब राजा ने सहायता करना स्वीकृत न किया। इस पर यह स्पेन के राजा चार्ल्स पञ्चम के पास गया। उसने पाँच जहाज़, २३५ मनुष्य और दो वर्ष के उपयुक्त खाद्य पदार्थ देना स्वीकार किया। मैगिलन को यह बता दिया गया कि पुर्तगाल सरकार की ओर से पता लगाई हुई भूमि पर वह अधिकार न जमाये। हाँ, प्राप्त हुए अंश के बीसवें भाग का वह अधिकारी होगा। मैगिलन ने कोलम्बस के आविष्कार का हाल सुना था। बल्बोवा के पैसिफ़िक महासागर के विषय की बातें भी उसके हृदय में बैठी हुई थीं। उसने पैसिफ़िक को पार करने का निश्चय कर लिया। वह २० सितम्बर सन् १५१९ ई० में स्पेन से रवाना हुआ। उसके साथ भिन्न भिन्न देशों के लोग थे। कुछ ऐसे भी थे जो उसके कार्य में विघ्न डालना चाहते थे। मैगिलन पुर्तगाल की ढूँढ़ निकाली हुई भूमि में नहीं जाना चाहता था। इसलिए उसने टेनेरिफ़ द्वीप में पहुँचकर दक्षिण-पश्चिम की राह ली। बहुतेरी विपत्तियों को अतिक्रमण कर वह परनैमब्युको के निकट पहुँचा और वहाँ से दक्षिणी अमेरिका के किनारे किनारे दक्षिण-पश्चिम चलते चलते रायो डी लाप्लेटा में सन् १५२० ई० में गया। वहाँ से वह फिर दक्षिण की ओर चला। इधर दो जहाज़ों के कप्तानों ने, जो पहले से ही विद्रोह के लिए प्रस्तुत थे, तीसरे

जहाज़ के कप्तान को भी अपना साथ देने के लिए घेर लिया। इसका पता लगते ही मैगिलन ने मुख्य विद्रोही सरदार को मरवा डाला। इससे सनसनी छा गई। दो महीने तक ये लोग सेंट जूलियन में रुके थे कि इनको पेटेगोनिया के निवासी दिखाई पड़े। उनसे कुछ खाने का सामान मिलने की आशा इन लोगों को न रह गई थी कि एक नङ्गा दैत्याकार मनुष्य दिखाई पड़ा। इसको मैगिलन ने अपने साथ ले लिया और दो उद्दण्ड विद्रोहियों को कुछ खाद्य पदार्थ के साथ वहाँ उतार दिया। इससे जहाज़ में शान्ति हो गई। पूरे एक महीने के पश्चात्, २१ अक्तूबर सन् १५१९ ईस्वी को, मैगिलन ने उस जल-विभाजक का पता लगाया जिससे वह पैसिफ़िक महासागर पहुँच सकता था। इस जल-विभाजक का नाम, इसी के नाम पर, स्ट्रेट आफ़ मैगिलन पड़ा। इस जल-मार्ग के दक्षिण में उसने एक अग्निशिखामय द्वीप देखा और इसी लिए इस द्वीप का नाम टियरा डेल फ़्युगो रक्खा। टियरा डेल फ़्युगो का अर्थ अग्निमय भूमि है। इसी मार्ग के उत्तरी किनारे की भूमि को उसने रमणीय बताया है, क्योंकि ऊँचे पर्वतों से बर्फ़ की नदी बहती हुई समुद्र में गिरती है।

सात दिन की कठिन यात्रा के पश्चात् २८ अक्तूबर सन् १५१९ ई० को वह पैसिफ़िक के तट पर पहुँचा। इधर इस मार्ग को पार करते समय एक जहाज़ डूब गया था और एक जहाज़ के नाविक साथ छोड़कर घर चले गये थे। अब केवल

तीन जहाज़ों को लेकर मैगिलन उत्तर-पश्चिम के गरम कटि-बन्ध की ओर चला। भोज्य पदार्थ समाप्त हो चुके थे और एशिया का अभी पता न था। भूख के मारे नाविक चूहों को मार मारकर खाने लगे, यहाँ तक कि इनको सूखा चमड़ा भी भिगो भिगोकर खाना पड़ा। इससे बीमारी फैली और बहुत लोग मर गये। पर मैगिलन इनको ढाढ़स बँधाकर आगे बढ़ता ही रहा। रास्ते में जो दो-एक द्वीप मिले उनमें भी खाने की वस्तु न मिली। ९८ दिन के पश्चात् ये लोग लैड्रोंस या राबर द्वीप-पुञ्ज में पहुँचे और यहाँ वस्तुओं का विनिमय हुआ। कुछ भोज्य पदार्थ भी मिले। इसके पश्चात् ये लोग फिलीपाइन द्वीप-समूह में पहुँचे। वहाँ के कुछ निवासी ईसाई बनाये गये।

अभी मैगिलन का कार्य पूरा न हो पाया था कि यहाँ के एक देशी राजा के साथ युद्ध छिड़ गया। इसी युद्ध में यह मारा गया। पर इसके साथी आगे मलका की ओर बढ़ते ही गये। पुर्तगालवालों ने इनका एक जहाज़ छीन लिया। अब एक मात्र जहाज़ भारत और अफ्रिका के दक्षिण होता हुआ केप वर्ड द्वीप में पहुँचा। यहाँ भी पुर्तगालवालों ने १३ मनुष्यों को बन्दी कर लिया। अवशिष्ट १८ मनुष्य स्पेन पहुँच पाये। वस्तुतः मैगिलन ने ही पहली बार जगत् की परिक्रमा की।

फ़र्नैंडो कोर्टिस

जन्म—सन् १४८५ ई०; मृत्यु—सन् १५४७ ई०

फ़र्नैंडो कोर्टिस का जन्म स्पेन में हुआ। इसका पिता इसको वकील बनाना चाहता था, किन्तु इसका ध्यान दूसरी ही ओर था। इस समय पुर्तगाल और स्पेन में नये देश ढूँढ़ने का उत्साह बहुत ही बढ़ा-चढ़ा था। लोग कहीं न कहीं किसी राजा की ओर से पता लगाने के कार्य में लगे हुए थे। कोर्टिस ने भी यही कार्य करना चाहा। मैगिलन आविष्कार के लिए पुर्त्तगाल की ओर से गया था और स्पेन-वाले अब हिस्पैनिओला, क्यूबा, पोर्टो रिको और जमैका के अधिकारी हो चुके थे और वहाँ से अपना हाथ निकट के देशों पर फैलाना चाहते थे। सन् १५१३ ई० में फ़्लोरिडा का पता लगा। सन् १५१७ ई० में कोलम्बस के एक साथी ने कोर्डोवा में युकेटन प्रायद्वीप का पता लगाया। परन्तु उसके लेने में वह कृतकार्य न हुआ और कुछ स्पेनवाले बन्दी कर लिये गये। अब सन् १५१८ ई० में कोर्टिस स्पेन के उन बन्दियों के उद्धार के लिए भेजा गया। उस देश को जीत कर यह चार दिन के पश्चात् सैन जुवेन डी बुलुवा में, जो मेक्सिको के किनारे पर है, पहुँचा। यहाँ

इसको कुछ देशी मनुष्य मिले। इन्होंने स्पेनवालों की आव-भगत की। ये लोग मेक्सिको के राजा मोंटेज़ुमा के दूत थे और इस बात का पता लगाने आये थे कि स्पेनवाले क्या चाहते हैं। इन लोगों के साथ कोर्टिस ने अपने देश की वस्तुओं का आदान-प्रदान किया और इनके राजा से मिलना चाहा। अतएव अनुमति लेने के लिए राजदूत राजा के निकट लौट गये। राजा मोंटेज़ुमा डरपोक था। इन विदेशियों की बन्दूक और वीरता का हाल सुनते ही वह घबरा गया। उसने कोर्टिस के निकट सोने और चाँदी की भेंट भेजी और अपने दूतों को यह सिखा दिया कि इन विदेशियों को इस देश की दुर्गमता की कहानी सुनाकर डरवा दें। पर इस भेंट को देखने से कोर्टिस का लालच बढ़ गया। उसने राजधानी मेक्सिको में पहुँचने की ठान ली। इससे इसके साथी डर गये। उनको समझा-बुझाकर यह उत्तर की ओर चल पड़ा। अब इसने वेराक्रूज़ में डेरा डाला। यहाँ इसके पास क्यूबा से कुछ और लोग आ गये। लगभग १५० मनुष्यों को यहाँ छोड़कर यह ३५० स्पेनवालों और लगभग ६००० देशी सिपाहियों के साथ मेक्सिको विजय करने को चला। तुमने बंगाल-विजय और आर्काट की कहानी सुनी है। थोड़े से अँगरेज़ सिपाहियों के साथ क्लाइव ने किस प्रकार हिन्दुस्तानी सिपाहियों को लड़ाई की शिक्षा दी और उन्हें अपने कार्य के उपयुक्त बनाया। कोर्टिस ने भी इसी प्रकार देशी

सिपाहियों को युद्ध-विद्या सिखा दी। ये लोग अपने राजा के अत्याचारों से ऊबे हुए थे, इससे इन्होंने कोर्टिस को लड़ाई में सहायता दी। ऐसी सेना के साथ कोर्टिस मेक्सिको की ओर बढ़ा। वह रास्ते में लोगों से सोना-चाँदी लेने लगा। जो लोग न देते थे उनसे लड़ता था और उनको पराजित कर उनका सर्वस्व छीन लेता था। यह समाचार जब मोंटेज़ुमा के पास पहुँचता तब वह घबराकर अधिक सोना-चाँदी भेजता और कोर्टिस से कहला भेजता कि आगे न बढ़ो। लेकिन उसकी कौन सुनता था? कोर्टिस विजयोन्माद से पागल हो रहा था। उसने इनके धर्म पर भी हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया। वह ज्यों ज्यों आगे बढ़ता त्यों त्यों देश ऊँचा प्रतीत होता जाता था और देश का प्राकृतिक सौन्दर्य भी बढ़ता जाता था। मोंटेज़ुमा का दुर्भाग्य था कि इसी समय ज्वालामुखी पोपोकैटेपेट्ल का उद्गार हुआ। राजा इसको ईश्वर का अभिशाप समझने लगा। इधर कोर्टिस अपने सिपाहियों के साथ सुन्दर मेक्सिको नगर में जा पहुँचा। राजा मोंटेज़ुमा दैव-दुर्विपाक से घबराया हुआ तो था ही; कोर्टिस के आने के संवाद ने उसको और भी विकल कर दिया। विदेशियों को प्रसन्न करने के लिए आगे बढ़कर उसने उनका स्वागत किया। राज-कोष में जितना धन था, सब लाकर उसने कोर्टिस के पैरों पर रख दिया। पर कोर्टिस ने धूर्तता से मोंटेज़ुमा को बन्दी कर लिया और यह कहला भेजा कि अब मेक्सिको पर स्पेन के राजा का अधिकार है।

कॉर्टिस इससे भी सन्तुष्ट न हुआ। उसने राजा से ईसाई बनने को कहा। पर राजा अपने धर्म्म का पक्का था। उसने अपना धर्म न छोड़ा। इस पर क्रुद्ध होकर कॉर्टिस ने देश के देव-मन्दिरों और मूर्त्तियों को तुड़वा दिया। ऐसे कर्म का फल कब अच्छा होता है ? उसके देशी सिपाही बिगड़ खड़े हुए। उधर स्पेन के सिपाहियों का एक दल, जो कॉर्टिस के विपक्ष में था, किनारे पर आ उतरा। अब दोनों ओर सँभालना कॉर्टिस के लिए कठिन हुआ। यह झगड़ा दस वर्ष तक होता रहा। अन्त में कॉर्टिस कृतकार्य हुआ। सोने-चाँदी से लोगों के थैले भर गये, लेकिन कॉर्टिस का लोभ बढ़ता ही गया। कैलिफ़ोर्निया का पता लगाने के लिए उसने मेक्सिको से स्पेननिवासियों का एक जत्था भेजा और आप भी इसकी खोज में लगा रहा। सन् १५४७ ई० में इसका देहान्त हो गया।

फ़्रैंसिस्को पिज़ारो

जन्म—सन् १४७० ई०; मृत्यु—सन् १५४१ ई०

फ़्रैंसिस्को पिज़ारो का जन्म स्पेन के ट्रूक्सिलो नगर में हुआ था। सूअरों की रखवाली करना इसका पेशा था। पर इसे नये देशों के धन से मालामाल होने की इच्छा भी प्रबल थी। इसके लिए इसने बल्बोवा का साथ कर लिया। यह कुछ दिनों तक पनामा में कृषक का कार्य करता रहा। यहाँ इसने दक्षिणी देशों के धन के बारे में बड़ी अद्भुत कहानियाँ सुनीं। अवसर प्राप्त होने पर यह इन देशों को भी देखना चाहता था। खेती के कार्य से इसने पर्याप्त धन इकट्ठा कर लिया था। सन् १५२४ ई० में एक जहाज़ और कुछ मनुष्यों के साथ यह रवाना हुआ। पर रास्ते में इसे बहुत कष्ट मिला; खाने-पीने के सामान की भी कमी हो गई। अन्त में विवश होकर पिज़ारो ने जहाज़ को तो सामान लाने के लिए पनामा में लौटा दिया और आप कुछ साथियों को लेकर किनारे पर उतर पड़ा।

वहाँ जङ्गल ही जङ्गल था। मनुष्य के तो दर्शन ही दुर्लभ थे। खोजते खोजते बहुत दिनों में जङ्गल के एक साफ़ स्थान में बस्ती दिखाई पड़ी। यहाँवालों से इन लोगों को दक्षिण

के उस देश का पता लगा जहाँ पर्याप्त सोना था। ये लोग बड़ी कठिनाई के साथ समुद्र तक रास्ता पा सके। जब ये वहाँ पहुँचे तो इन्होंने अपने जहाज़ को माल से लदा हुआ पाया। यह जहाज़ पनामा से माल ले आया था। इसी जहाज़ पर बैठकर ये लोग दक्षिण की ओर चले। कुछ दिनों के बाद इन्होंने एक बड़ी बस्ती देखी। जब ये जहाज़ से उतरकर बस्ती की ओर चले तो गाँववाले डरकर भाग गये। कुछ देर बाद लौटकर इन पर इन्होंने आक्रमण कर दिया। मारे डर के ये लोग अपने जहाज़ पर लौट आये।

जहाज़ भी डूब रहा था, इसलिए आगे बढ़ना उचित न समझकर ये लोग पनामा लौट गये। जहाज़ की मरम्मत हो जाने पर दो और जहाज़ लेकर, १६० मनुष्यों के साथ, पिज़ारो फिर रवाना हुआ। अब की बार यह जहाज़ में कुछ घोड़े भी लाया था। जब उस स्थान को पार कर लिया जहाँ ये लोग पहली बार पहुँचे थे, तो पिज़ारो जहाज़ से उतर गया और इसने जितना सोना लूटा था वह सब जहाज़ पर लादकर इस आशा से पनामा भेज दिया कि और लोग धन के लोभ से आ मिलेंगे। दूसरे जहाज़ दक्षिण की ओर बढ़े और गैलो द्वीप को पार कर गये। यहाँ के निवासी शिक्षित प्रतीत हुए, क्योंकि ये लोग किश्ती पर पाल चढ़ाये घूम रहे थे। पाल के चित्र और कारीगरी को देखकर किसी को यह भ्रम नहीं हो सकता था कि ये लोग अशिक्षित हैं।

जहाज़ के कप्तान ने इनमें से कुछ लोगों को पकड़ लिया। वह इनको अपनी भाषा सिखाने लगा। कुछ दूर और चलकर वह पिज़ारो के निकट लौट आया। इधर खाद्य पदार्थों की फिर कमी हुई। पनामा को फिर एक जहाज़ भेजा गया। पिज़ारो ने अब गैलो जाने का विचार किया, पर उसके साथी तैयार न हुए और बलवा होने को ही था कि पिज़ारो ने सबको समझा बुझाकर साथ चलने को तैयार कर लिया। केवल थोड़े से मनुष्य लौट गये।

कई महीने बाद एक जहाज़ पनामा से माल लादकर ले आया। अब की बार फिर ये लोग दक्षिण की ओर बढ़े और गुयाकिल बन्दरगाह में पहुँचे। कार्डिलरा पर्वत की सुजला सुफला पश्चिमीय तट-भूमि को देखकर ये लोग बहुत ही आनन्दित हुए। यहाँवालों ने इन लोगों को फल, अनाज, लामा* और ऊँट देकर सन्तुष्ट किया। ये लोग कुछ और दक्षिण चलकर पनामा लौट गये। पिज़ारो अब स्पेन गया और वहाँ से राजा की अनुमति लेकर पनामा वापस आया। सन् १५३१ ई० में तीसरी बार १८० मनुष्य, कुछ घोड़े और तीन जहाज़ लेकर यह पेरू की ओर चला। विषुवत रेखा के पास आते ही यह घोड़ों और आदमियों के साथ उतर पड़ा। उसने जहाज़ों को दक्षिण की ओर रवाना कर दिया।

* दक्षिणी अमेरिका का—ऊँट की जाति का—एक पशु, जिस पर व्यवसायी लोग माल लादते हैं।

जब पिज़ारो मय जहाज़ के गुयाकिल तक पहुँचा तब सब ने देश के अन्दर जाने का विचार किया। सन् १५३२ ई० में तट से कुछ दूर पर डेरा डाला गया। कुछ लोगों को छोड़कर पिज़ारो अन्दर की ओर चला। यहां इसने इन्का राजा अता-हुआल्पा का नाम सुना था। इस राजा का राज्य आजकल पेरू के नाम से प्रसिद्ध है। यह बड़ा ही धनी राज्य था। पिज़ारो ने इसको लेना चाहा। राजधानी कैक्सामल्का एंडीज़ पर्वत के दूसरी तरफ़ थी। पठार और पर्वत के पार करने पर ही कोई वहाँ पहुँच सकता था।

पिज़ारो के साथी पहले पहल घबगाये, पर धन के लोभ से आगे बढ़े। इन्का ने इनको सोने-चाँदी और ऊनी कपड़ों की भेंट दी, पर ये लोग आगे ही बढ़ते गये और कैक्सामल्का राजधानी दिखाई पड़ी। संवाद पाकर इन्का स्वयं मिलने आया, पर स्पेनवाले उस पर टूट पड़े। वह वन्दी कर लिया गया। पिज़ारो ने अब इससे नगर का सब धन इकट्ठा करवाया; फिर इसको मरवा डाला।

सन् १५३४ ई० में कज़्को नगर भी स्पेनवालों के हाथ आया और धीरे धीरे पेरू और चिली इन्हीं लोगों के हो गये।

अता-हुआल्पा की मृत्यु के पश्चात् नये इन्का ने बदला लेने की ठानी। पर स्पेन के सिपाही शिक्षित थे और संख्या में भी अधिक थे, इसलिए बड़े घमासान युद्ध के पश्चात् इन्का भाग गया। उसका एक सिपाही भी प्राण लेकर न भाग सका।

स्पेनवालों ने देश को लूट लिया। कहा जाता है कि लूट के माल में दस या बारह, मनुष्य के क़द की, सुवर्ण-मूर्तियाँ थीं। लूट के माल के ४८० हिस्से किये गये। हर सिपाही के हिस्से में २५००० हज़ार रुपये आये।

पिज़ारो का भाई फ़र्नेंडो पिज़ारो भी बड़ा निर्दय था। इस लूट के कार्य में उसी ने अधिक हिस्सा लिया था।

ऐसी निर्दयता का फल कब अच्छा होता है? सन् १५४१ ई० में इसी के आदमियों ने इसको, ७० वर्ष की अवस्था में, मार डाला।



सर ह्यूग विलौबी

मृत्यु—सन् १५५४ ई०

बालको ! तुम्हें मार्को पोलो का क़िस्सा याद होगा; कुबल-ईखाँ के स्वर्णमय देश का पता लगाने के लिए उसने कैसे कैसे कष्ट उठाये थे और फिर प्रिंस हेनरी ने जलमार्ग से भारत और चीन पहुँचने के लिए कैसे कैसे नाविकों को खोज के कार्य के लिए भेजा था; अन्त में कैसे वास्को डि गामा उत्तमाशा अन्तरीप होते हुए भारत में पहुँचा था। पर उत्तर-पूर्व की समुद्री राह से चीन पहुँचने का किसी ने विचार नहीं किया था। हाँ, कैबट ने अवश्य इस राह के बारे में अँगरेज़ों को सुझाया था। यदि खोज के कार्य के लिए लोग बाहर न निकलते तो योरोप के जिस नक़शे को अब तुम अपने सामने देखते हो वह सम्भवतः ठीक ठीक न बना होता, विशेषतः उत्तरी सरहद का ठीक पता लगना तो असम्भव सा था।

तुमने मर्चेंट ऐडवेंचर्स कम्पनी का नाम किसी पिछले पाठ में सुना है। इसी कम्पनी के अगुवा बनकर सर ह्यूग विलौबी और कप्तान रिचर्ड चैंसलर सन् १५५३ ई० में उत्तर-पूर्व की राह ढूँढ़ने के लिए निकले। चलते समय इनको इँगलिस्तान के राजा एडवर्ड षष्ठ ने कैथे या चीन के राजा से मिलने के

लिए चिट्ठी दी और यह कह दिया कि किसी राजा से या उसकी प्रजा से न तो छेड़छाड़ करना और न किसी के राज्य में, बिना उसकी अनुमति के, उतरना। उसने विदेशी राजाओं से भी कहला भेजा कि यदि ये अँगरेज़ नाविक सङ्कट में पड़ें तो इन पर मनुष्योचित दया दिखाइएगा।

स्काटलैंड के उत्तर में शटलैंड द्वीप है। यहाँ इन नाविकों ने रुकना चाहा, पर आँधी चलने के कारण ये वहाँ रुक न सके और लोफ़ोडैन में पहुँचे। इनको रास्ता नहीं मिल रहा था लेकिन भाग्य से नार्वे का एक मल्लाह छोटी सी किश्ती खेता हुआ दिखाई पड़ा। उसने इन लोगों को नार्वे के किनारे पर आने के लिए कहा। ये लोग तैयार हो गये और किनारे के फ़िओर्ड्स के पास पहुँचे। इन फ़िओर्ड्स की चट्टानें बहुत ऊँची और खड़ी दिखाई पड़ीं। नदियाँ, जो समुद्र में गिर रही थीं, बहुत ही सुन्दर मालूम होती थीं। पहाड़ों पर चीड़ के पेड़ खड़े थे और मल्लाहों की किश्तियाँ मछली मारने के लिए किनारे पर तैयार खड़ी थीं। इनमें से एक अच्छे मल्लाह को, रास्ता दिखाने के लिए, विलौबी ने साथ ले लिया।

ये ज्यों ज्यों उत्तर की ओर बढ़ते थे त्यों त्यों दिन छोटा होता जाता था और जब ये हैमरफ़ेस्ट के निकट पहुँचे तो सूर्य केवल घंटे दो घंटे के लिए दिखाई पड़ा। इसको 'मिड नाइट सन' कहते हैं। यहाँ रात्रि के समय मल्लाह लोग

किश्तियों में बैठकर मछली पकड़ने के लिए निकलते हैं और घंटे दो घंटे के उजेले में जब मछलियाँ निकलती हैं तब उनको पकड़ लेते हैं।

यहाँ इसी समय, दुर्भाग्य-वश, इतने वेग से आँधी चली कि विलौबी का जहाज़ किनारे से बहुत दूर हो गया और उसका साथी चैंसलर न मालूम अपने जहाज़ के साथ किधर चला गया। विलौबी ने अब नार्वे का उत्तरी हिस्सा पार कर लिया और वह नोवाज़ेंब्ला द्वीप पर जा रुका। फिर वहाँ से पश्चिम की ओर लौटा और सफ़ेद समुद्र को पार कर लैपलैंड के किनारे आया। अब जाड़े के दिन आये और इतनी कड़ी सर्दी पड़ी कि इसके साथी ठिठुरकर मरने लगे। समुद्र का पानी जम जाने से जहाज़ भी आगे नहीं बढ़ सकता था। सन् १५५४ ई० के लगभग विलौबी के प्राण इसी जहाज़ पर छूटे।

इधर विलौबी को न पाकर चैंसलर अपने साथियों समेत लैपलैंड में वारडो पहुँचा। यहाँ इनको एक अद्भुत बात दिखाई पड़ी। क्या तुमने कभी ऐसा सुना है कि किसी देश में कुछ दिनों तक रात्रि ही न होती हो और आकाश में सूर्य सर्वदा चमकते रहते हों? यह ऐसा ही स्थान था।

इस स्थान पर मिलने का निश्चय विलौबी और चैंसलर ने पहले ही कर लिया था, पर कुछ दिनों की प्रतीक्षा के बाद जब चैंसलर ने विलौबी को आते न देखा तब वह आगे

बढ़ा। सर्दी का मौसम निकट था। रुकना निरापद न समझकर, लोगों की भयोत्पादक बातों की परवा न करके, यह सफ़ेद समुद्र में आ पहुँचा। यहाँ कुछ मल्लाह दिखाई पड़े। ये इतने भयभीत थे कि अपनी किश्तियों के साथ किनारे पर भाग आये। अँगरेज़ों ने इनको बहुत समझाया और ढाढ़स बँधाया। थोड़े समय के पश्चात् इन पर उनका इतना विश्वास हो गया कि वे इन विदेशियों के पैर चूमने को दौड़े और इधर-उधर से इनके लिए बहुत सा खाना ले आये, पर वे किसी तरह अँगरेज़ों का माल लेने को तैयार न हुए। राजा की अनुमति के बिना दूसरों का माल लेना दण्डनीय था। उन्होंने इन लोगों से अपने राजा के साथ मिलने का आग्रह किया। मास्को नगर इस देश की राजधानी थी। यह नगर समुद्र-तट से दूर था। ये बिना पहियों की गाड़ियों पर बैठकर राजधानी की ओर चले। ऐसी गाड़ियों को स्लेज कहते हैं। इस भू-भाग पर जब बर्फ़ बहुतायत से पड़ती है तब इन गाड़ियों को बारहसिंघे खींचते हैं।

ऐसी ही गाड़ियों में बैठकर कुछ दिनों में चैंसलर, अपने साथियों समेत, मास्को के राजा के पास पहुँचा। राजा ने इन लोगों की बड़ी आवभगत की और चैंसलर के आगमन तथा कुछ व्यापार के विषय में भी अँगरेज़ राजा के पास पत्र भेजा।

दूसरी बार सन् १५५५ ई० में चैंसलर मध्य रूस की ओर चला। रूस से चीन के रास्ते का भी पता लगाने

की अनुमति इसको मिल चुकी थी। चैंसलर अबकी बार रूस में ही रह गया। उसने अपने साथियों को वापस भेज दिया।

सन् १५५६ ई० में तीसरी बार अँगरेज़ों का एक दल चला। इन लोगों को लैपलैंड के निकट विलोवी के जहाज़ का भग्नांश मिला।

इधर चैंसलर, मास्को के एक राजदूत को साथ लेकर, उत्तर-समुद्र की ओर चल पड़ा। आये हुए जहाज़ों में इसने सील और ह्वेल मछलियों का तेल, मोम, ऊन और कुछ जानवरों के सुन्दर बाल तथा कुछ सूत साथ ले लिया। अब यह इँगलैंड की ओर चल पड़ा। पर अबकी बार इसके दो जहाज़ डूब गये और तीसरे का बहुत दिनों तक पता न चला। चौथे जहाज़ में चैंसलर स्वयं था। स्काटलैंड के किनारे आते ही वहाँ के डाकुओं ने चैंसलर को, सब माल छीन कर, मार डाला।

सर फ्रैंसिस ड्रेक

जन्म—सन् १५३९ ई०; मृत्यु—सन् १५९५ ई०

सर फ्रैंसिस ड्रेक का जन्म टैविस्टाक के निकट हुआ था। अँगरेज़ नाविकों में इसी ने सबसे पहले भूमण्डल की परिक्रमा की थी। इसका पिता डिवनशायर का रहनेवाला था। बाल्यावस्था में इसने नाव चलाने की विद्या कैंट में रहकर सीखी थी। फिर डोगर बैंक में एक जहाज़ पर बहुत दिनों तक काम सीखता रहा। जब हाकिंस अफ्रिका में गिनी से कुछ हब्शियों को लाने के लिए गया था तब ड्रेक भी उसके साथ था। इन हब्शियों को पकड़कर ले जाना और इनको वेस्ट इंडीज़ में स्पेन-निवासियों के हाथ बेचना हाकिंस और ड्रेक का मुख्य कार्य था। इस व्यवसाय से इनको बहुत लाभ होता था, क्योंकि स्पेनवाले इन हब्शियों को मोल लेने को तैयार रहते थे। हब्शियों से स्पेनवाले खेती कराते थे। इसी व्यापार के लिए हाकिंस और ड्रेक मेक्सिको के किनारे जा पहुँचे। स्पेन के राजा को मालूम हो गया था कि अँगरेज़ लोग स्पेनवालों के हाथ मनुष्य और माल बेच-बेचकर बहुत सा धन इकट्ठा कर रहे हैं। यह सुनकर वह और भी असन्तुष्ट हुआ कि अँगरेज़ों ने स्पेन के अधिकृत

स्थानों में आना-जाना आरम्भ किया है। अब उसने यह घोषित कर दिया कि स्पेनवाले न तो अँगरेज़ों से कोई वस्तु ख़रीदें और न उनके हाथ कुछ बेचें।

इसी कारण हाकिंस और ड्रेक तथा स्पेन के बीच लड़ाई छिड़ गई। ड्रेक वहाँ से किसी प्रकार प्राण बचाकर भाग निकला और इँगलैंड पहुँचा। मार्ग में उसे बहुत कष्ट मिला। खाने-पीने का सामान घट गया; अन्त में विवश होकर कुछ लोगों को एक द्वीप में उतार देना पड़ा। सन १५६८ ई० में यह कार्नवाल पहुँचा। स्पेनवालों के अत्याचार के क़िस्से ड्रेक से सुनकर अँगरेज़ बहुत ही उत्तेजित हुए। उन्होंने हर तरह से ड्रेक की सहायता करने की इच्छा प्रकट की।

स्पेन और इँगलैंड में अब तक मित्रता का भाव था, लेकिन ड्रेक की कहानियाँ सुनने के बाद दोनों जातियों में शत्रुता का भाव उत्पन्न हो गया। तुम्हें पेरू-विजय की कथा का स्मरण होगा। वहाँ सोना-चाँदी इतना अधिक था कि स्पेनवाले जहाज़ों में भर-भरकर पनामा भेज देते थे और वहाँ से खच्चरों पर लादकर नोंबर डिडिओस में भेजते थे। यह नगर एटलांटिक महासागर के किनारे पर है। यहाँ पैसिफ़िक महासागर के जहाज़ नहीं आ सकते थे; माल पनामा में उतारना पड़ता था और वहाँ से मनुष्य या पशु ढो-ढोकर डेरिंग स्थल-संयोजक के पूर्वी तट पर ले आते

थे। आज-कल पनामा नहर बन गई है और प्रशान्त महासागर के जहाज़ एटलांटिक महासागर में, कुछ ही घण्टों में, पहुँच सकते हैं।

ड्रेक ने उन जहाज़ों के बारे में, जो नौंबर डिडिश्रौस से माल लादकर स्पेन ले जाते थे, सुना था। उन्हीं को लूटकर उसने अपने अपमान का बदला लेना चाहा। सन् १५७२ ई० में दो जहाज़ और कुछ किश्तियाँ साथ लेकर वह अमेरिका की ओर चला और नौंबर डिडिश्रौस जा पहुँचा। उसको देखते ही स्पेनवाले भाग गये। अब उसने स्पेन के धनागार को लूट लेना चाहा, पर दुर्भाग्यवश वह घायल हो गया। अँगरेज़ों ने उसको जहाज़ पर पहुँचा दिया। लेकिन लूट का कार्य बन्द न हुआ।

कुछ दिनों में ड्रेक अच्छा हो गया। उसने वहाँ के निवासी किमैरन लोगों से मेल कर लिया। ये लोग स्पेनवालों के कठोर व्यवहारों से बड़े ही दुखी थे और उनका सर्वनाश चाहते थे। एक दिन उन्होंने ड्रेक को संवाद दिया कि स्पेनवाले नौंबर डिडिश्रौस में बहुत सा सोना भेज रहे हैं। यह ख़बर पाते ही ड्रेक ने थोड़े से अँगरेज़ों और किमैरनों को लेकर प्रस्थान किया और रास्ते में ही हमला करना चाहा। मार्ग दुर्गम था, लेकिन देश के प्राकृतिक सौन्दर्य ने उसके मन को मुग्ध कर लिया और इससे रास्ते की कठिनाई का ध्यान न हुआ। चलते चलते ड्रेक ऐसे ऊँचे स्थान पर आ पहुँचा जहाँ

से वह पूर्व के एटलांटिक महासागर को और पश्चिम के प्रशान्त महासागर को देख सकता था।

प्रशान्त महासागर को देखते ही, बल्बोवा के सदृश ड्रेक के हृदय में जगत् की परिक्रमा करने की प्रबल इच्छा हुई, पर जिस लूट के कार्य के लिए वह गया था वह पूरा न हो पाया। स्पेनवालों को उसके आगमन का पता लग चुका था। फिर भी उसने कई बार हमला करने की चेष्टा की। अन्त में कुछ धन उसके हाथ लग गया। सन् १५७२ ई० में वह घर वापस गया। जब अँगरेज़ों ने सुना कि ड्रेक ने इस प्रकार स्पेनवालों से बदला लिया है तो वे बहुत सन्तुष्ट हुए। लेकिन रानी एलिज़ाबेथ ने उसके काम को पसन्द न किया।

सन् १५७७ ई० में ड्रेक एक बार फिर रवाना हुआ और रानी एलिज़ाबेथ ने भी अबकी बार स्पेनवालों से असन्तुष्ट होकर उसे कुछ रुपया दिया। १३ दिसंबर सन् १५७७ ई० में ड्रेक मोरक्को की ओर गया और जब वह वहाँ पहुँचा, उसको बहुत ही सुन्दर जल-वायु का अनुभव हुआ। जाड़े की ऋतु थी। वर्षा हो रही थी, पेड़ हरे-भरे थे। अंगूर, ज़ैतून, नारङ्गी और शहतूत चारों ओर दिखाई पड़ते थे; लेकिन अधिक विलम्ब न कर ये लोग केप वर्ड द्वीप-पुञ्ज में पहुँचे। यहाँ इन्होंने मदिरा से लदे हुए एक जहाज़ को पकड़ा। फिर ये ज्यों ज्यों दक्षिण-पश्चिम में चलने लगे, हवा भी अल्प वेग से बहती हुई मालूम होने लगी और अन्त में एक ऐसे स्थान

में आ पहुँचे जहाँ हवा बिल्कुल रुक गई और जहाज़ बहुत धीरे-धीरे चलने लगा।

तुमने शान्त कटिबन्ध का नाम सुना होगा। इसको विषुवत रेखा के पास डालड्रूम भी कहते हैं। यहाँ हवा बहुत धीरे-धीरे चलती है। ड्रेक के जहाज़ डालड्रूम में आ पहुँचे थे और हवा न चलने के कारण उस समय के, पाल लगे हुए, जहाज़ वेग से नहीं चल सकते थे। जब ये लोग और आगे बढ़े तो इनको फिर वृष्टि और आँधी का सामना करना पड़ा।

आकाश में बिजली चमक रही थी और लगातार मेघ-गर्जन होता था। ५४ दिन के पश्चात् ये लोग ब्रेज़ील के तट पर पहुँचे। जब इन्होंने देखा कि यहाँ के निवासी इनके नाश के लिए तैयार बैठे हैं तो और दक्षिण की ओर चले और प्लेट नदी के मुहाने पर पहुँचे। यहाँ इनको स्वच्छ पानी मिला पर ये लोग आगे बढ़ते ही गये और सेंट जुलियन बन्दरगाह में पहुँचे। यहाँ समुद्र में सील मछलियाँ बहुत दिखाई पड़ीं और पैटेगोनिया के पठार में दैत्याकार मनुष्य देख पड़े।

ये लोग अँगरेज़ों से बहुत बड़े थे। इनके शरीर पर कोई कपड़ा नहीं था। नाचते-कूदते ये लोग अपने देश की वस्तुएँ—जैसे एमू चिड़िया और उसके पर—लेकर परदेशियों के पास आये। इन्होंने उनको यह सब दे दिया।

परन्तु जब अँगरेज़ इनको कुछ देने लगे तो इन्होंने अपने हाथ से नहीं लिया किन्तु उनको भूमि पर रखने के लिए संकेत किया।

दो महीने तक सेंट जुलियन में रहकर ड्रेक कुल तीन जहाज़ों के साथ दक्षिणी अमेरिका के ध्रुव दक्षिण की ओर बढ़ा। यह जब मैगिलन जल-संयोजक में पहुँचा तब इसने देखा कि पश्चिमी राह बहुत टेढ़ी-मेढ़ी है और समुद्र भी कम गहरा नहीं है। यहाँ के किसी द्वीप में इनको बहुत से पक्षी मिले। इन पक्षियों को इन्होंने, मारकर खाने के लिए, जहाज़ में भर लिया। जब ये लोग प्रशान्त महासागर में पहुँचे तो इनका एक जहाज़ आँधी से डूब गया और दूसरा घर वापस गया।

ड्रेक एक ही जहाज़ के साथ उत्तर की ओर किनारे-किनारे चला और वालपरेज़ो पहुँचा। वहाँ सोने के माल से भरे हुए एक जहाज़ को उसने गिरफ़्तार कर लिया और वहाँ उतरकर लूटना आरम्भ किया। धन के लोभ से अँगरेज़ अब बार-बार जहाज़ से उतरने लगे। इस तरह बहुत सा माल उनके हाथ लगा। जब ये पेरू के किनारे पर पहुँचे तो इन्हें कुछ लामा (एक प्रकार के ऊँट) भी मिले। उन्हें इन लोगों ने खाने के लिए जहाज़ पर लाद लिया। लीमा में ड्रेक ने १२ जहाज़ लूटे। आगे चलकर एक और स्पेनी जहाज़ को लूटा जिसमें इसको बहुत सा सोना और चाँदी मिली। लूट का सामान इतना हो गया था कि स्पेनवाले इन अँगरेज़ों के पक्के शत्रु हो

गये थे और बहुत दिनों तक यहाँ ठहरना ड्रेक के लिए उचित न था। यह मैगिलन जल-संयोजक के रास्ते से भी नहीं लौट सकता था। यहाँ इसके शत्रु स्पेनवाले इसके लौटने की ही प्रतीक्षा में बैठे थे कि इसने प्रशान्त महासागर के पार करने की ठानी, और उत्तर की ओर अनुकूल हवा के लिए चल दिया। डेढ़ महीने चलने के बाद ड्रेक सानफ्रांसिस्को में पहुँचा।

अभी तक कोई यूरोप-निवासी यहाँ नहीं आया था। यहाँ के देशी लोगों ने इन अँगरेज़ों को देवता मानकर इनका प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। ड्रेक ने इस जगह का नाम नवीन ऐल्बियन रक्खा और एक खम्भा गाड़ दिया जिसमें अपने आगमन की तिथि और समय लिख दिया तथा यह भी सूचित कर दिया कि यह स्थान अब अँगरेज़ों का है। महारानी एलिज़ाबेथ का चित्र भी वहाँ रख दिया। यहाँ से ढाई महीने के पश्चात् ड्रेक फिलिपाइन द्वीप पहुँचा और वहाँ से मोरक्को के लिए चल दिया। यहाँ के एक द्वीप के राजा ने इसकी बड़ी आवभगत की और इसे चावल, चीनी, केला, लौंग और मुर्गियाँ भेंट में दीं। इन द्वीपों की शोभा अपूर्व थी। लेकिन ड्रेक को घर लौटना था इसलिए इस सौन्दर्य का उपभोग करने के लिए वह यहाँ अधिक दिन तक न रुक सका और द्वीप-पुञ्ज के दुर्गम मार्गों से होकर वह जावा द्वीप में गया। वहाँ से सीधे उत्तमाशा अन्तरीप की ओर चला, फिर उसको पार करते हुए सिअरालिओन में पहुँचा। यहाँ से प्लीमथ की ओर

चला और सन् १५८० ई० में तीन वर्ष के पश्चात् वह घर पहुँचा। रानी एलिज़ाबेथ बहुत सन्तुष्ट हुई। उसने इसको जहाज़ ही पर नाइट की उपाधि दी। सन् १५८५-८६ ई० में इसने खोज का काम नहीं किया, पर पश्चिमी द्वीप-समूह में जाकर कई द्वीप छीन लिये। सन् १५८७ ई० में इसने स्पेन में कैडी पर हमला किया और स्पेनवालों को कई बार युद्ध में परास्त किया।

तुमने स्पेनिश आर्मेडा (जहाज़ी बेड़ा) का नाम सुना होगा। इस युद्ध में सफलता पाना भी इसी का कार्य था। सन् १५८६ ई० में यह पार्लियामेंट का सदस्य चुना गया। फिर एक बार हाकिंस के साथ पश्चिमी द्वीपसमूह में गया और जहाज़ पर बीमार पड़ा। सन् १५६५ ई० में, नौंबर डिडिऑस के बन्दरगाह में, इसका देहान्त हो गया।

सर मार्टिन फ़्रोबिशर

जन्म---सन् १५३६ ई०; मृत्यु---सन् १५९४ ई०

उत्तरी-पच्छिमी राह से कैथे या चीन पहुँचने की कैबट की इच्छा पूरी न हो पाई थी। उसके बाद भी कुछ दिनों तक ऐसा कोई नाविक नहीं हुआ जो उस कार्य को पूरा करता। विलोबी और चैंसलर के बारे में तुम्हें याद होगा कि उत्तर-पूर्व की राह से भी वे कैथे नहीं पहुँच सके थे। इस देश में जाने की आशा अब अँगरेज़ों ने प्रायः त्याग ही दी थी, पर सन् १५७४ ई० में जब सर हंफ्रे गिलबर्ट की किताब छपी और उसने लोगों के दिल पर यह बात अच्छी तरह से बैठा दी कि कैथे में उत्तर-पश्चिम की राह से पहुँचना असम्भव नहीं है, तो इँगलैंड के कुछ सौदागरों ने मिलकर किसी ऐसे आदमी को भेजना चाहा जो इस कार्य्य को पूरा कर सके। सर मार्टिन फ़्रोबिशर तैयार हो गया।

यह एक अँगरेज़ नाविक था। इसका जन्म डॉनकैस्टर में हुआ था। बचपन से ही यह नौ-चालन के कार्य में लग गया था। तीन जहाज़ों के साथ सन् १५७६ ई० में डेप्टफ़ोर्ड से यह रवाना हुआ। ब्रिटेन के उत्तरी हिस्से को पार करते हुए आर्कनीज़ और शटलैंड द्वीप-पुञ्ज से होता हुआ यह सीधा

पश्चिम की ओर चला। एक मास के पश्चात् इसे ग्रीनलैंड दृष्टिगोचर हुआ। इस बर्फ़ से ढकी भूमि के पार उतरना असम्भव था; इसलिए यह, साथियों सहित, लैब्रेडर की ओर चला। समुद्र में वेगवती ठण्ढी धारा थी। बड़ी बड़ी सील और ह्वेल मछलियाँ दिखाई पड़ती थीं। पहाड़ के जैसे बर्फ़ के टुकड़े तैरते हुए दिखाई पड़ते थे। ये बर्फ़ के पहाड़ स्वाद में मीठे थे लेकिन समुद्र का पानी बहुत खारा था। कहीं कहीं बर्फ़ के ढोके टूटकर इतने वेग से गिरते थे कि उनके शब्द से कान बहरे हो जाते थे। ह्वेल मछलियाँ इतने भयङ्कर शब्द के साथ नाक से पानी का फ़व्वारा छोड़ती थीं कि यदि कोई जहाज़ सामने पड़ जाय तो बिना डूबे न बचे। कभी कभी तो जब वे पानी के ऊपर आती थीं तो दूर से छोटे-मोटे द्वीप सी प्रतीत होती थीं।

फ़्रोबिशर के जहाज़ कुछ दिनों में एक द्वीप के पास पहुँचे। यहाँ इनको किनारे पर थोड़े से मनुष्य दिखाई पड़े। ये लोग फ़्रोबिशर के जहाज़ देखने आये थे। ये तातारियों की तरह लम्बे थे; इनका रङ्ग भूरा, बाल काले, नाक चिपटी और चेहरा फैला हुआ था। ये सील मछली का चमड़ा पहने हुए थे। इनकी किश्तियाँ किनारे पर खड़ी थीं जो सील मछली के चमड़े से मढ़ी हुई थीं।

फ़्रोबिशर का दल लैब्रेडर में उतरना चाहता था, परन्तु जब बर्फ़ के ढोके टूटकर किनारे से समुद्र में गिरने लगे

तो वह जत्था वहाँ से वापस चला और बैफ़िनलैंड के निकट फ़्रोबिशर खाड़ी में पहुँचा। निकट की भूमि को एशिया समझकर ये लोग किनारे उतरे। वहाँ की ऊँची भूमि से इन्होंने समुद्र में कुछ काली काली वस्तुओं को तैरते देखा। जब वे निकट आईं तो देखा कि ये मछलियाँ नहीं, बल्कि चमड़े से मढ़ी हुई किश्तियाँ हैं। किश्ती पर से उतरने पर इन लोगों को घण्टी बजाकर और शीशे में अपना प्रतिबिम्ब दिखाकर आश्चर्यान्वित किया जाने लगा। जब इनका विश्वास हो गया तो अँगरेज़ों ने इनको यही घण्टियाँ और शीशे दे दिये। ये एस्किमो लोग थे। एस्किमो लोगों ने भी भालुओं और सील मछलियों के चमड़े दिये। फ़्रोबिशर ने इनमें से एक मनुष्य को पकड़कर इँगलैंड ले जाना चाहा। बहुत चालाकी से उसने एक को पकड़ लिया। पहले तो कोई पास नहीं आया लेकिन फ़्रोबिशर ने जहाज़ पर बैठे बैठे घण्टी बजाना आरम्भ किया और ज्यों ही एक एस्किमो छोटी सी किश्ती लेकर निकट आया, हाथ पकड़कर उसको खींच लिया। जब उस एस्किमो ने देखा कि वह क़ैद हो गया है तो मारे क्रोध के दाँतों से अपनी जीभ काटने लगा। पर फ़्रोबिशर ने उसको नहीं छोड़ा। तब जो चार-पाँच अँगरेज़ किनारे पर उतरे थे उनको इन एस्किमो लोगों ने पकड़कर न मालूम कहाँ छिपा दिया।

सन् १५७६ ई० में फ़्रोबिशर इस क़ैदी के साथ—भालू और सील मछली के चमड़े और एक काला पत्थर लेकर—

इँगलैंड पहुँचा। कैथे का रास्ता मिलने की ख़बर पाकर लोग बहुत सन्तुष्ट हुए। उस काले पत्थर की परीक्षा के पश्चात् जब उनको यह ज्ञात हुआ कि इसमें सोना है तो उनका लोभ बहुत बढ़ा। उन्होंने दुबारा फ्रोबिशर को सन् १५७७ ई० में वहाँ भेजा। अबकी बार भी यह आस-पास के दो-एक स्थानों का पता लगाकर, कुछ काले पत्थरों को इकट्ठा करके, इँगलैंड की ओर चल दिया। रानी एलिज़ाबेथ बहुत सन्तुष्ट हुई। तीसरी बार सन् १५७८ ई० में फ्रोबिशर रवाना हुआ। जब फ्रोबिशर खाड़ी के पास आया तब आँधी इतने वेग से चली कि फ्रोबिशर का जहाज़ हडसन जल-संयोजक में जा पहुँचा और कैथे जाने का ठीक मार्ग मिल गया, लेकिन मौसमी आँधी के कारण ये लोग घर को लौट चले। वहाँ पहुँचते ही इनको ज्ञात हुआ कि वे काले पत्थर किसी काम के नहीं हैं। अब इनको चौथी बार कौन भेजता? सोना मिलने की भी कोई आशा नहीं थी और चीन पहुँचने के कार्य में भी उन्नति न हुई थी। सन् १५८५ में फ्रोबिशर ने ड्रेक के साथ पश्चिमी द्वीपसमूह में कार्य किया और सन् १५८८ ई० में वह स्पेनिश आर्मेडा के युद्ध में भी था। सन् १५९४ में ब्रेस्ट का दुर्ग लेते समय वह मारा गया।

सर वाल्टर रैले

जन्म—सन् १५३२ ई०; मृत्यु—सन १६१८ ई०

फ्रॉबिशर की मृत्यु के पश्चात् जॉन डेविस ने उत्तरी अमेरिका में डेविस जल-संयोजक का पता लगाया। वह ग्रीनलेंड और जीलैंड होते हुए ७३° उत्तरी अक्षांश तक पहुँचा। इसके पश्चात् उसने उत्तरी-पश्चिमी राह का पता लगाना छोड़ दिया। पर कई बार वह पूर्वी द्वीप-समूह में गया और जापानी जल-दस्युओं ने मलका के निकट उसे मार डाला।

हेनरी हडसन ने इसके पश्चात् हडसन जल-संयोजक का पता लगाया। फिर उत्तरी अमेरिका के पूर्वी किनारे को छूते हुए वह ४०° उत्तरी अक्षांश में पहुँचा। यहाँ जो नदी गिरती है उसका नाम उसने हडसन नदी रक्खा। सन् १६१० ई० में वह हडसन की खाड़ी में पहुँचा। खाने का सामान चुक जाने पर उसको विवश होकर लौटना पड़ा। रास्ते में साथियों ने उसको और उसके पुत्र को छोटी सी किश्ती में उतार दिया। कोई नहीं जानता कि फिर उनका क्या हुआ।

विलियम बेफ़िन ने सन् १६१२ ई० में इस कार्य को उठाया पर किसी देश का पता नहीं लगा। सन् १६१६ ई० में उसने बैफ़िन की खाड़ी का पता लगाया। फिर उत्तर-पश्चिम की राह

का ढूँढ़ा जाना बन्द हो गया। सन् १६२१ ई० में ऑरमज़ के पास पुर्तगालियों से लड़ते लड़ते वह मर गया।

सन् १५७८ ई० में अनुमति-पत्र लेकर सर हंफ्री गिलबर्ट ने न्यूफ़ाउंडलैंड को अँगरेज़ों के अधिकार में कर लिया। इस द्वीप के पास उत्तरी ठण्ढी धारा में, जिसको लैब्रेडर धारा कहते हैं, दक्षिणी मेक्सिको की गर्म धारा आ मिलती है और कुहरा छा जाता है। जहाज़ों के लिए यह स्थान निरापद नहीं है। यहाँ कॉड मछलियाँ पाई जाती हैं। न्यूफ़ाउंडलैंड में चाँदी और अन्य खनिज पदार्थ मिलने की बहुत आशा थी। थोड़ी सी चाँदी इसको मिली। खाने-पीने के लिए यहाँ के लोगों ने चपातियाँ और मदिरा दी। फल, घास और तारपीन का तेल बहुत मिला। किन्तु गिलबर्ट के नाविक आपे से बाहर हो रहे थे और अत्याचार भी अधिक हो गया था।

इसने सन् १५७४ ई० में चीन जाने के रास्ते के बारे में लिखा था और लोगों को उत्तेजित किया था। दूसरी बार जब यह अमेरिका से लौट रहा था, इसका जहाज़ डूब गया। इसके सौतेले भाई सर वाल्टर रेले ने न्यूफ़ाउंडलैंड लेते समय इसकी बड़ी सहायता की थी।

सर वाल्टर रेले का जन्म डिवेनशायर के हेयास नगर में सन् १५३२ ई० में हुआ था। वरजीनिया में इसने आदमियों की एक टुकड़ी भेजी और कुआँरी रानी एलिज़ाबेथ के नाम से इसको प्रसिद्ध किया। रेले ने इसी देश से पहले अपने

देश में तम्बाकू और आलू पहुँचाया। इसने एल्डोरेडो के विषय में यह सुना था कि वह सोने-चाँदी से भरा पड़ा है। वह अब गायना के नाम से विख्यात है। इसी देश की खोज में रेले निकला। ओरीनोको नदी में इसने छोटी छोटी किश्तियाँ डाल दीं। जहाज़ों को पीछे छोड़कर यह अग्रसर हुआ। वर्षा खूब हो रही थी। नदी में बाढ़ आ गई थी। उस देश के लोगों ने पेड़ों पर अपने झोंपड़े इसलिए बना रक्खे थे कि बाढ़ में बह न जायँ। यहाँ गर्मी भी बहुत है। रेले के साथी घबरा गये थे। लेकिन जब ये किनारे पर उतरे तो देश बहुत सुन्दर प्रतीत हुआ। पेड़ फले हुए थे और रङ्गीन चिड़ियाँ इधर-उधर उड़ रही थीं। यहाँ के निवासी पुर्तगालवालों से बहुत घबराते थे। जब उन्होंने सुना कि ये पुर्तगाल के रहनेवाले नहीं हैं तो उन्होंने इनको मदिरा, फल, चिड़ियाँ, कछुओं के अंडे और रोटियाँ ला दीं। अब गायना पर्वत का भी पता लग गया। बड़े भयङ्कर झरने और ऊँची ऊँची घास दिखाई पड़ी। हिरन चर रहे थे। पेड़ों पर बैठकर पक्षी सुरीली बोलियाँ बोल रहे थे। इस स्थान को यहाँ पर लैनोस कहते हैं। दक्षिणी अमेरिका में यह बड़ी अच्छी जगह है। लैनोस से बड़े बड़े पत्थर के टुकड़े साथ लेकर रेले घर की ओर वापस चला। रास्ते में इसको ट्रिनिडाड द्वीप मिला।

सन् १६०३ ई० में रेले से जेम्स प्रथम का झगड़ा हो गया। उसने रेले को क़ैद कर लिया। पर सन् १६१७ ई० में

यह छोड़ दिया गया; क्योंकि राजा को इसने गायना से सोना और चांदी ला देने की आशा दिलाई थी। राजा ने स्पेनवालों से न लड़ने के लिए भी बार बार इससे कह दिया था। पर रेले ने वहाँ जाते ही स्पेनवालों से झगड़ा कर लिया। यह समाचार पाकर राजा जेम्स ने स्पेनवालों को सन्तुष्ट करने के लिए इसे मरवा डाला।

रेले ऊँचा पूरा वीर पुरुष था, पर था बड़ा घमण्डी। कहा जाता है कि बुद्धिमान्, चरित्रवान् और उत्साही पुरुषों में यह अद्वितीय था। रानी एलिज़ाबेथ का यह प्रिय सदस्य था। एक बार रानी वर्षा के पश्चात् टहलने के लिए घर से निकली तो रास्ते में उसको कुछ कीचड़ मिला। रानी एलिज़ाबेथ अपने जूते को बचाने के लिए वहीं खड़ी हो गई। रेले रानी से मिलने के लिए आया हुआ था। उसने बिना सोच-विचार के अपना नया कोट वहाँ फैला दिया और रानी पार हो गई। रेले के इस व्यवहार पर वह बहुत सन्तुष्ट हुई और तभी से मृत्यु-पर्यन्त रेले रानी के प्रिय पात्रों में गिना जाने लगा।

जेक्स कर्टियर

जन्म—सन् १४९४ ई०; मृत्यु—सन् १५५५ ई०

जिस प्रकार अँगरेज़ों की ओर से कैबट, फ़्रोबिशर, डेविस, हडसन आदि नाविक उत्तरी अमेरिका के उत्तरी भाग की खोज में लगे हुए थे उसी प्रकार फ़्रांसीसी भी अपने नाविकों को इसी कार्य के लिए भेजते रहे। फ़्रांस के राजा फ़्रांसिस प्रथम ने जेक्स कर्टियर को सन् १५३४ ई० में भेजा। जेक्स का जन्म सेंट मोलो में हुआ था। वह न्यूफ़ाउंडलैंड के निकट पहुँचा। यहाँ पर उसने एक द्वीप में बहुत सी चिड़ियाँ देखीं। इन चिड़ियों की खोज में सफ़ेद भालू भी समुद्र में तैर रहे थे। बस, इन्हीं चिड़ियों और भालुओं का शिकार फ़्रांसीसियों ने किया। फिर न्यूफ़ाउंडलैंड के उत्तरी किनारे से होते हुए जेक्स ने बेली जल-संयोजक का पता लगाया। इसके बाद वह प्रिंस एडवर्ड द्वीप तक पहुँचा।

यह द्वीप बहुत ही सुन्दर था। पेड़ों के पत्ते हर रङ्ग के थे। सुगन्ध चारों ओर फैल रही थी और पेड़ों में अनेक प्रकार के बेर लगे हुए थे। गर्मी बहुत ही अधिक थी। ऋतु अच्छी न थी। इसलिए कर्टियर फिर उत्तरी राह से

फ़्रांस लौट गया। चलने के पूर्व न्यू ब्रंसविक से इसने यहाँ के दो मनुष्यों को साथ ले लिया।

सन् १५३५ ई० में कर्टियर फिर लैब्रेडर के किनारे आया और अब की बार न्यू ब्रंसविक के उन दोनों आदमियों ने, जिनको कर्टियर फ़्रांस में ले गया था, रास्ता बताने में बहुत सहायता दी। इन्होंने कर्टियर को सेंट लारेंस की राह से देश के अन्दर जाने को कहा। कर्टियर चल पड़ा। रास्ते में उसने बहुत से अद्भुत जल-जन्तुओं को देखा। इनको अँगरेज़ी में वालरस कहते हैं। ऐसे जानवर प्राय: ठण्ढे समुद्र में ही पाये जाते हैं।

चलते चलते कर्टियर अपने साथियों के साथ सेंट लारेंस नदी के मुहाने पर आ गया। उसने समझा कि एशिया जाने का रास्ता मिल गया है। परन्तु ज्यों ज्यों वह अन्दर की ओर बढ़ता गया, उसको पानी मीठा मालूम होता गया। अभी तक लोग यही जानते थे कि एशिया और योरप के बीच में खारा समुद्र है, मीठा नहीं।

अब वह क्वेबेक पहुँचा और वहाँ अपने बड़े बड़े जहाज़ों को छोड़कर छोटी छोटी नावों में मांट्रील गया। मांट्रील मांटरूीयल शब्द से बना है। 'मांटरूीयल' का अर्थ राज-पर्वत है। यह छोटा सा गाँव पहाड़ पर बसा था। यहाँ से फिर ये लोग लौटे और रास्ते में, सर्दी के कारण, बहुत से बीमार पड़े और मर गये। अबकी बार ये लोग बहुत से

अमेरिका-निवासियों को अपने साथ ले आये और न्यूफ़ाउंडलैंड के दक्षिणी रास्ते से गये। इस रास्ते को कैबट जल-संयोजक कहते हैं। कैबट ने ही पहले इसका पता लगाया था।

सन् १५४१ ई० में फिर अन्तिम बार कर्टियर ने सेंट लारेंस नदी में पैर रक्खा। यहाँ केबेक का क़िला बनवाया परन्तु मांट्रील के पश्चिम की ओर इतने झरने थे कि आगे बढ़ना असम्भव हो गया। अतः यह सन् १५४२ ई० में फ़्रांस वापस आ गया। सन् १५५५ ई० में इसका देहान्त हो गया।

सेमुयेल डी शैंप्लेन

जन्म—लगभग सन् १५७० ई०; मृत्यु—सन् १६३५ ई०

सेमुयेल डी शैंप्लेन एक फ़्रांसीसी युवक था। इसको मेक्सिको और पश्चिमी द्वीपसमूह का ज्ञान था। इधर कर्टियर ने फ़्रांसीसियों के कनाडा पर दख़ल करने का काम पूरा नहीं किया था और जब सन् १५९५ ई० में इसने स्पेनवालों को जल-युद्ध में परास्त किया तो सन् १६०३ ई० में शैंप्लेन को फ़्रांसीसी सरकार ने इस कार्य को पूरा करने के लिए भेजा। पर मांट्रील के आगे जलप्रपातों के होने के कारण यह भी आगे न बढ़ सका और घर लौट गया। सन् १६०४ ई० में यह दुबारा चला। फिर नोवास्कोशिया के दक्षिण होते हुए फ़ण्डी की खाड़ी में पहुँचा और सेंट जोन नगर का, जो न्यू ब्रंसविक में है, पता लगाया। वहाँ से फिर यह दक्षिण के देशों का पता लगाने लगा।

सन् १६०८ ई० में शैंप्लेन सेंट लारेन्स नदी की ओर चला। इसने क्वेबेक नगर का किला अच्छी तरह बन-वाया। अमेरिका की दो जातियों में लड़ाई छिड़ी हुई थी। इसने सेंट लारेंस के उत्तरी किनारे के लोगों का साथ दिया; यह दक्षिणी किनारे के विपक्ष में लड़ने चला। इसी समय

इसने शैंप्लेन झील का पता लगाया। इसके पश्चात् शैंप्लेन कनाडा में आता रहा। इसने चॉडियर जल-प्रपात और ओटावा का पता लगाया। सन् १६१५ ई० में इसने जार्जियन की खाड़ी और ह्यूरन झील का पता लगाया। फिर वहां से ह्यूरन के निकट के कुछ अमेरिकावालों के साथ इसने ओंटा-रियो झील को पार किया। इन मनुष्यों के विपक्षी दल ने इसको घायल किया और यह क्वेबेक लौट गया।

योरपवालों में शैंप्लेन ही पहला मनुष्य था जिसने अमे-रिका के अन्दर झीलों, देशों और मनुष्यों का पता लगाया। सन् १६२० ई० में यह कनाडा का गवर्नर नियुक्त किया गया। यहाँ इसने अपनी जल-यात्राओं के विषय में एक प्रबन्ध लिखा। सन् १६३५ ई० में इसका देहान्त हो गया।



मंगो पार्क

जन्म—सन् १७७१ ई०; मृत्यु—सन् १८०६ ई०

अफ्रिका के समुद्री किनारे की भूमि का पता तो योरप-वालों ने लगा ही लिया था पर अन्दर जाने का साहस बहुत थोड़े लोगों ने किया था। जैसे विषुवत रेखा के पार किये जाने के पहले समुद्र के विषय में बहुत अद्भुत और भयङ्कर कहानियाँ रची गई थीं, वैसे ही इस देश के भीतरी हिस्से के बारे में भी बड़ी भयङ्कर कथा सुनने में आती थी। वास्तव में ये क़िस्से ठीक भी थे। देश या तो उजाड़ खण्डों से भरा है या जङ्गलों से। यहाँ पशु भी बहुत भयङ्कर हैं और असभ्य नर-भक्षकों की अधिकता है जिनके मारे लोग भीतरी हिस्से तक नहीं पहुँच सके थे। इसी से अब तक अफ्रिका को अज्ञात देश कहते थे। जो दो-एक साहसी पुरुष देश के अन्दर गये भी उनका फिर पता न चला। ऐसे देश में खोज का काम होना और सही सही हाल जानना बड़ा ही कठिन है।

स्कॉटलैंड का रहनेवाला एक डाक्टर बड़ा साहसी था। यह पूर्वी द्वीप-समूह में भी हो आया था। इसने अफ्रिका के अन्दर के देशों का पता लगाना चाहा। इसका नाम मंगो पार्क था। इसका जन्म सेलकर्क के निकट फ़ाउल-

शील्स में हुआ था। इसने एडिनबरा विश्वविद्यालय में शिक्षा पाई थी।

सन् १७९५ ई० में यह अफ़्रिका के पश्चिमी किनारे की ओर, नाइजर नदी का पता लगाने की इच्छा से, चला। अभी तक लोगों का यही विश्वास था कि नाइजर नदी पश्चिम की ओर बहती है। नक़शे में देखने से तुम्हें ज्ञात हो जायगा कि खोज करनेवालों ने इस लोगों का कितना बड़ा भ्रम दूर किया है।

घर से चलने के एक महीना पश्चात् मंगो पार्क गैंबिया नदी के मुहाने पर पहुँचा। यह नदी गहरी थी। कीचड़ भी इसमें बहुत था। इसके किनारे पेड़ खड़े थे जिनकी जड़ें कहीं तो पानी में डूबी थीं और कहीं निकली थीं। इनमें मगर और हिपापोटैमस भरे पड़े थे। ऐसी नदी में मंगो पार्क ने अपनी किश्ती डाली। पूर्व की ओर चलते चलते यह पिसैनिया में पहुँचा। यह अँगरेज़ों के माल इकट्ठा करने की जगह थी। यहाँ सोने और हाथीदाँत का ढेर लगा था। बिक्री के लिए यहाँ हबशी भी इकट्ठा किये जाते थे। इस देश की भाषा सीखने के लिए यह यहाँ रुक गया, पर बीमार पड़ गया। बरसात का मौसम आ गया था। यहाँ दिन में बहुत ही गरमी पड़ती है। जब धूल से भरी हुई आँधी चलने लगती है तो दम घुटने लगता है। बारिश इतनी तेज़ी से होती है मानों आकाश टूटा पड़ता हो। मेघ-गर्जन भी

भयानक है। रात्रि के समय मेंढक बोलने लगते हैं। लोमड़ियाँ और लकड़बग्घे इतने ज़ोर से चिल्लाते हैं कि किसी नये आदमी के लिए यहाँ थोड़ी देर भी ठहरना भयावह होता है।

इस प्रान्त में बरसात गर्मियों में होती है और जाड़े में सूखा पड़ता है। दो ही मौसम होते हैं। मंगो पार्क सूखे के दिनों में अच्छा हो गया और पिसैनिया से रवाना हुआ। इसने दो हबशियों को अपने साथ ले लिया। सामान लादने के लिए दो घोड़े और दो खच्चर भी इसने ले लिये। कुछ दूर चलकर इसके साथ छः और हबशी आ मिले। ये लोग मदीना आ पहुँचे। नक़्शे में देखो, यह अरब का मदीना नहीं है। मदीना के राजा ने इसको आगे बढ़ने की राय न दी, लेकिन इसने जब आग्रह किया तो उसने एक पथ-प्रदर्शक साथ कर दिया। ये लोग कुजार पहुँचे। यहाँ इन्होंने देशी लोगों को कुश्ती लड़ते देखा। मंगो पार्क के साथी अब आगे बढ़ना नहीं चाहते थे, इसलिए एक पत्थर पर मन्त्र फूँककर उस पर थूकते थे और फिर उसी पत्थर को मार्ग की रक्षा के लिए अपने सामने फेंक देते थे। तीन बार ऐसा करने पर उनके हृदय में इतना विश्वास हो जाता था कि वे नाचते-कूदते आगे बढ़ते थे। अब इनके सामने फेलेमी नदी पड़ी। यह सेनीगाल नदी की सहायक नदी है। नदी-पार उस प्रदेश की राजधानी थी। मंगो पार्क वहाँ के राजा से जा मिला और उसे अपनी छतरी और कोट दे दिया। राजा

सन्तुष्ट हो गया। मंगो पार्क से रानियों ने भी बहुत से प्रश्न किये। इसका गोरा रङ्ग देखकर रानियों को बड़ा अचम्भा हुआ। उन्होंने कहा कि इसकी मा ने जन्म के पश्चात् इसको दूध में डुबो दिया था, इसी से यह गोरा है।

यहाँ से छुट्टी पाकर मंगो पार्क आगे बढ़ा। अब उसे सेनीगाल नदी दिखाई पड़ी। यह नदी इतनी गहरी न थी जितनी कि गैंबिया। जल स्वच्छ था। नदी मन्द गति से रेतीली और पथरीली भूमि पर बहती थी। आसपास की भूमि ऊँची थी और उस पर हरी हरी घास थी। इसके निकट ही खेती होती थी। इस नदी को पार करके मंगो पार्क कैसन राज्य में पहुँचा। यहाँ के राजा ने मंगो पार्क की आवभगत की और आगे बढ़ने में इसकी सहायता की। कार्टा पहुँचने पर इस गोरे आदमी को देखने के लिए बार बार लोग आने लगे। यहाँ से यह मूर लोगों की राजधानी गारा नगर में पहुँचा। यह नगर बहुत विस्तृत था। यहाँ के मकान मिट्टी और पत्थर के थे। राजा ने इसको पथ-प्रदर्शक देना अङ्गीकार कर लिया। अब इसके साथी आगे बढ़ने को तैयार न हुए। एक साथी के सिवा और सब भाग गये। इन दोनों के साथ मंगो पार्क उत्तर-पूर्व की ओर चला। रास्ते में मूर लोगों ने इसको बहुत सताया और इसका बहुत सा सामान छीन लिया। अन्त में बिनाउन में यह पकड़ लिया गया। मूर लोगों ने इसको

अपने राजा के पास पहुँचाया। राजा ख़ेमा गाड़े हुए एक खुले मैदान में पड़ा था। इधर-उधर बकरियाँ चर रही थीं और बहुत से ऊँट तथा ढोर भी पास ही खड़े थे। यहां पहुँचते ही इसकी तलाशी ली गई और मारे प्रश्नों के इसको पागल कर दिया गया। यह जानने के लिए कि यह भी—उन्हीं की तरह—मनुष्य है, इसकी उँगलियां तक गिनी गईं। यह क़ैद कर लिया गया। एक सूअर के साथ रहने के लिए इसको जगह मिली। राजा ने इसका क़ुतुबनुमा ले लिया और जब देखा कि उसकी सुई, जिधर भी रखिए, एक ही ओर घूमती है तो उसे जादू का समझकर लौटा दिया।

बालको, क्या तुम भी इसी राजा की नाईं क़ुतुबनुमा को देखकर घबराओगे? क्या तुम बता सकते हो कि यह सुई एक ही ओर क्यों घूमती है। भला बताओ तो वह कौन दिशा है जिधर यह घूमती है। मंगो पार्क यथेष्ट अपमानित हो चुका था। पर जब यह बीमार पड़ा और समूम हवा रेत के पहाड़ बनाने लगी तो बहुत घबराया। उसने वहां से भागना चाहा। मूर लोगों ने अपने शत्रुओं से लड़ाई छोड़ दी थी। अपने शत्रुओं की, आगे बढ़ने की, ख़बर पाकर वे भी उत्तर की ओर बढ़े। यहाँ मंगो पार्क से रानी की भेंट हुई। मूर लोगों ने इसके साथ अच्छा बर्ताव किया। पर वे लोग रेगिस्तान के निकट आ पहुँचे थे; और रेगिस्तान का कष्ट आरम्भ हो गया था। लोगों को जल अच्छी तरह से

नहीं मिलता था। यदि कहीं एक-आध कुआँ मिल भी जाता तो वहाँ इतनी भीड़ लगी रहती थी कि आपस में मार-पीट हो जाती थी। मंगो पार्क को विधर्मी समझकर वे लोग कुएँ के पास जाने ही न देते थे। जानवरों को भी बहुत कम पानी मिलता था और कभी कभी तो बेचारे गीली मिट्टी (कीचड़) को ही खाकर प्यास बुझाते थे।

मंगो पार्क को अब जर्रा जाने की अनुमति मिली। जब यह चला तो इतने वेग से आँधी चली कि इसके कान और नाक में धूल ही धूल भर गई। इसका दम घुटने लगा। जानवर घबराकर इधर-उधर दौड़ने लगे। मंगो को डर लगता था कि वह इनके पैरों के नीचे दबकर कहीं मर न जाय। इस प्रान्त में बुरक़े का व्यवहार कदाचित् इसी कारण होता है।

जर्रा में पहुँचते ही ज्ञात हुआ कि शत्रु निकट हैं। मारे डर के मूर लोग, मंगो पार्क को साथ लेकर, वापस लौटना चाहते थे। परन्तु एक दिन यह बहुत सबेरे भाग निकला। चलते चलते प्यास के मारे मरने लगा। उस समय बड़े वेग से पानी बरसने लगा। अपने कपड़ों में इस जल को इकट्ठा कर इसने पी लिया। बहुत कष्ट के बाद यह सेगो नगर में पहुँचा। इतने दुःख के पश्चात् इसको बहुत ही आनन्द हुआ क्योंकि अब इसे ज्ञात हो गया कि वह नाइजर के किनारे पहुँच गया है। मंगो लिखता है कि नाइजर टेम्स के बराबर चौड़ी है और धीरे धीरे पूर्व की ओर बहती है। सेगो नगर

बहुत ही समृद्धिशाली है। अफ्रिका के बीच में ऐसे नगर का होना उस समय बड़े आश्चर्य की बात थी।

सेगो पहुँचने के एक दिन बाद ही यह नदी के मुहाने की ओर चल दिया और सिला में पहुंचा। नदी बढ़ी हुई थी। यह वहाँ से लौट पड़ा। इसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। रास्ते में जङ्गली जानवर भी अधिक थे, फिर हबशियों का भी डर था। इसलिए ऐसी अवस्था में नदी के मुहाने तक पहुँचना असम्भव समझकर यह एक कारवां के साथ पिसैनिया गया। फिर एक जहाज़ पर बैठकर पश्चिमी द्वीप-समूह गया और वहाँ से २½ वर्ष के बाद इँगलिस्तान पहुँचा।

सन् १८०५ ई० में मंगो पार्क दुबारा गैंबिया की ओर चला। अबकी बार बहुत से सिपाहियों को साथ लेकर यह नाइजर नदी के पास पहुँचा। यहाँ इसने एक किश्ती कर ली। आठ आदमियों के साथ उसे खेता हुआ यह मुहाने की ओर चला। टिंबकटू के बाज़ार में इसने अपनी वस्तुओं का आदान-प्रदान किया। वहाँ से कुछ दूर पूर्व की ओर खेते हुए यह दक्षिण की ओर चला और बोसा में पहुँचा। यहाँ के निवासियों ने इस पर हमला किया और लगभग सन् १८०६ ई० में इसको मार डाला।

मंगो के अधूरे कार्य को लैंडर ने, सन् १८३० ई० में, पूरा किया। उसको नाइजर का मुहाना मिल गया।

जेम्स ब्रूस

जन्म-स्थान—किनायर्ड, सन् १७३० ई०; मृत्यु—सन् १७९४ ई०

जेम्स ब्रूस स्कॉटलैंड का रहनेवाला था। खोज के कार्य में बचपन से ही इसको बहुत उत्साह था। पर इसे अवसर बहुत कम मिलता था। यह सन् १७६३ ई० में एलजीयर्स में अँगरेज़ सरकार की ओर से कौंसल (व्यापारी दूत) नियुक्त किया गया। यहाँ इसको अफ्रिका के भीतरी देश के बारे में बहुत से क़िस्से ज्ञात हुए। इसने अरबी भाषा भी सीख ली। सन् १७६८ ई० में यह क़ाहिरा नगर में गया। वहाँ का बादशाह आकाश-विज्ञान और वैद्यक सम्बन्धी इसके गुणों को सुनकर बहुत सन्तुष्ट हुआ। उसने नील नदी की खोज करने में इसकी यथासाध्य सहायता की। ३० गज़ लम्बी एक किश्ती लेकर ब्रूस नदी के उद्गम की ओर रवाना हुआ। हवा विपरीत दिशा में चल रही थी। बड़े बड़े पाल काम नहीं देते थे। नदी के आस-पास भूमि हरी-भरी थी। पिरैमिड भी दृष्टिगोचर होते थे। अस्वान तक चलकर इसको जल-प्रपात मिले। इनको पार कर किश्ती को आगे बढ़ाना बहुत ही कठिन था। इसलिए इसने केने तक वापस लौट

जाना ठीक समझा। यहाँ इसने किश्ती को छोड़ दिया। फिर कुछ कारवाँ के साथ यह लाल सागर की ओर चल दिया। थोड़े से घोड़ों, ऊँटों और हबशियों को इसने साथ ले लिया था। यहाँ से लाल सागर के रास्ते तक के वर्णन में यह लिखता है—
"इसमें कोई भी प्राणी दृष्टिगोचर नहीं होता। पेड़-पौधे का तो नाम तक नहीं है। पीने के लिए खारा पानी भी नहीं मिलता। ऐसे जानवर भी नहीं मिलते जो प्रायः रेगिस्तानों में पाये जाते हैं। आकाश में चिड़ियाँ भी नहीं दिखाई पड़तीं।"

ऐसे मार्ग से चलना ठण्डे देश के रहनेवाले के लिए बड़ा कठिन कार्य था। पर धैर्य के साथ ब्रूस बढ़ता ही गया। अब इसको रेत के पहाड़ दिखाई पड़ने लगे। ज्यों ज्यों यह पूर्व की ओर चलता गया त्यों त्यों सङ्गमरमर के पहाड़ दिखाई पड़ने लगे। लाल सागर के किनारे सीयर नगर दिखाई दिया। यहाँ से किश्ती पर बैठकर ब्रूस सिनाई प्रायद्वीप गया, वहाँ से जद्दा पहुँचा। यहाँ एक महीना रहकर बाबुलमंदब की ओर चला और वहाँ से घूमकर एरीट्रिया के पूर्वी तट पर मसावा नगर में पहुँचा। इसने काहिरा के राजा की चिट्ठियाँ यहाँ के राजा को दीं। अब इसकी बड़ी आवभगत हुई। एबीसीनिया के राजा के लड़के बीमार पड़े थे; उसने मसावा के राजा को चिट्ठी लिखी कि उस अँगरेज़ डाक्टर को भेज दीजिए जो आपके यहाँ था। कुछ साथियों को लेकर ब्रूस एबीसीनिया की ओर चला। रास्ते में

एक नदी मिली, जिसमें लाल मिट्टी मिली हुई थी। बरसात के पश्चात् इतना पानी हो गया था कि नदी ने अपने किनारों को डुबा दिया था। अब यह ऐडोवा नगर में पहुँचा। यहाँ के राजा ने अतिथि की बड़ी आवभगत की। यहाँ विचित्रता यह थी कि चाँदी के रुपयों के स्थान पर कपड़ों के रुपये काम में लाये जाते थे। यह उस समय के लिए नई बात थी। पर जिन्होंने इस समय के कागज़ के रुपयों को देखा है उन्हें आश्चर्य नहीं होता। यहाँ की मुख्य उपज गेहूँ, जौ और मटर है। एबीसीनिया की राजधानी गोंडर नगर है। इसी नगर की ओर ब्रूस चला। रास्ते में दोनों ओर झाड़ियाँ थीं। अक्सर झाड़ियों में से लकड़बग्घे और सिंह निकलते थे। बड़ी बड़ी चींटियाँ भी थीं। मार्ग में काले आदमी प्रायः इसको सताते थे। १५ फ़रवरी सन् १७७० ई० में यह गोंडर पहुँचा। एबीसीनिया का राजा राज्य में नहीं था, पर रानी ने अपने बच्चे इसको दिखाये। इन बच्चों को चेचक निकली थी। कमरे के दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द कर दी गई थीं। ब्रूस ने दरवाज़ों और खिड़कियों को खुलवा दिया और सफ़ाई के लिए ज़ोर दिया। अब राजकुमार अच्छे होने लगे। राजा रानी इस पर बहुत प्रसन्न हुए।

इस देश के विषय में ब्रूस लिखता है—वर्षा सितंबर से अक्टूबर तक नहीं होती। फिर नवंबर तक थोड़ी-बहुत बरसात होती रहती है। इन दिनों लोग बीमार

पड़ते हैं। वर्षा बन्द होने पर बीमारी भी बन्द हो जाती है। फिर लोग इधर-उधर के कार्य करने लगते हैं।

थोड़े दिनों में ब्रूस गोंडर से रवाना हुआ। इसे नील नदी की नीली शाखा दिखाई पड़ी। उसके किनारे किनारे चलने पर इसको ऊँची भूमि मिली। वस्तुतः यह एक पर्वत था, जहाँ से नील नदी एक छोटी सी धारा में बहती दिखाई पड़ी। यही नील नदी का उद्गम था।

यहां से ब्रूस गोंडर की ओर चला। गोंडर के घरेलू झगड़े सुलझाने में इसे लगभग एक मास लग गया। २६ दिसंबर सन् १७७१ ई० में यह सिनार की ओर चला। फिर नील नदी के किनारे किनारे अस्वान पहुँचा। अन्त में, जनवरी सन् १७७३ ई० में, काहिरा में आया। यहां से फ्रांस और इटली होते हुए सन् १७७४ ई० में यह स्काटलैंड जा पहुँचा। सन् १७९४ ई० में सीढ़ी से पैर फिसलने के कारण यह गिर पड़ा और मर गया।

जॉन हैनिंग स्पीक

जन्म — सन् १८२७ ई०; मृत्यु — सन् १८६४ ई०

नील नदी की नीली शाखा का पता लगने के पश्चात् लोगों को श्वेत नील का पता लगाने की इच्छा हुई। अभी लोगों ने देश के अन्दर एक बड़ी झील के विषय में सुना था और इसी की खोज में सन् १८५६ ई० में दो अँगरेज़ ज़ंज़ीबार द्वीप से देश के भीतर की ओर चले। उनको टैंगनिका झील का पता चला। परन्तु लोगों ने जब इसको देखा तो इसके उत्तरी भाग से कोई नदी नहीं निकली हुई थी। इसलिए समझ लिया कि श्वेत नील की उत्पत्ति इस झील से नहीं है। जॉन हैनिंग स्पीक इसी खोज के काम में लगा था। उसने इस कार्य को पूरा करना चाहा। वह उत्तर दिशा में बढ़ा और विक्टोरिया न्याञ्ज़ा के निकट पहुँचा। न्याञ्ज़ा के मानी झील के हैं। यहाँ से फिर पूर्वी समुद्र-तट की ओर वह अपने साथी से मिलने चला और वहाँ से घर गया। स्पीक का सन्देह अभी दूर नहीं हुआ था। इसलिए वह दूसरी बार जेम्स ग्रैंड के साथ फिर ज़ंज़ीबार द्वीप में पहुँचा। अब की बार इसके साथ बहुत से देशी सिपाही थे। खच्चर, गदहे और बकरियाँ साथ ले ली गईं। परन्तु बहुत से

लोग बीमार पड़ गये, कुछ भाग गये और कुछ मर गये। स्पीक भी बीमारी से बहुत दुबला हो गया। फिर भी चलते चलते वे लोग करेज में पहुँचे। यहां के राजा ने उनके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया। सन् १८६२ ई० में स्पीक सुन्दर यूगांडा प्रदेश में पहुँचा। यहां का जलवायु बहुत अच्छा है। केला अधिक उत्पन्न होता है। यहां मकानों में सफ़ाई अधिक है। यहाँ के निवासी अपने राजा को सबसे अधिक शक्तिशाली मानते थे।

अभी तक नील नदी का पता नहीं चला था और स्पीक इसी खोज में विक्टोरिया न्याञ्ज़ा के उत्तरी किनारे को देखता देखता आगे बढ़ गया। वहां से वह दक्षिण की ओर लौटा। यहां उसने रिपन प्रपात के पानी को १२० फ़ीट की ऊँचाई से गिरते देखा। यह बहुत ही सुन्दर दृश्य था। मछलियां, मगर और दरियाई घोड़े (हिपोपाटैमस) इधर-उधर पानी के बाहर सिर निकाले फिर रहे थे। मछली मारनेवाले कँटिया लिये हुए किनारे पर बैठे थे। छोटी छोटी नावें इधर-उधर फिर रही थीं। यह दृश्य देखकर वे लोग नील नदी के मुहाने की ओर नावों में बैठकर चले, परन्तु वहाँ के राजा ने उनको आगे न बढ़ने दिया। तब नावें छोड़कर वे लोग नदी से बहुत दूर पश्चिम की ओर चले गये। पर विक्टोरिया न्याञ्ज़ा के बीच की झील कियोगा का पता न चला। एलबर्ट न्याञ्ज़ा के विषय में उन लोगों से यह सुना कि वह बहुत दूर नहीं है, पर वहाँ पहुँच

न सके। इसलिए वे लोग नदी के मुहाने की ओर चले और गोंडोकारो में पहुँचे। यहां पर स्पीक एक और साथी सेमुयेल बेकर और उसकी स्त्री से जा मिला। फिर यहाँ से काहिरा होते हुए सन् १८६३ ई० में वह इँगलैंड पहुँचा। बन्दूक की गोली लगने से सन् १८६४ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

सेमुयेल बेकर का क़िस्सा यह था कि यह काहिरा में सन् १८६१ ई० में अपनी पत्नी के साथ, स्पीक से मिलने के लिए, चला और थोड़ी सी अरबी भाषा सीखकर बर्बर तक पहुँचा। वहाँ से एटबरा नदी में होते हुए एबीसीनिया में गया और नील की नीली शाखा के रास्ते खारतूम पहुँचा। फिर श्वेत नील के रास्ते गोंडोकारो में स्पीक से मिला। इसने स्पीक से *एलबर्ट न्याञ्ज़ा* का नाम सुनकर वहाँ जाने की ठान ली। मार्ग दुर्गम था। इसके साथियों ने भी इसको धोखा दिया। इस प्रान्त के राजा ने भी पहले-पहल ठीक रास्ता नहीं बताया। अन्त में बेकर से एक बन्दूक लेकर उसने राह बता दी। सन् १८६४ ई० में बेकर ने एलबर्ट झील का पता लगाया और मर्चिसन प्रपात तक नाव खेते हुए पहुँचा। अब यह वापस चला और मुसीबतें झेलकर गोंडोकारो पहुँचा। फिर वहाँ से खारतूम और सौकिन के रास्ते, जो लाल सागर के किनारे पर स्थित है, सन् १८६५ ई० में यह विलायत पहुँचा।

डेविड लिविंग्स्टन

जन्म-स्थान—ब्लैनटायर, सन् १८१३ ई०;
मृत्यु-स्थान—लाला, सन् १८७३ ई०

नील लिविंग्स्टन



डेविड लिविंग्स्टन छोटी उम्र में एक रुई के कारखाने में काम किया करता था। इसने इतना धन इकट्ठा कर लिया था कि डाक्टरी पढ़ने के लिए यह ग्लासगो चला गया। फिर सन् १८४० ई० में, डाक्टरी पास कर लेने पर, लंदन मिशनरी सोसाइटी ने इसको अपना कर्मचारी नियुक्त कर लिया। इसे चीन जाने की प्रबल इच्छा थी, पर उसी समय अँगरेज़ों और चीनियों में लड़ाई छिड़ गई थी इसलिए यह वहाँ न जा सका। २० नवंबर सन् १८४० में यह अफ्रिका की ओर चल दिया और अलगोआ की खाड़ी में उतरा। यहाँ इसने रॉबर्ट गुफ़ैट की लड़की से विवाह कर लिया। इस सम्बन्ध के कारण डेविड लिविंग्स्टन को देशों में जाने में बहुत सहायता मिली।

रॉबर्ट गुफ़ेट ईसाई पादरी था। यह धर्म-प्रचार के लिए यहां आया था। इसने देशी लोगों के साथ रहने से उनकी भाषा और आचार-व्यवहार भी सीख लिया था। खोज के कार्य में इसने लिविंग्स्टन की बहुत सहायता की। पर लिविंग्स्टन बेचुआना लोगों की भाषा सीखने की इच्छा से बहुत दिनों तक उत्तमाशा अन्तरीप में रहा। फिर उन लोगों को अपने वश में करके आप ईसाई धर्म के प्रचार-कार्य में लगा रहा। यह जब भाषा सीख चुका तो ये लोग इसका बहुत आदर करने लगे। सन १८४९ ई० में रवाना होकर इसने नगामी झील का पता लगाया। मैबोत्सा में इसको एक सिंह ने घायल कर दिया। पर यह उत्तर की ओर बढ़ता ही गया। यहां के शासक ने सबको मिलकर रहने की जगह दे दी। लिविंग्स्टन यहाँ हर प्रकार के काम करने लगा। कभी तो यह लड़कों को पढ़ाता, कभी व्याख्यान देता और कभी दवा बाँटता था।

यहाँ के डच निवासियों को बुअर कहते हैं। उन लोगों ने लिविंग्स्टन को बहुत दुःख दिया। सन् १८४९ ई० में यह अपने साथ कुछ मनुष्यों को लेकर कलहारी रेगिस्तान की ओर चला। कहा जाता था कि कलहारी में एक झील है। लिविंग्स्टन महीने भर तक उसे ढूँढ़ता रहा, पर इसको एक बूँद भी पानी न मिला। अन्त में यह नगामी झील के पास पहुँचा और वहां से वापस आया।

सन् १८५१ ई० में यह मकोलोलो लोगों के राजा के पास गया। यह देश बहुत ही उपजाऊ था। यहाँ बहुत नदियाँ भी थीं। एक वर्ष से कुछ ही अधिक दिनों तक यह अफ्रिका के पार करने में लगा रहा और बहुत कष्ट उठाने के पश्चात् सेंट पाल में पहुँचा। नकशे में देखो सेंट पाल कहाँ है। इसी स्थान से लिविंग्स्टन ने ज़ेम्बिज़ी नदी को देखा। यहाँ से यह फिर अपनी स्त्री को एक नगर में पहुँचाने गया। उसे पहुँचा-कर मकोलोलो लोगों के पास वापस आया। फिर इनमें से कुछ को लेकर लोएंडा नगर की ओर चला। लेकिन रास्ते में बीमार पड़ गया; पर चलता ही रहा। इसने रास्ते में शत्रुओं को समझाया। मैजिक लालटेन की तस्वीरें दिखाकर यह उन्हें भुलाता रहा। देशी राजाओं ने मार्ग में कर मांगा तो लिविंग्स्टन ने अपना कोट, बटन, छुरा और दुशाला आदि दे दिया। खाना भी चुक गया था और लोग बहुत थक गये थे। अन्त में बहुत समझाने पर लोग समुद्र के किनारे आ पहुँचे। मकोलोलो लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने समुद्र को देखते ही सोचा कि पृथ्वी का अन्त आ गया है। लिविंग्स्टन का स्वास्थ्य बिगड़ गया था। यह चाहता तो वहीं से घर लौट जाता। पर मकोलोलो लोगों से यह कह चुका था कि उनको वापस घर पहुँचावेगा इसलिए उनको घर ले जाने की इसने ठान ली। लिनिएंटी नगर मकोलोलो लोगों का मुख्य नगर था। वहाँ पर यह

वापस आया और कुछ दिन ठहरकर यहाँ से पूर्वी समुद्र-तट की ओर चला। इसको पहुँचाने के लिए मक्कोलोलो लोगों के राजा सेकिटुयेने ज़ेंबिज़ी नदी तक आया। फिर इसने एक जल-प्रपात देखा, जिसका नाम विक्टोरिया प्रपात रक्खा। यहाँ के लोग इसको शोंगवे कहते थे और अब मोसिआटुनिया कहते हैं। इस जल-प्रपात के अति निकट से भी यह नहीं कहा जा सकता था कि जल-धारा किधर को है। आस-पास चारों ओर जल के कणों से कुहरा सा छा जाता है, मानों भाप के खम्भे खड़े हों। बहुत सावधानी से देखने पर ज्ञात हुआ कि नदी २८०० फ़ीट चौड़ी है। नीचे गिरते ही वह १५ या २० गज़ के एक तङ्ग रास्ते से बहने लगती है। अब नदी के रास्ते ये लोग आगे बढ़े और किलीमैनी पहुँचे। सन् १८५७ ई० में लिविंग्स्टन इँगलैंड गया। वहाँ पर यह पूर्वी अफ़्रिका का कौंसल बना दिया गया।

दो वर्ष पश्चात् लिविंग्स्टन, कुछ मनुष्यों और एक जहाज़ के साथ, किलीमैनी में आया। यहाँ एक छोटे जहाज़ पर बैठकर इसने ज़ेंबिज़ी के नीचे के हिस्से को देखा और शायर नदी की भी परीक्षा की। इसी समय शिरवा झील का भी पता लगा। कुछ दिनों के पश्चात् न्यासा झील को देखा। इधर पुर्तगालवाले लिविंग्स्टन की खोजों से व्याकुल हो गये थे। उन्होंने ब्रिटिश राजा को यह सन्देश भेजा कि लिविंग्स्टन दक्षिणी अफ़्रिका में बहुत अत्याचार करता है। इस पर

लिविंग्स्टन इँगलैंड वापस बुला लिया गया। सन् १८६५ ई० में यह फिर अफ़्रिका की ओर चला। अब की बार इसने न्यासा की उत्तरी भूमि का और नील नदी के उद्गम का पता लगाने की ठान ली थी। इसके बहुत से साथी भाग गये, पर यह आगे बढ़ता ही गया और मोएरो झील तथा बंगेलो झील का पता लगा लिया।

उत्तर की ओर चलकर लिविंग्स्टन उजीजी पहुँचा। अब यह बहुत दुर्बल हो गया था। एक बार फिर यह कांगो नदी की शाखा लोआलबा नदी की ओर चला और सन् १८७१ ई० में इस धारा के निकट पहुँच गया। यहाँ पर हबशी बेचे जाते और मोल लिये जाते थे। जब यह उजीजी वापस आया तब इसकी सम्पूर्ण भोज्य-सामग्री चुक गई थी। पर सौभाग्य से हेनरी मार्टन स्टेनली (इसके बारे में तुम अगले क़िस्से में पढ़ोगे) कुछ खाद्य पदार्थ के साथ आ गया। इससे लिविंग्स्टन के प्राण में प्राण आये, पर दोनों में कुछ अनबन हो गई। इससे वह लिविंग्स्टन को अकेला छोड़कर पूर्वी समुद्र-तट पर आ पहुँचा। स्टैनली और लिविंग्स्टन ने अच्छी तरह से इस बात की जाँच कर ली थी कि टैंगनिका के उत्तरी किनारे से नील नदी ही निकलती है। स्टैनली के चले जाने के बाद लिविंग्स्टन ने अकेले ही बंगेला की ओर यात्रा की। ८ महीने के पश्चात् यह बंगेला के दक्षिणी किनारे इलाला नगर में पहुँचा। इस समय यह बहुत थक गया था। १ मई

सन् १८७३ ई० में इसकी मृत्यु हो गई। इसके देशी भाथियों ने इसके मृत शरीर को आठ महीने तक ले चलकर समुद्र-किनारे पर पहुँचाया, जहाँ से वह विलायत भेज दिया गया। वेस्ट मिनिस्टर के गिर्जे में बड़ी धूमधाम के साथ इसका शव गाड़ दिया गया।

हेनरी मार्टन स्टैनली

जन्म—सन् १८४० ई०; मृत्यु—सन् १९०४ ई०

हेनरी मार्टन स्टैनली का असली नाम जॉन रालैंड है। वह बहुत ही निर्धन था। डेनबिग के निकट उसका जन्म हुआ था। १३ वर्ष की अवस्था तक सेंट आसफ़ के दरिद्राश्रम में उसको शिक्षा मिली। फिर इस आश्रम को छोड़कर एक वर्ष तक उसने शिक्षक का काम किया। इसके पश्चात् एक जहाज़ में नौकर होकर वह न्यू आरलियंस पहुँचा। यहाँ के एक सौदागर का वह कृपा-पात्र हो गया। इस सौदागर का नाम स्टैनली था। उस सौदागर के कोई लड़का न था, इससे उसने रालैंड को गोद ले लिया। लेकिन स्टैनली न तो अधिक दिनों तक जीवित रहा और न इस लड़के के नाम कुछ लिख ही पाया। इससे स्टैनली के मर जाने पर रालैंड को कुछ न मिला। गोद लेनेवाले पिता के नाम से ही वह प्रसिद्ध रहा।

अब हेनरी को सेना में नौकरी करनी पड़ी। वह एक छोटा अफ़सर हो गया। नौकरी छोड़कर वह तुर्किस्तान चला गया। वहाँ से फिर अमेरिका पहुँचा। अमेरिका में

वापस आने पर वह 'न्यूयार्क हेरल्ड' समाचार-पत्र का संवाददाता नियुक्त हुआ।

सन् १८६९ ई० में वह लिविंग्स्टन की खोज में भेजा गया। यह तुम पीछे पढ़ ही चुके हो। सन् १८७२ ई० में लिविंग्स्टन का पता लगाकर वह इँगलिस्तान लौट गया। वहाँ उसने अपने अफ़्रिका-दर्शन की अद्भुत कहानियाँ सुनाईं। महारानी विक्टोरिया ने सन्तुष्ट होकर उसको एक सोने की सुँघनीदानी दी। रायल ज्योगराफ़िकल सोसाइटी ने भी उसको एक स्वर्ण-पदक दिया। 'डेली टेलीग्राफ' और 'न्यूयार्क हेरल्ड' के सम्पादकों ने उसको तीन वर्ष के बाद, सन् १८७४ ई० में, लिविंग्स्टन के अधूरे काम को पूरा करने के लिए भेजा।

हेनरी मार्टन स्टैनली को यह पता लगाना था कि विक्टोरिया न्याञ्ज़ा और टैंगनिका झील में कोई सम्बन्ध है या नहीं। तीन अँगरेज़ों के साथ रवाना होकर वह ज़ंज़ीबार में पहुँचा। उसने ४० फ़ीट लम्बी किश्ती अपने साथ ले ली। इसके ८ टुकड़े किये जा सकते थे और इन टुकड़ों को पीठ पर लादकर भी ले जा सकते थे। ज़ंज़ीबार में ३०० देशी आदमियों को साथ लेकर वह रवाना हुआ; पर रास्ते में इनमें से कुछ बीमार पड़ गये, कुछ मर गये, कुछ भाग गये और कुछ को देशी लोगों ने मार डाला। लगभग १०० मनुष्यों के साथ वह यूगोगो नगर से उत्तर-पश्चिम की ओर

चल दिया। वे लोग एक नवीन, सुन्दर और विस्तृत देश में पहुँचे। घास के ऐसे मैदान दिखाई पड़े जिनमें पेड़ों का नाम न था। गाय, बैल, भेड़ और बकरियां चरती दिखाई पड़ती थीं। यह प्रदेश विक्टोरिया न्याञ्ज़ा के दक्षिण में है। क्या तुम बता सकते हो कि इस प्रान्त में पेड़ क्यों न थे। क्या एशिया में भी कोई ऐसा स्थान है? अन्त में चलते चलते स्टैनली के एक साथी ने विक्टोरिया न्याञ्ज़ा को देखा। स्पीक की खाड़ी को पार करके स्टैनली विक्टोरिया न्याञ्ज़ा में अपनी किश्ती लेकर पहुँचा। यहाँ उसने बहुत से दरियाई घोड़े देखे। तेज़ आँधी चल रही थी। बिजली चमक रही थी। स्टैनली के साथी घबरा उठे। रिपन जल-प्रपात को पार करता हुआ वह विक्टोरिया न्याञ्ज़ा में पहुँचा और वहाँ से यूगांडा आया। यूगांडा के राजा ने स्टैनली की बड़ी आवभगत की और उससे बहुत से प्रश्न किये। अब वह वापस चला। पर उसका एक अँगरेज़ साथी मर गया। स्वयं स्टैनली भी बीमार हो गया।

यूगांडा का राजा मुसलमान नहीं होना चाहता था पर अँगरेज़ों को इतना चाहता था कि उनका धर्म स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत हो गया। उसने स्टैनली की सहायता करना स्वीकार कर लिया। यूगांडा से पश्चिम ओर चलकर स्टैनली ने एलबर्ट न्याञ्ज़ा और एडवर्ड न्याञ्ज़ा का पता लगाया। इसके पश्चात् वह उजीजी गया। वहाँ से उसने किश्ती में तमाम झील का चक्कर काटा। उसने अब अच्छी तरह से पता लगा लिया कि

विक्टोरिया न्याञ्ज़ा के साथ टैंगनिका का कोई सम्बन्ध नहीं है। स्टैनली को पश्चिम की ओर चलने पर लुआलेबा नदी दृष्टिगोचर हुई। लुआलेबा के रास्ते चलते चलते वह नियांग्वे पहुँचा। यहाँ उसको एक अरबी मिला। इसने अपने २०० मनुष्यों के साथ सहायता करने का वचन दिया।

स्टैनली अब घने वनों में से होता हुआ चला। इन वनों में रहनेवाले मनुष्य बहुत ही छोटे क़द के थे। ऊँचाई में ये प्रायः गज़ भर के थे। इनका सिर बहुत बड़ा और दाढ़ी बहुत लम्बी थी। ये छोटी छोटी झोपड़ियों में रहते थे। झोपड़ियाँ केले के पत्तों की बनी थीं। उनके निकट दो-एक बकरियाँ भी बँधी हुई थीं। जङ्गलों में बन्दर बहुत थे। हिंस्र जन्तुओं में चीते इतने अधिक थे कि थोड़ी थोड़ी दूर चलने के पश्चात् ही दो-एक अवश्य दिखाई पड़ते थे। साँप असंख्य थे। धूप अच्छी तरह नीचे नहीं पहुँचती थी और पेड़ों से पानी की बूँदें टपकती थीं। नीची भूमि में कीचड़ ही कीचड़ था। कहीं कहीं रास्ते में पानी इतना इकट्ठा हो जाता था कि चलते समय दूसरों पर छिटककर पड़ता था। अब उन्होंने जलमार्ग से आगे बढ़ने के लिए नदी में किश्ती डाली। कुछ लोग तो किश्ती में बैठ गये और कुछ पैदल चले। रास्ते में देशी लोगों ने आक्रमण किया। बचते-बचाते वे लोग उस जल-प्रपात के निकट पहुँचे जो अब स्टैनली के नाम से प्रसिद्ध है। कुल सात झरने मिले

जिनको पार करने में २२ दिन लग गये। इन प्रपातों के बीच के द्वीपों में कुछ नर-भक्षक रहते थे। इन्होंने कई बार आक्रमण किया। आगे बढ़ते बढ़ते ये यात्री ऐसे स्थान में आ पहुँचे जहाँ नदी का पानी फैला हुआ था। इस स्थान का नाम स्टैनली पूल रक्खा गया। इसके आगे फिर झरने मिले और स्टैनली मनुष्यों पर किश्तियाँ लादकर आगे बढ़ा। इसका तीसरा अँगरेज़ साथी यहाँ मर गया। स्टैनली जब समुद्र से पाँचवें झरने के पास पहुँचा तो उसने नदी के मुहाने तक पैदल पहुँचना चाहा। अन्त में वह समुद्र के किनारे बोमा नगर में पहुँच गया। वास्तव में उसी ने कांगो नदी का ठीक ठीक पता लगाया था। इस समय से यहाँ की मुख्य वस्तुएँ—तेल, रबर और हाथी-दाँत इत्यादि—भिन्न भिन्न देशों में भेजी जाने लगीं।

सन् १८९५ से १९०० ई० तक हेनरी मार्टन स्टैनली पार्लियामेंट का सदस्य रहा। सन् १९०४ ई० में उसकी मृत्यु हुई। उसने अपनी जीवनी बड़ी ललित भाषा में लिखी है।

ऐबिल जैंसन टैस्मन

जन्म-स्थान—हर्न, लगभग सन् १६०० ई०;
मृत्यु—लगभग सन् १६४४ ई०

लोगों ने बहुत पुराने समय से यह सुना था कि ध्रुव दक्षिण में एक महाद्वीप है। पर उसके पता लगाने का विचार किसी को बहुत दिनों तक नहीं हुआ। पुर्तगाल-वालों और स्पेनवालों ने इधर-उधर के देशों का पता लगाया था; पर बहुत दक्षिण में वे भी नहीं गये थे। एशिया के पूर्वी द्वीप-समूह में ये लोग आये हुए थे और व्यापार का काम बढ़ा हुआ था। किन्तु स्पेनवालों ने निरे व्यापार के निमित्त खोज का काम नहीं किया था; उनकी इच्छा तो नये देशों को ढूँढ़ निकालने की थी। उन्होंने सन् १५९५ ई० में मारकिज़ा द्वीप और न्यू हेब्रडीज़ का पता लगाया। जो लोग वापस आये उन्होंने दक्षिणी महाद्वीप के बारे में बड़े अद्‌भुत क़िस्से सुनाये। इनमें से ही क्वीरास मुख्य था। यह सन् १६०५ ई० में टारेस के साथ दक्षिणी महाद्वीप का पता लगाने को रवाना हुआ। यह हेब्रडीज़ के बड़े द्वीप का पता लगाकर वहाँ से वापस लौट आया। इसने टारेस को दूसरी जगह छोड़ दिया था और उसी ने पहले पहल आस्ट्रे-

लिया और न्यू गिनी के बीच के रास्ते का पता लगाया। यह रास्ता अब उसी के नाम से प्रसिद्ध है। इसको टारेस जल-संयोजक कहते हैं।

पूर्वी द्वीप-समूह में अब पुर्तगालवालों की शक्ति बढ़ गई। इन्होंने डच लोगों के बहुत से द्वीप ले लिये और टेरा आस्ट्रेलिया या दक्षिणी महाद्वीप का पता लगाना आरम्भ किया। सन् १५९८ ई० में एक डच ने आस्ट्रेलिया के विषय में लिखा है—"यह सबसे दक्षिण की भूमि है। टारेस जल-संयोजक इसको न्यू गिनी से अलग करता है। यह इतना बड़ा है कि इसको पञ्चम महाद्वीप कह सकते हैं।" सन् १६०६ ई० से सन् १६३० ई० तक डच लोगों ने इसके बहुत से हिस्से का पता लगाया था—जैसे लिवीन अन्तरीप, हार्टाग द्वीप और कारपेंटरिया। पर इनमें सबसे प्रसिद्ध एबिल टैस्मन है। सन् १६४२ ई० में यह बटेविया भेजा गया। यहाँ से यह मारिशस की ओर चला और फिर वहां से दक्षिण-पूर्व की ओर चलते चलते टसमानिया में पहुँचा। इस द्वीप का नाम इसने वैनडीमेंसलैंड रक्खा। पर आजकल यह टसमानिया के नाम से ही प्रसिद्ध है। इसको यह पता नहीं था कि यह द्वीप है। यह पूर्व की ओर चला और न्यूज़ीलैंड के दक्षिणी द्वीप में पहुँचा, किन्तु वहाँ उतर न सका। वहां के मनुष्य बहुत ही जङ्गली थे। वहाँ से यह उत्तर-पूर्व की ओर चला और फ्रेंडली द्वीप-पुञ्ज में पहुँचा।

वहाँ से बटेविया वापस आया। सन् १६४४ ई० में यह फिर रवाना हुआ और इसने आस्ट्रेलिया के उत्तरी हिस्से का पता लगाया। यह टॉरेस जल-संयोजक को पार नहीं कर पाया था कि इसका देहान्त हो गया।

विलियम डैंपियर

जन्म—सन् १६५२ ई०; मृत्यु—लगभग सन १७१५ ई०

डैंपियर एक अँगरेज़ नाविक था। बचपन में ही बाप के मर जाने से यह नाविक का कार्य सीखने लगा। इसने सन् १६८८ ई० में आस्ट्रेलिया के उत्तरी-पश्चिमी हिस्से का पता लगाया। यह आस्ट्रेलिया के उत्तरी हिस्से के बारे में लिखता है—"यहाँ के निवासी बहुत ही दरिद्र हैं। समुद्र से थोड़ी ही दूर पर रेत की छोटी छोटी पहाड़ियां बनी हैं; और इनके पीछे देश के अन्दर जङ्गल हैं। कहीं पानी नहीं दिखाई पड़ता। कुआँ खोदने पर ही पानी मिलता है।" घर वापस जाकर इसने ऐसे अद्भुत किस्से सुनाये कि १६९९ ई० में यह एक जहाज़ लेकर दुबारा आस्ट्रेलिया की खोज के लिए भेजा गया। उत्त-माशा अन्तरीप के रास्ते से यह शार्क्स की खाड़ी में पहुँचा। यहां से उत्तर-पूर्व की ओर चला। यह भूमि रेतीली थी, पर यहाँ बहुत ही सुन्दर फूल खिले हुए थे। इसे बहुत दिनों तक पैदल चलना पड़ा। रास्ते में इसकी भोजन-सामग्री घट गई। बहुत दिनों के पश्चात् यह टाइमर द्वीप में पहुँचा। न्यू गिनी के उत्तरी हिस्से को देखता हुआ यह बटेविया गया। वहाँ से इँगलैंड लौट गया। रास्ते में इसका जहाज़ एसंशन द्वीप में डूब गया, परन्तु भाग्यवश यह बच गया। सन् १७१५ ई० के लगभग, इसी समुद्री यात्रा में, इसका देहान्त हुआ।

कप्तान कुक

जन्म—सन् १७२८ ई०; मृत्यु—सन् १७७९ ई०

कप्तान जेम्स कुक का जन्म यार्कशायर के मार्टो नगर में हुआ था। बचपन में इसने एक दूकान में नौकरी कर ली थी। वहाँ से यह ह्विटबी नगर में गया। वहाँ किसी जहाज़ के सौदागर के यहाँ नौकर हो गया। बचपन से ही इसकी इच्छा नाविक बनने की थी। सन् १७५५ ई० में जब अमेरिका में फ़्रांसीसियों से अँगरेज़ों की लड़ाई छिड़ी तो इसने भी फ़ौज में नाम लिखवा लिया। यहाँ इसने ऐसा अच्छा कार्य किया कि यह १७६४ ई० में अमेरिका के उत्तर-पूर्वी समुद्र-तट की देख-भाल के कार्य में नियुक्त किया गया।

सन् १७६८ ई० में आकाश-विज्ञान की उन्नति के लिए कुक ताहिति द्वीप में गया। यहाँ के राजा तुतहा ने इसका नाम तुत रखकर मैत्री कर ली। ताहिति लोग चोर थे इससे कुक को बड़ी सावधानी से रहना पड़ा। यहाँ से यह आगे बढ़ा और न्यूज़ीलैंड के पूर्वी तट पर ७ अक्टूबर सन् १७६९ ई० में, पहुँचा। जिस स्थान पर यह पहुँचा था वहाँ की दरिद्रता को देखकर इसने उसका नाम पावर्टी (दरिद्रता) की खाड़ी रक्खा।

यहाँ के मनुष्य माओरियों ने इसको उतरने न दिया। ये लोग वीर थे और शत्रुओं को मारकर खा जाते थे। इसी लिए उत्तर की ओर चलकर इसने किनारे किनारे उत्तरी तथा दक्षिणी द्वीप की परिक्रमा कर डाली। इन दोनों द्वीपों के मध्य के जल-संयोजक का नाम कुक का जल-संयोजक रक्खा। इस देश को इसने फलों की उपज के लिए अच्छा समझा। क्या तुम बता सकते हो कि यहां कौन कौन से फल उत्पन्न हो सकते हैं और क्यों। रूम सागर का जल-वायु कैसा होता है? न्यूज़ीलैंड के उत्तरी द्वीप का जल-वायु भी ऐसे ही फलों के उपयुक्त है।

दक्षिणी द्वीप की परिक्रमा के पश्चात् कुक आस्ट्रेलिया के हाऊ अन्तरीप की ओर चला। इसी के निकट पोर्ट जैक्सन बड़ा सुन्दर बन्दरगाह है। उसको छोड़कर यह उत्तर की ओर बढ़ा। ग्रेट बैरियर रीफ और आस्ट्रेलिया के समुद्र-तट के बीच की राह से यह धीरे धीरे बढ़ता गया। लेकिन ट्रिब्यूलेशन अन्तरीप के निकट, डूबे हुए मूंगों की नुकीली चोटियों से टकराकर, इसका जहाज़ डूबने लगा परन्तु इसने बड़ी सावधानी से उसे बचा लिया। यहां पर छोटे छोटे काले मनुष्य दिखाई पड़े। ये लोग नङ्ग-धड़ङ्ग थे और नाक के बीच में लकड़ी डाले रहते थे जिससे बहुत भयङ्कर प्रतीत होते थे, पर वास्तव में थे ये डरपोक।

अब गर्मी बढ़ने लगी और हर तरह के रेशम के कीड़े, मच्छड़ और चींटे दिखाई पड़े। जब तक जहाज़ की मरम्मत

होती रही तब तक कुक ने समुद्र-तट की भूमि के बारे में बहुत सी छान-बीन की। जहाँ पर जहाज़ टूटा था उस स्थान को ट्रिब्यूलेशन अन्तरीप कहते हैं। इस स्थान में कुक को बहुत सी गोभी और केले मिले। एक विचित्र पशु भी दृष्टिगोचर हुआ, जो फुदक फुदककर चलता था। इसकी मादा अपने बच्चे को पेट के थैले में बैठाकर भागती थी। वह बकरियों की भाँति घास खाती थी। इस पशु को "कंगारू" कहते हैं। यहाँ के निवासी दक्षिणी भाग के निवासियों की अपेक्षा दयालु होते हैं। ये शरीर को विचित्र रङ्ग से रँगते हैं। इनके बाल या तो खड़े होते हैं या घुँघराले।

जहाज़ की मरम्मत हो जाने पर ये लोग फिर चल पड़े। समुद्र तो यहाँ शान्त था पर चट्टानों से टकराकर जहाज़ के टूटने का भय भी बहुत था। चलते चलते ये लोग यार्क अन्तरीप में पहुँचे। यार्क अन्तरीप के एक द्वीप पर उतरकर कुक ने अँगरेज़ी झण्डा गाड़ दिया। यहाँ से यह जावा की ओर चल पड़ा और वहाँ से अपने जहाज़ की अच्छी तरह मरम्मत करवाकर सन् १७७१ ई० में उत्तमाशा अन्तरीप के मार्ग से इँगलैंड पहुँचा।

दूसरी बार यह सन् १७७२ ई० में रवाना हुआ। सन् १७७३ ई० में इसने दक्षिण ध्रुव-वृत्त को पार किया; फिर पूर्व की ओर चलते-चलते न्यू ज़ीलैंड पहुँचा। सर्दी यहाँ बहुत थी। समुद्र में बर्फ़ के बड़े बड़े ढोंके तैर रहे थे, जिनके चारों ओर कुहरा छाया हुआ था। कहीं कहीं जलस्तम्भ भी

बड़े भयानक रूप में दिखाई पड़े। सबको विश्वास हो गया कि दक्षिणी महाद्वीप का किनारा आ गया। इसी समय नारफ़ॉक द्वीप-समूह और न्यू कैलेडोनियन का पता चला। यहाँ से हॉर्न अन्तरीप के रास्ते यह लौट चला।

सन् १७७६ ई० में तीसरी बार यह रवाना हुआ और हवाई द्वीप में पहुँचा। यहाँ से यह पुनः उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट की ओर चला और तट से अपने जहाज़ को बहुत दूर न रखते हुए अलास्का की ओर रवाना हुआ। फिर बेरिङ्ग जल-संयोजक को इसने पार किया। पहले-पहल इसी ने प्रमाणित किया कि एशिया और अमेरिका भिन्न भिन्न महाद्वीप हैं। अधिक उत्तर की ओर जाना सम्भव न था, क्योंकि बर्फ़ पड़ रही थी और समुद्र जम रहा था। इससे इसको वापस आना पड़ा। सन् १७७८ ई० में यह हवाई द्वीप में पहुँचा। यहाँ इसकी बड़ी आवभगत हुई। पर जब इसने यहाँ के लोगों पर चोरी का दोष लगाया तो वे बहुत ही असन्तुष्ट हुए। कुक के आदमियों ने जब उन पर गोली चलाई तो वे कुक पर टूट पड़े और उन्होंने इसको सन् १७८९ ई० में मार डाला। इसकी विधवा स्त्री और बच्चे को सरकार ने पेंशन दी और रायल ज्यॉग्राफिकल सोसाइटी ने इसके स्मारक-स्वरूप, इसके नाम से, एक सुवर्ण-पदक रक्खा।

मैथ्यू फ़्लिंडर्स

जन्म—सन १७७४ ई०; मृत्यु—सन १८१४ ई०

मैथ्यू फ़्लिंडर्स अँगरेज़ नाविक था। इसका जन्म लिंकन्‌शायर में हुआ। सन् १७९५ ई० में फ़्लिंडर्स आस्ट्रेलिया गया। सन् १७९८ ई० में यह जार्ज बास के साथ हो लिया और टैस्मानियां की प्रदक्षिणा करने लगा। वहाँ से लौटकर इसने क्वींसलैंड के पता लगाने का कार्य आरम्भ किया। सन् १८०१ ई० में यह विलायत को लौट गया। वहाँ से यह फिर रवाना हुआ और उत्तमाशा अन्तरीप के रास्ते लाविन पहुँचा। वहाँ से पूर्व-दक्षिण की ओर चलकर किंग जार्जेस द्वीप में पहुँचा। यहाँ अपने जहाज़ की मरम्मत कराकर यह ग्रेट आस्ट्रेलियन बाइट के किनारे किनारे चला। कैटसट्राफी अन्तरीप के निकट इसके कुछ साथी डूब गये। यहाँ से यह स्पेंसर की खाड़ी में गया। इसने समझा कि आस्ट्रेलिया का पूर्वी किनारा यहाँ से आरम्भ होता है। पर इसके भीतर प्रवेश करने से पता लग गया कि यह तो खाड़ी है। किनारे पर उतरकर इसने फ़्लिंडर्स रेंज का पता लगाया। यहां से यह समुद्र में वापस आया। इस खाड़ी के मुहाने पर इसे एक द्वीप मिला। इस द्वीप में बहुत से कंगारू मिले। इन्हीं के नाम से इसने इस द्वीप को प्रसिद्ध कर दिया।

आगे बढ़कर इसको सेंट विंसेंट की खाड़ी मिली। किनारे पर बहुत से पेड़ दिखाई पड़े। ग्रेट आस्ट्रेलियन बाइट के उत्तर में पेड़ दिखाई नहीं पड़े थे। पूर्व की ओर चलकर इसको फ्रांसीसियों का एक जहाज़ मिला। फ्लिंडर्स ने इस खाड़ी का नाम एनकाउंटर रक्खा। यहाँ से पोर्ट फिलिप में पहुँचा और बास जल-संयोजक होते हुए पोर्ट जैक्सन में गया। सन् १८०२ ई० के जुलाई में यह उत्तर की ओर चला। फिर आस्ट्रेलिया और मूँगे के द्वीप के बीच की राह को देखकर ग्रेट बैरियर रीफ़ के पूर्व से टारेस जल-संयोजक में आया। यहाँ से यह कारपेंटरिया की खाड़ी में गया। यहाँ समुद्र छिछला था, भूमि बराबर थी। परन्तु स्थल पर उतरने का इसको साहस नहीं हुआ। इधर इसके जहाज़ की यह दशा थी कि आगे बढ़ना असम्भव था। फिर भी १०५ दिन की यात्रा के पश्चात् यह आर्नहेम अन्तरीप होता हुआ मेलविल की खाड़ी में पहुँचा और वहाँ से आर्नहेम की खाड़ी में गया। यहाँ पर फ्लिंडर्स को कुछ चीनी लोग मिले जो मछली पकड़ने आये थे।

फ्लिंडर्स अब इँगलैंड की ओर चल दिया। रास्ते में मारिशस द्वीप के निकट इसे फ्रांसीसियों ने क़ैद कर लिया। यह छः महीने तक वहीं रहा। इसने एक पुस्तक लिखी है। इसी पुस्तक में टेरा आस्ट्रेलिस का नाम बदलकर आस्ट्रेलिया रक्खा है। सन् १८१४ ई० में इसका देहान्त हो गया।

चार्ल्स स्टर्ट

जन्म—सन् १७९५ ई०; मृत्यु—सन् १८६९ ई०

आस्ट्रेलिया के भीतरी प्रदेश के पता लगाये जाने का काम २५ वर्ष तक बन्द रहा। अब अँगरेज़ प्रायः पूर्वी समुद्र-तट की भूमि में ही बसने लगे थे। अधिकतर देश का ठीक ठीक पता न लगने से इँगलैंड के निर्वासित क़ैदी ही यहाँ भेजे जाते थे। देश के भीतर प्रवेश न करने का यह भी कारण था कि तट-भूमि के पश्चिमी किनारे पर एक ऊँची पहाड़ी थी, जिसकी तलहटी में जङ्गल थे। इस पहाड़ी को पार करना असम्भव प्रतीत होता था। पर सन् १८१३ ई० में एक किसान ने पहाड़ी के शिखर से पश्चिमी उपजाऊ भूमि का पता लगाया। अब लोगों ने इस पहाड़ी को पार करना आरम्भ किया। सन् १८१५ ई...न
इवेंस ने लैचलन नदी का पता लगाया और बैथर्स्ट ...गया।
दृष्टिगोचर हुए। माक्वेरी नदी का भी पता ...बहती हैं तो
जब लोगों ने सुना कि नदियाँ पश्चिम की ... मिल जाने की
उनको इस महाद्वीप के पश्चिमी किनारे
आशा हुई।

...। खोज का कार्य सौंपा

सन् १८१७ ई० में आॅक्स... ...र में थोड़ा-बहुत पता लगाया
गया। उसने इन नदियों ...

और लौटते समय लिवरपूल के मैदान को भी देखा। कुछ दिनों में मरंबज़ी नदी का पता लगा। सन् १८२४ ई० में ह्यूम और हॉवेल ने मरे नदी का पता लगाया। आस्ट्रेलियन आल्पस् के बीच में एक दर्रा मिला, इससे वे पोर्ट फिलिप में जा पहुँचे। सन् १८२६ ई० में स्टर्ट ने भी यह देखना चाहा कि ये सब नदियाँ किसी बड़ी नदी में गिरती हैं या नहीं।

स्टर्ट का जन्म बङ्गाल में, २८ अप्रैल सन् १७६५ ई० में, हुआ था। इसने पल्टन में नाम लिखवाया और सन् १८२५ ई० में यह सिडनी में गया। फिर एक किश्ती लेकर, ७ आदमियों के साथ, यह सन् १८२८ ई० में देश के भीतर रवाना हुआ। २१ दिन के पश्चात यह मरंबज़ी नदी के पास पहुँचा। इसके पास अधिक भोज्य-सामग्री न थी और जो कुछ थी वह डूब गई। अन्त में यह मरे नदी में आया। यहां पर इसको बहुत से देशी आदमी दिखाई पड़े। वे इसको मारने की चेष्टा कर रहे थे, पर यह आगे बढ़ता ही रहा। अब इसकी किश्ती डारलिंग नदी में आ पहुँची। वहां से यह धीरे धीरे आगे बढ़ा और समुद्र निकट आता गया। अन्त में अलेक्ज़ेंड्रिया झील में यह जा पहुँचा। यह झील इतनी छिछली थी कि किश्ती का खेना असम्भव हो गया और इसको लौटना पड़ा। अब एक तो भोजन-सामग्री चुक गई थी, दूसरे देशी लोगों का उत्पात भी बढ़ गया था। फिर भी स्टर्ट धैर्य के साथ अपने साथियों को समझाकर आगे बढ़ता रहा।

छः महीने के पश्चात २००० मील का सफ़र तय करके स्टर्ट अपने साथियों समेत सिडनी पहुँचा।

स्टर्ट का स्वास्थ्य नष्ट हो चुका था, इसलिए सरकार ने इसको पेंशन देना स्वीकार किया। जब यह इँगलैंड पहुँचा तो बिलकुल अन्धा हो गया था। सन् १८६९ ई० में इसका देहान्त हो गया।

एडवर्ड जॉन आयर

जन्म—सन् १८१५ ई०; मृत्यु—सन १९०१ ई०

अँगरेज़ लोग आस्ट्रेलिया में एक स्थान के पश्चात् दूसरे स्थान पर अधिकार जमाते रहे। अब उनको ज्ञात हो गया था कि यदि भिन्न भिन्न देशों से यहां के मैदानों में भेड़, बकरी, गाय, बैल और घोड़े लाकर पाले जायँ तो उनके लिए यहाँ पर पर्याप्त घास है। उन्होंने कुछ ऐसे जानवरों को मँगवा भी लिया था और उन्हें पालने का काम यहाँ के क़ैदियों से लिया जाता था। पर अभी तक देश के बहुत से भागों का पता नहीं लगा था। इसलिए इन जानवरों के अधिकारियों की इच्छा हुई कि घास के और भी मैदानों का पता लगे तो अच्छा हो। इसी निमित्त, खोज के कार्य के लिए, कुछ मनुष्यों की आवश्यकता पड़ी। आयर ने इस कार्य को उठा लिया।

एडवर्ड जॉन आयर का जन्म यार्कशायर में हुआ था। सन् १८३३ ई० में यह आस्ट्रेलिया आया था। इसने पहले-पहल भेड़ों की रखवाली का काम करना आरम्भ किया और देशी लोगों की सी भाषा और आदतों को भी सीख लिया।

सन् १८४० ई० में आयर देश के अन्दर घुस पड़ा। रास्ते में इसको टारेंस झील मिली और आसपास भी ऐसी ही अनेक झीलें मिलीं। इसलिए इसने अपना मार्ग बदल दिया। दक्षिण की ओर चलते चलते यह आयर के प्रायद्वीप में पहुँचा; फिर वहाँ से पश्चिम की ओर आस्ट्रेलियन बाइट के किनारे किनारे चला। यह भूमि जलहीन थी। मीलों तक जलाशय दिखाई नहीं पड़ते थे। मार्ग भी बहुत लम्बा था। पहले-पहल यह फ़ाउलर की खाड़ी में पहुँचा। यद्यपि लोगों ने इसको आगे बढ़ने से रोका पर यह आगे बढ़ता ही गया। आंधी बहुत ही वेग से चलने लगी। रेत से आँखें अन्धी होने लगीं और छोटे छोटे कीड़ों ने इसको बहुत ही कष्ट दिया। इसके साथ जितना जल था वह अब समाप्त हो गया। मारे प्यास के यह घबरा उठा। इसके साथी काले आदमियों ने भी इसे धोखा दिया। उन्होंने आयर के अँगरेज़ साथी की हत्या करके उसका सामान लूट लिया। पर अब इसने आस्ट्रेलियन बाइट को पार कर लिया था और यह ऐसे प्रान्त में पहुँच गया था जहाँ जाड़े के दिनों में वर्षा हो रही थी। इसके पास कपड़े नहीं थे अतएव पानी से भीगकर यह ठिठुरने लगा। सौभाग्य-वश एक फ़्रांसीसी जहाज़ तट के निकट दिखाई दिया। उसी से इसे कुछ खाना और कपड़ा मिला। अब यह और पश्चिम की ओर चला। रास्ते में छोटी छोटी नदियाँ मिलीं। इस

समय इसके आनन्द की सीमा न थी। अभी तक तो इसको जल-कष्ट ही भोगना पड़ा था, अब इतना जल मिला कि यह घबरा उठा। नदियों को पार करता हुआ यह अलबनी में पहुँचा। एडीलेड से चले इसको एक वर्ष हो गया था। इस खोज से यद्यपि व्यापार में अधिक लाभ नहीं हुआ, पर इस प्रान्त का पता लग गया।

सन् १८६२ ई० में यह जमैका का गवर्नर बनाया गया। यहाँ के काले आदमियों से यह लड़ पड़ा, इससे वापस बुला लिया गया। सन् १९०१ ई० में इसकी मृत्यु हुई।



सर अलेक्ज़ेंडर मेकेंज़ी

जन्म—सन १७५५ ई०; मृत्यु—सन् १८२० ई०

अलेक्ज़ेंडर मेकेंज़ी का जन्म स्कॉटलैंड में हुआ था। यह १६ वर्ष की अवस्था में कनाडा में गया। वहाँ यह जानवरों के मुलायम बालों के इकट्ठा करने के काम में लगा रहा। इसने स्लेव नदी के रास्ते समुद्र में पहुँचना चाहा। इसलिए यह सन १७८६ ई० में थोड़े से देशी लोगों के साथ रवाना हुआ। नदी का मार्ग बहुत ही दुर्गम था। खाने का सामान भी थोड़ा ही मिलता था। मच्छर बहुत लगते थे। अन्त में बहुत कष्ट सहने के पश्चात् यह स्लेव झील में पहुँचा और वहाँ से मेकेंज़ी नदी में पहुँच गया।

मेकेंज़ी नदी के पश्चिम में रॉकी पहाड़ की बर्फ़ से ढकी हुई चोटियाँ दिखाई पड़ीं। यहाँ के निवासी निपट गँवार थे। उनको पानी गर्म करना भी न आता था। वे पेड़ की छाल में पानी भरकर पत्थर के टुकड़ों को आग में तपाकर उसी में डाल देते थे। बर्तनों का उपयोग तो वे लोग जानते ही न थे। उन्होंने अलास्का के रूसी व्यवसायियों के बारे में कहा कि उनके पर लगे हुए हैं, लेकिन वे उड़ते नहीं। इससे उनका आशय पालदार किश्तियों से था। उन्होंने यूकान

नदी का पता बताया। मकेंज़ी नदी मुहाने की ओर सकरी होती आती थी। उसके किनारे पर खाने को बेर मिलते थे। बेअर नदी के संगम स्थान पर कोयला जलता दिखाई पड़ा। मकेंज़ी लिखता है कि यहाँ नुकीले पेड़ दिखाई पड़ते हैं और उत्तर की ओर इनकी संख्या घटती जाती है। जब यह समुद्र से पहुँचा तो वह जमा हुआ जान हुआ और किश्ती आगे न बढ़ सकी। उसको फोर्ट चिपवैन से लौट जाना पड़ा।

मकेंज़ी इँगलिस्तान वापस गया। उसने अब यह ठान लिया था कि देश को पार कर पैसिफिक तट पर पहुँचे। इसलिए यह इँगलिस्तान से लौटकर पीस नदी के रास्ते से रॉकी पर्वत के समीप पहुँचा। अब यह साथियों समेत अपने असबाब को कन्धे पर लादे हुए रॉकी पहाड़ को पार करने लगा। वहाँ लम्बे नुकीले पेड़ दिखाई पड़े, बीवर जानवर भी दिखाई पड़ा। जब पहाड़ के दूसरी ओर ये लोग पहुँचे तो इनको फ्रेज़र नदी पश्चिम की ओर बहती मिली। इस नदी में कुछ दूर चलकर जब उन्होंने देखा कि यह बहुत वेग से बह रही है तो ये लोग किश्ती को छोड़कर पैदल ही सन् १७८३ ई० में समुद्र के किनारे पहुँचे। यहाँ अपने पहुँचने का चिह्न रखकर ये लोग लौट पड़े। एक महीने बाद मकेंज़ी फोर्ट चिपवैन में पहुँचा। यही सबसे पहला अँगरेज़ था जिसने इस महाद्वीप को पहली बार पार किया था।

सर जॉन फ्रैंकलिन

जन्म-सन् १७८६ ई०; मृत्यु-सन् १८४७ ई० के लगभग

फ्रैंकलिन का जन्म लिंकनशायर में हुआ था। इसने बचपन से ही नाविक का काम आरम्भ किया था और बहुत बड़ी बड़ी लड़ाइयों में नाम पैदा कर लिया था। सन् १८१६ ई० में यह उत्तरी अमेरिका के उत्तरी हिस्से का पता लगाने के लिए भेजा गया। अनेक दुःख भोगने के पश्चात् फ्रैंकलिन सन् १८२२ ई० में विलायत वापस गया। वहाँ इसने विवाह कर लिया। इसको कप्तान की पदवी भी मिली। इसने मेकेंज़ी के मुहाने से कापरमाइन नदी तक का पता लगाना चाहा और वहाँ से समुद्र के रास्ते उत्तर-पश्चिम की राह का भी पता लगाने की इच्छा की।

सन् १८३१ ई० में फ्रैंकलिन फिर रवाना हुआ। आस-पास की जगह बारहसिंगों से भरी हुई थी। नदियों में बर्फ़ के बड़े बड़े ढोके तैरते थे। किश्ती का खेना बहुत ही कठिन था। खाद्य-सामग्री घट गई थी। लोग काई और जूतों का चमड़ा खाते थे। कभी चिड़ियाँ मिल जाती थीं तो इनको बड़ी प्रसन्नता होती थी। ५००० मील चलने के पश्चात् ये लोग यार्क फ़ैक्टरी में आये। इस यात्रा के पश्चात् फ्रैंक-

लिन विलायत गया। इसकी स्त्री मर चुकी थी, इससे उसने दूसरा विवाह कर लिया।

सन् १८३६ ई० में यह वैन डीमनलैंड का गवर्नर नियुक्त हुआ। सन् १८४५ ई० में, ६० वर्ष की अवस्था में, उत्तरी अमेरिका के उत्तरी समुद्र का पता लगाने के लिए, यह तीसरी बार रवाना हुआ। इसने अपने साथ दो जहाज़ ले लिये और ३ वर्ष के लिए उपयुक्त खाद्य-सामग्री भी साथ ले ली। जाड़े का मौसम आने पर यह बिले अन्तरीप की बीची द्वीप के पास एक गुफा में टिका। पर कुछ दिनों के पश्चात् रास केयर्न और प्वाइंट विक्टरी के निकट इसके कपड़े और डायरी मिली जिससे ज्ञात हुआ कि यहीं कहीं आस-पास, सन् १८४७ ई० के लगभग, इसका देहान्त हुआ।

डाक्टर फ़्रिजोफ़ नैनसन

जन्म—सन् १८६१ ई०

डाक्टर फ़्रिजोफ़ नैनसन नार्वे का रहनेवाला था। इसने उत्तरी ध्रुव का पता लगाने की इच्छा की। सन् १८८८ ई० में यह ग्रीनलैंड के पूर्वी किनारे से देश के भीतर होता हुआ पश्चिमी किनारे पर पहुँचा। इसके पश्चात् इसने पाँच वर्ष तक समुद्र की धारा और वायु की दिशा के बारे में अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की। इसको ज्ञात हो गया कि एक जलधारा ग्रीनलैंड के पूर्वी तट के निकट से होती हुई दक्षिण की ओर जाती है और दूसरी नार्वे की पश्चिमी तट-भूमि के समीप से होती हुई उत्तर की ओर जाती है। इससे इसको विश्वास हो गया कि दोनों धाराओं में सम्बन्ध है और ये धाराएँ ध्रुव के पास होती हुई चलती होंगी।

इसको यह भी ज्ञात हो गया था कि उत्तरी समुद्र बर्फ़ से ढक जाता होगा और उसमें जहाज़ दब जाता होगा। इस-लिए इसने ऐसा जहाज़ बनवाया जो बर्फ़ में जम न जाय किन्तु आस-पास बर्फ़ पड़ते ही ऊपर निकल आवे।

सन् १८९३ ई० में यह ऐसा ही जहाज़ लेकर नार्वे से रवाना हुआ। इसने अपने साथ बहुत से साइबीरिया के कुत्ते ले लिये थे। तेरह आदमी भी इसके साथ थे। चिलोस्किन

अन्तरीप को पार करके यह उत्तर की ओर बढ़ा। अब बर्फ़ पड़ने लगी लेकिन जहाज़ बर्फ़ में निकलता ही गया।

चलते चलते जहाज़ ८३° उत्तरी अक्षांश में पहुँचा। यहां जहाज़ को छोड़कर डाक्टर नैनसन पैदल चला। कुत्तों ने इसकी बिना पहियों की गाड़ी को वेग के साथ खींचा। अब यह ८६° उत्तरी अक्षांश में पहुंचा। यहाँ बर्फ़ की ऊंची दीवार खड़ी थी। इससे यह आगे न बढ़ सका। लौटते समय रास्ते में सफ़ेद भालुओं ने इस पर आक्रमण किया। क्या तुम इस प्रान्त के और भयङ्कर जानवरों का नाम बता सकते हो?

नैनसन ने बड़ी कठिनाई से अपनी रक्षा की। फ्रेंज़ जोसेफ़लैंड के पूर्वी द्वीप-समूह में इसने जाड़े का मौसम सन् १८९५-९६ ई० में बिताया। फिर गर्मी पड़ते ही यह दक्षिण की ओर चला। इसे खाने को कोई अनाज न मिला; इसलिए इसने यहाँ के कुत्तों, भालुओं और सील मछलियों को मारकर खाया। सन् १८९७ ई० में यह लौट आया।

सन् १९०९ ई० में उत्तरी ध्रुव का पता पहली बार एडमिरल पियरी ने लगाया था। ध्रुव के बारे में वह कहता है—यहाँ भूमि नहीं है, गहरे समुद्र का उत्तरी सिरा जमकर बर्फ़ हो गया है और चारों ओर बर्फ़ ही बर्फ़ दिखाई पड़ती है।

कप्तान एमेंडसेन और कप्तान स्कॉट

(जन्म—सन् १८७३) (जन्म—सन् १८६८)

कप्तान एमेंडसेन नार्वे का निवासी था। सन् १९१० ई० में उत्तरी ध्रुव का पता लगाने के लिए यह रवाना हो रहा था। लेकिन जब इसको यह ज्ञात हो गया कि पियरी साहब ने उत्तरी ध्रुव का पता लगा लिया है तब इसने दक्षिणी ध्रुव का पता लगाने की ठान ली। डाक्टर नैनसन के जहाज़ को लेकर कुछ कुत्तों के साथ यह दक्षिण की ओर चला। सन् १९११ ई० में इसने दक्षिणी ध्रुव का पता लगा लिया।

इधर कप्तान स्कॉट सन् १९१० ई० में इँगलैंड से रवाना हुआ था और नवम्बर में न्यूज़ीलैंड से चला। क्या तुम बता सकते हो कि यह नवम्बर के महीने में क्यों रवाना हुआ। दक्षिणी गोलार्द्ध में नवम्बर किस मौसम में होता है? ६४° अक्षांश को अतिक्रम करते हुए इसने बड़े बड़े बर्फ़ के ढोंके समुद्र में तैरते पाये और थोड़े दिनों में यह रॉस द्वीप में पहुँचा। अँधेरे जाड़े के मौसम को बिताने के लिए यह यहीं ठहर गया। सन् १९११ ई० में कुछ लोग दक्खिन की ओर बढ़े। दिसम्बर में यह ध्रुव के निकट जा पहुँचा। लगभग १४५ मील रह गये थे। ये लोग दुःखों को झेलते हुए एक महीने

पश्चात सन् १९१२ ई० में दक्षिणी ध्रुव में पहुँच गये। यहाँ इनको एमेंडसेन के पहुँचने का पता मिला। पर ये दुःखी न होकर लौट पड़े। इनकी भोजन-सामग्री घट गई। ठण्डी हवा बहुत वेग से चलने लगी। आगे बढ़ना असम्भव हो गया। इसी समय (सन् १९१२ ई०) यहीं इन सबके प्राण निकल गये।

